आचार्य हेमचन्द्र-रचित
सूत्रों पर आधारित

प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण

(भाग-1)

संपादन
डॉ. कमलचन्द सोगाणी

लेखिका
श्रीमती शकुन्तला जैन

प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
राजस्थान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य हेमचन्द्र-रचित
सूत्रों पर आधारित
प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण
(भाग-1)

संपादन
डॉ. कमलचन्द सोगाणी
निदेशक
जैनविद्या संस्थान-अपभ्रंश साहित्य अकादमी

लेखिका
श्रीमती शकुन्तला जैन
सहायक निदेशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
राजस्थान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

◈ प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

श्री महावीरजी - 322 220 (राजस्थान)

दूरभाष - 07469-224323

◈ प्राप्ति-स्थान

1. साहित्य विक्रय केन्द्र, श्री महावीरजी

2. साहित्य विक्रय केन्द्र

दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी

सवाई रामसिंह रोड, जयपुर - 302 004

दूरभाष - 0141-2385247

◈ प्रथम संस्करण : सितम्बर, 2012

◈ सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

◈ मूल्य -500 रुपये

◈ पृष्ठ संयोजन

फ्रैण्ड्स कम्प्यूटर्स

जौहरी बाजार, जयपुर - 302 003

दूरभाष - 0141-2562288

◈ मुद्रक

जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि.

एम.आई. रोड, जयपुर - 302 001

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
	प्रकाशकीय	v
	प्रारम्भिक	viii
1.	प्राकृत भाषा-संज्ञा शब्दों का विभक्ति-विवरण	1
2.	विशिष्ट शब्द	31
3.	शौरसेनी प्राकृत भाषा	40
4.	मागधी प्राकृत भाषा	44
5.	पैशाची प्राकृत भाषा	45
6.	अर्धमागधी प्राकृत भाषा	46
7.	सर्वनाम शब्दों का विभक्ति-विवरण	48
	परिशिष्ट-1 संज्ञा शब्दों की रूपावली	72
	परिशिष्ट-2 विशिष्ट शब्दों की रूपावली	100
	परिशिष्ट-3 सर्वनाम शब्दों की रूपावली	132
	परिशिष्ट-4 आचार्य हेमचन्द्र-रचित सूत्रों के सन्दर्भ	164
	सम्पादक की कलम से	168
	परिशिष्ट-5 प्राकृत शब्दावली	170
	सम्मतिः अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण	179
	डॉ. आनन्द मंगल वाजपेयी	
	प्राकृत-व्याकरण संबंधी उपयोगी सूचनाएँ	181
	अपभ्रंश-व्याकरण संबंधी उपयोगी सूचनाएँ	182
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	183

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य हेमचन्द्र-रचित

सूत्रों पर आधारित

प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण

(भाग-1)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

'प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण (भाग-1)' अध्ययनार्थियों के हाथों में समर्पित करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

तीर्थंकर महावीर ने जनभाषा 'प्राकृत' में उपदेश देकर सामान्यजन के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त किया। भाषा संप्रेषण का सबल माध्यम होती है। उसका जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। जीवन के उच्चतम मूल्यों को जनभाषा में प्रस्तुत करना प्रजातान्त्रिक दृष्टि है।

प्राकृत भाषा भारतीय आर्य परिवार की एक सुसमृद्ध लोकभाषा रही है। वैदिक काल से ही यह लोकभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। इसका प्रकाशित, अप्रकाशित विपुल साहित्य इसकी गौरवमयी गाथा कहने में समर्थ है। भारतीय लोक-जीवन के बहुआयामी पक्ष दार्शनिक एवं आध्यात्मिक परम्पराएं प्राकृत साहित्य में निहित है। तीर्थंकर महावीर के युग में और उसके बाद विभिन्न प्राकृतों का विकास हुआ, वे हैं- महाराष्ट्री प्राकृत(प्राकृत), शौरसेनी प्राकृत, अर्धमागधी प्राकृत, मागधी प्राकृत और पैशाची प्राकृत। इनमें से तीन प्रकार की प्राकृतों का नाम साहित्य के क्षेत्र में गौरव के साथ लिया जाता हैं, वे हैं- **महाराष्ट्री प्राकृत, शौरसेनी प्राकृत तथा अर्धमागधी प्राकृत**। महावीर की दार्शनिक आध्यात्मिक परम्परा शौरसेनी व अर्धमागधी प्राकृत में रचित है और काव्यों की भाषा सामान्यतः महाराष्ट्री प्राकृत कही गई है। यह प्राकृत भाषा ही अपभ्रंश भाषा के रूप में विकसित होती हुई प्रादेशिक भाषाओं एवं हिन्दी का स्रोत बनी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राकृत भाषा को सीखना-समझना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसी बात को ध्यान में रखकर अपभ्रंश-प्राकृत साहित्य के अध्ययन-अध्यापन एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित 'जैनविद्या संस्थान' के अन्तर्गत अपभ्रंश साहित्य अकादमी की स्थापना सन् 1988 में की गई। अकादमी का प्रयास है- अपभ्रंश-प्राकृत के अध्ययन-अध्यापन को सशक्त करके उसके सही रूप को सामने रखना जिससे प्राचीन साहित्यिक-निधि के साथ-साथ आधुनिक आर्यभाषाओं के स्वभाव और उनकी सम्भावनाएँ भी स्पष्ट हो सकें।

वर्तमान में प्राकृत भाषा के अध्ययन के लिए पत्राचार के माध्यम से प्राकृत सर्टिफिकेट व प्राकृत डिप्लामो पाठ्यक्रम संचालित हैं, ये दोनों पाठ्यक्रम राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त हैं।

किसी भी भाषा को सीखने, जानने, समझने के लिए उसके रचनात्मक स्वरूप/संरचना को जानना आवश्यक है। प्राकृत के अध्ययन के लिये भी उसकी रचना-प्रक्रिया एवं व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। प्राकृत भाषा को सीखने-समझने को ध्यान में रखकर ही 'प्राकृत रचना सौरभ', 'प्राकृत अभ्यास सौरभ', 'प्राकृत गद्य-पद्य सौरभ (भाग-1)', 'प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ (भाग-1)', 'प्रौढ प्राकृत-अपभ्रंश रचना सौरभ (भाग-2)', 'प्राकृत गद्य-पद्य सौरभ (भाग-2)', 'प्राकृत-व्याकरण' 'प्राकृत अभ्यास उत्तर पुस्तक' 'प्राकृत-व्याकरण अभ्यास उत्तर पुस्तक' आदि पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। **'प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण (भाग-1)'** इसी क्रम का प्रकाशन है।

'प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण (भाग-1)' प्राकृत भाषा को सीखने-समझने की दिशा में प्रथम व अनूठा प्रयास है। इसका प्रस्तुतिकरण अत्यन्त सहज, सरल, सुबोध एवं नवीन शैली में किया गया है जो विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा। इस

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुस्तक में प्राकृत के संज्ञा-सर्वनाम विभक्तियों को हिन्दी भाषा में सरलता से समझाने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक विश्वविद्यालयों के संस्कृत विभागों के प्राकृत अध्ययनार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

यहाँ यह जानना आवश्यक है कि संस्कृत-ज्ञान के अभाव में भी अध्ययनार्थी **'प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण (भाग-1)'** के माध्यम से प्राकृत भाषा का समुचित ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

श्रीमती शकुन्तला जैन एम.फिल. (संस्कृत) ने बड़े परिश्रम से **'प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण (भाग-1)'** को तैयार किया है जिससे अध्ययनार्थी प्राकृत भाषा को सीखने में अनवरत उत्साह बनाये रख सकेंगे। अतः वे हमारी बधाई की पात्र हैं।

पुस्तक-प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के विद्वानों विशेषतया श्रीमती शकुन्तला जैन के आभारी हैं जिन्होंने **'प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण (भाग-1)'** लिखकर प्राकृत के पठन-पाठन को सुगम बनाने का प्रयास किया है।

पृष्ठ संयोजन के लिए फ्रेण्ड्स कम्प्यूटर्स एवं मुद्रण के लिए जयपुर प्रिण्टर्स धन्यवादार्ह है।

जस्टिस नगेन्द्र कुमार जैन	**पूनमचन्द्र शाह**	**डॉ. कमलचन्द सोगाणी**
अध्यक्ष	संयुक्त मंत्री	संयोजक
प्रबन्धकारिणी कमेटी		जैनविद्या संस्थान समिति
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी		जयपुर

वीर निर्वाण संवत्-2538

20.09.2012

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रारम्भिक

प्राकृत भाषा के सम्बन्ध में निम्नलिखित सामान्य जानकारी आवश्यक है-

प्राकृत की वर्णमाला

स्वर- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ।

व्यंजन- क, ख, ग, घ, ङ।
च, छ, ज, झ,ञ।
ट, ठ, ड, ढ, ण।
त, थ, द, ध, न।
प, फ, ब, भ, म।
य, र, ल, व।
स, ह।
ं , ँ।

यहाँ ध्यान देने योग्य है कि असंयुक्त अवस्था में **ङ** और **ञ** का प्रयोग प्राकृत भाषा में नहीं पाया जाता है। हेमचन्द्र कृत प्राकृत व्याकरण में **ङ** और **ञ** का संयुक्त प्रयोग उपलब्ध है। न का भी संयुक्त और असंयुक्त अवस्था में प्रयोग देखा जाता है। **ङ, ञ, न** के स्थान पर संयुक्त अवस्था में अनुस्वार भी विकल्प से होता है। शब्द के अंत में स्वररहित व्यंजन नहीं होते हैं।

वचन

प्राकृत भाषा में दो ही वचन होते हैं- एकवचन और बहुवचन।

लिंग

प्राकृत भाषा में तीन लिंग होते हैं- पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग।

पुरुष

प्राकृत भाषा में तीन पुरुष होते हैं- उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विभक्ति

प्राकृत भाषा में संज्ञा में आठ विभक्तियाँ होती हैं और सर्वनाम में सात विभक्तियाँ होती हैं। सर्वनाम में संबोधन विभक्ति नहीं होती है।

	विभक्ति	प्रत्यय-चिह्न
1.	प्रथमा	ने
2.	द्वितीया	को
3.	तृतीया	से, (के द्वारा)
4.	चतुर्थी	के लिए
5.	पंचमी	से (पृथक् अर्थ में)
6.	षष्ठी	का, के, की
7.	सप्तमी	में, पर
8.	सम्बोधन	हे

क्रिया

प्राकृत भाषा में दो प्रकार की क्रियाएँ होती हैं- सकर्मक और अकर्मक।

काल

प्राकृत भाषा में चार प्रकार के काल वर्णित हैं-

1. वर्तमानकाल
2. भूतकाल
3. भविष्यत्काल
4. विधि एवं आज्ञा

शब्द

प्राकृत भाषा में छह प्रकार के शब्द पाए जाते हैं-

1. अकारान्त
2. आकारान्त
3. इकारान्त
4. ईकारान्त
5. उकारान्त
6. ऊकारान्त

❑❑❑

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण
में प्रयुक्त
संज्ञा शब्द

(क) पुल्लिंग शब्द - देव, हरि, गामणी, साहु, सयंभू
(ख) नपुंसकलिंग शब्द - कमल, वारि, महु
(ग) स्त्रीलिंग शब्द - कहा, मइ, लच्छी, धेणु, बहू

पुल्लिंग

अकारान्त पुल्लिंग-**देव**
इकारान्त पुल्लिंग-**हरि**
ईकारान्त पुल्लिंग-**गामणी**
उकारान्त पुल्लिंग-**साहु**
ऊकारान्त पुल्लिंग-**सयंभू**

नपुंसकलिंग

अकारान्त नपुंसकलिंग-**कमल**
इकारान्त नपुंसकलिंग-**वारि**
उकारान्त नपुंसकलिंग-**महु**

स्त्रीलिंग

आकारान्त स्त्रीलिंग-**कहा**
इकारान्त स्त्रीलिंग-**मइ**
ईकारान्त स्त्रीलिंग-**लच्छी**
उकारान्त स्त्रीलिंग-**धेणु**
ऊकारान्त स्त्रीलिंग-**बहू**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विशिष्ट शब्द

प्राकृत भाषा में उपर्युक्त तेरह प्रकार के संज्ञा शब्दों के अतिरिक्त विशेष शब्दों का भी प्रयोग होता है जिनके रूप विशेष प्रकार से चलते हैं।

1. संज्ञावाचक पुल्लिंग शब्द - **पिउ** (पिता)
2. विशेषणात्मक पुल्लिंग शब्द - **कत्तु** (करनेवाला)
3. स्त्रीलिंग शब्द - **माउ** (माता)
4. पुल्लिंग शब्द - **अप्प, अत्त** (आत्मा)
5. पुल्लिंग शब्द - **राय/राअ** (राजा)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत भाषा

संज्ञा शब्दों का विभक्ति-विवरण

अकारान्त (पु.)

प्रथमा एकवचन 1/1

1. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **'ओ'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देव+ओ) = **देवो** (प्रथमा एकवचन)

अकारान्त (पु.)

प्रथमा बहुवचन 1/2

2. (i) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन में **अन्त्य स्वर 'दीर्घ'** हो जाता है। जैसे-

देव (पु.) देव **का अन्त्य स्वर दीर्घ होने पर** = **देवा** (प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

(ii) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **अन्त्य स्वर का 'दीर्घ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

देव (पु.) देव **का अन्त्य स्वर दीर्घ और ए होने पर** = **देवा, देवे**

(द्वितीया बहुवचन)

अकारान्त (पु.)

द्वितीया एकवचन 2/1

3. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के द्वितीया विभक्ति एकवचन में **अनुस्वार (ं)** जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देव+ं) = **देवं** (द्वितीया एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त (पु.)

तृतीया एकवचन 3/1

4. (i) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति एकवचन में अन्त्य **'अ'** का **'ए'** करके उसमें **'ण'** और **'णं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देवे+ण, णं) = **देवेण, देवेणं** (तृतीया एकवचन)

षष्ठी बहुवचन 6/2

(ii) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का **'आ'** करके उसमें **'ण' और 'णं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देवा+ण, णं) = **देवाण, देवाणं** (षष्ठी बहुवचन)

अकारान्त (पु.)

तृतीया बहुवचन 3/2

5. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का **'ए'** करके उसमें **'हि', 'हिँ'** और **'हिं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.)(देवे+हि,हिँ,हिं) = **देवेहि, देवहिँ, देवेहिं** (तृतीया बहुवचन)

अकारान्त (पु.)

पंचमी एकवचन 5/1

6. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति एकवचन में अन्त्य **'अ'** का **'आ'** करके उसमें **'त्तो', 'दो→ओ', 'दु→उ', 'हि', 'हिन्तो'** और **'शून्य'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देवा+त्तो, ओ, उ, हि, हिन्तो, 0) = **देवात्तो→देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवाहिन्तो, देवा** (पंचमी एकवचन)

नोट- दीर्घ स्वर के आगे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त (पु.)

पंचमी बहुवचन 5/2

7.(i) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का **'आ'** करके उसमें **'त्तो'**, **'दो→ओ'**, **'दु→उ'**, **'हि'**, **'हिन्तो'** और **'सुन्तो'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देवा+त्तो, ओ, उ, हि, हिन्तो, सुन्तो) = **देवात्तो→देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि, देवाहिन्तो, देवासुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

नोट- दीर्घ स्वर के आगे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

(ii) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का **'ए'** करके उसमें **'हि'**, **'हिन्तो'** और **'सुन्तो'** प्रत्यय भी जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देवे+हि, हिन्तो, सुन्तो)= **देवेहि, देवेहिन्तो, देवेसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

अकारान्त (पु.)

षष्ठी एकवचन 6/1

8. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति एकवचन में **'स्स'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देव+स्स) = **देवस्स** (षष्ठी एकवचन)

अकारान्त (पु.)

सप्तमी एकवचन 7/1

9. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'ए'** और **'म्मि'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देव+ए, म्मि) = **देवे, देवम्मि** (सप्तमी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त (पु.)

सप्तमी बहुवचन 7/2

10. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का **'ए'** करके उसमें **'सु'** और **'सुं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देवे+सु, सुं) = **देवेसु, देवेसुं** (सप्तमी बहुवचन)

इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (पु.)

इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (स्त्री.)

(क) **तृतीया बहुवचन** 3/2(ख) **पंचमी बहुवचन** 5/2(ग) **सप्तमी बहुवचन** 7/2

11.(क) **प्राकृत भाषा** में इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग, इकारान्त-उकारान्त नपुंसकलिंग व इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति बहुवचन में **'हि'**, **'हिं'** और **'हिं'** प्रत्यय जोड़ने पर **ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है और दीर्घ दीर्घ ही रहता है।** जैसे-

तृतीया बहुवचन 3/2

हरि (पु.)(हरि+हि, हिँ, हिं) = **हरीहि, हरीहिं, हरीहिं** (तृतीया बहुवचन)

गामणी(पु.)(गामणी+हि,हिँ, हिं) = **गामणीहि, गामणीहिं, गामणीहिं** (तृतीया बहुवचन)

साहु (पु.)(साहु+हि, हिँ, हिं)=**साहूहि, साहूहिं, साहूहिं** (तृतीया बहुवचन)

सयंभू (पु.)(सयंभू+हि, हिँ, हिं)=**सयंभूहि, सयंभूहिं, सयंभूहिं** (तृतीया बहुवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+हि, हिँ, हिं)=**वारीहि, वारीहिं, वारीहिं** (तृतीया बहुवचन)

महु (नपुं.)(महु+हि, हिँ, हिं) = **महूहि, महूहिं, महूहिं** (तृतीया बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मइ (स्त्री.)(मइ+हि, हिँ, हिं)= **मईहि, मईहिँ, मईहिं** (तृतीया बहुवचन)
लच्छी(स्त्री.)(लच्छी+हि,हिँ,हिं)=**लच्छीहि, लच्छीहिँ, लच्छीहिं** (तृतीया बहुवचन)

धेणु (स्त्री.)(धेणु+हि, हिँ, हिं)=**धेणूहि, धेणूहिँ, धेणूहिं** (तृतीया बहुवचन)
बहू (स्त्री.) (बहू+हि, हिँ, हिं)= **बहूहि, बहूहिँ, बहूहिं** (तृतीया बहुवचन)

(ख) **प्राकृत भाषा** में इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग, इकारान्त-उकारान्त नपुंसकलिंग व इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति बहुवचन में **'त्तो', 'ओ', 'उ', 'हिन्तो'** और **'सुन्तो'** प्रत्यय जोड़ने पर **ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है और दीर्घ दीर्घ ही रहता है।** जैसे-

पंचमी बहुवचन 5/2

हरि (पु.) (हरि+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो)= **हरीत्तो→हरित्तो, हरीओ, हरीउ, हरीहिन्तो, हरीसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)
गामणी (पु.) (गामणी+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो) =
गामणीत्तो→ गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ, गामणीहिन्तो, गामणीसुन्तो (पंचमी बहुवचन)

साहु (पु.) (साहु+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो) = **साहूत्तो→साहुत्तो, साहूओ, साहूउ, साहूहिन्तो, साहूसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)
सयंभू (पु.) (सयंभू+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो) =
सयंभूत्तो→सयंभुत्तो, सयंभूओ, सयंभूउ, सयंभूहिन्तो, सयंभूसुन्तो (पंचमी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वारि (नपुं.) (वारि+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो) = **वारीत्तो→वारित्तो, वारीओ, वारीउ, वारीहिन्तो, वारीसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

महु (नपुं.)(महु+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो) = **महूत्तो→महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो, महूसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो) = **मईत्तो→मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो, मईसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो) = **लच्छीत्तो→ लच्छित्तो, लच्छीओ, लच्छीउ, लच्छीहिन्तो, लच्छीसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो) = **धेणूत्तो→धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो, धेणूसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो) = **बहूत्तो→बहुत्तो, बहूओ, बहूउ, बहूहिन्तो, बहूसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

नोट– दीर्घ स्वर के आगे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

(ग) **प्राकृत भाषा** में इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग, इकारान्त-उकारान्त नपुंसकलिंग व इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति बहुवचन में **'सु'** और **'सुं'** प्रत्यय जोड़ने पर **ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है और दीर्घ दीर्घ ही रहता है।** जैसे-

सप्तमी बहुवचन 7/2

हरि (पु.) (हरि+सु, सुं) = **हरीसु, हरीसुं** (सप्तमी बहुवचन)

गामणी(पु.)(गामणी+सु, सुं) = **गामणीसु, गामणीसुं** (सप्तमी बहुवचन)

साहु (पु.) (साहु+सु, सुं) = **साहूसु, साहूसुं** (सप्तमी बहुवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू++सु, सुं) = **सयंभूसु, सयंभूसुं** (सप्तमी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वारि (नपुं.)(वारि+सु, सुं) = **वारीसु, वारीसुं** (सप्तमी बहुवचन)
महु (नपुं.)(महु+सु, सुं) = **महूसु, महूसुं** (सप्तमी बहुवचन)

मइ (स्त्री.)(मइ+सु, सुं) = **मईसु, मईसुं** (सप्तमी बहुवचन)
लच्छी(स्त्री.)(लच्छी+सु, सुं) = **लच्छीसु, लच्छीसुं** (सप्तमी बहुवचन)
धेणु (स्त्री.)(धेणु+सु, सुं) = **धेणूसु, धेणूसुं** (सप्तमी बहुवचन)
बहू (स्त्री.) (बहू++सु, सुं) = **बहूसु, बहूसुं** (सप्तमी बहुवचन)

इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (पु., स्त्री.)
द्वितीया बहुवचन 2/2

12. **प्राकृत भाषा** में इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग और इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है और दीर्घ दीर्घ ही रहता है।** जैसे-

हरि (पु.) हरि का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **हरी** (द्वितीया बहुवचन)
गामणी (पु.) गामणी का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **गामणी** (द्वितीया बहुवचन)
साहु (पु.) साहु का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **साहू** (द्वितीया बहुवचन)
सयंभू (पु.) सयंभू का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **सयंभू** (द्वितीया बहुवचन)

मइ (स्त्री.) मइ का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **मई** (द्वितीया बहुवचन)
लच्छी (स्त्री.) लच्छी का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **लच्छी** (द्वितीया बहुवचन)
धेणु (स्त्री.) धेणु का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **धेणू** (द्वितीया बहुवचन)
बहू (स्त्री.) बहू का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **बहू** (द्वितीया बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु., स्त्री.)

प्रथमा एकवचन 1/1

13. **प्राकृत भाषा** में इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग और इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है और दीर्घ दीर्घ ही रहता है।** जैसे-

हरि (पु.) हरि का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **हरी** (प्रथमा एकवचन)

गामणी (पु.) गामणी का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **गामणी** (प्रथमा एकवचन)

साहु (पु.) साहु का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **साहू** (प्रथमा एकवचन)

सयंभू (पु.) सयंभू का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **सयंभू** (प्रथमा एकवचन)

मइ (स्त्री.) मइ का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **मई** (प्रथमा एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) लच्छी का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **लच्छी** (प्रथमा एकवचन)

धेणु (स्त्री.) धेणु का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **धेणू** (प्रथमा एकवचन)

बहू (स्त्री.) बहू का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **बहू** (प्रथमा एकवचन)

इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (पु.)

प्रथमा बहुवचन 1/2

14. **प्राकृत भाषा** में इ-ईकारान्त व उ-ऊकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन में '**अउ**' और '**अओ**' प्रत्यय <u>विकल्प से</u> जोड़े जाते हैं। जैसे-

हरि (पु.) (हरि+अउ, अओ) = **हरउ, हरओ** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **हरी, हरिणो**

गामणी (पु.)(गामणी+अउ,अओ) = **गामणउ, गामणओ** (प्रथमा बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्य रूप - **गामणी, गामणिणो**

साहु (पु.) (साहु+अउ, अओ) = **साहउ, साहओ** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **साहू, साहुणो, साहवो**

सयंभू (पु.) (सयंभू+अउ, अओ) = **सयंभउ, सयंभओ** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **सयंभू, संयभुणो, सयंभवो**

उकारान्त-ऊकारान्त (पु.)

प्रथमा बहुवचन 1/2

15. **प्राकृत भाषा** में उ-ऊकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन में विकल्प से **'अवो'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

साहु (पु.) (साहु+ अवो) = **साहवो** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **साहू, साहउ, साहओ , साहुणो**

सयंभू (पु.) (सयंभू+अवो) = **सयंभवो** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **सयंभू, सयंभउ, सयंभओ, सयंभुणो**

इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (पु.)

(क) प्रथमा बहुवचन 1/2 (ख) द्वितीया बहुवचन 2/2

16. **प्राकृत भाषा** में इ-ईकारान्त व उ-ऊकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन व द्वितीया विभक्ति बहुवचन में विकल्प से **'णो'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है। प्रत्यय जोड़ने के पूर्व शब्द का अंतिम **दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है और ह्रस्व स्वर ह्रस्व ही रहता है।** जैसे-

प्रथमा बहुवचन 1/2

(क) हरि (पु.) (हरि+णो) = **हरिणो** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **हरी, हरउ, हरओ**

गामणी (पु.) (गामणी→गामणि+णो) = **गामणिणो** (प्रथमा बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्य रूप - **गामणी, गामणउ, गामणओ**

साहु (पु.) (साहु+णो) = **साहुणो** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **साहू, साहउ, साहओ, साहवो**

सयंभू (पु.) (सयंभू→सयंभु+णो) = **सयंभुणो** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **सयंभू, सयंभउ, सयंभओ, सयंभवो**

द्वितीया बहुवचन 2/2

(ख) हरि (पु.) (हरि+णो) = **हरिणो** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **हरी**

गामणी (पु.) (गामणी→गामणि+णो) = **गामणिणो** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **गामणी**

साहु (पु.) (साहु+णो) = **साहुणो** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **साहु**

सयंभू (पु.) (सयंभू→सयंभु+णो) = **सयंभुणो** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **सयंभू**

इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (पु.)

इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

(क) पंचमी एकवचन 5/1 (ख) षष्ठी एकवचन 6/1

17. **प्राकृत भाषा** में इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग व इकारान्त, उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति एकवचन व षष्ठी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **'णो'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है। प्रत्यय जोड़ने के पूर्व शब्द का अंतिम **दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है और ह्रस्व स्वर ह्रस्व ही रहता है।** जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पंचमी एकवचन 5/1

(क) हरि (पु.) (हरि+णो) = **हरिणो** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **हरित्तो, हरीओ, हरीउ, हरीहिन्तो**

गामणी (पु.) (गामणी→गामणि+णो) = **गामणिणो** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ, गामणीहिन्तो**

साहु (पु.) (साहु+णो) = **साहुणो** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **साहुत्तो, साहूओ, साहूउ, साहूहिन्तो**

सयंभू (पु.) (सयंभू→सयंभु+णो) = **सयंभुणो** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **सयंभुत्तो, सयंभूओ, सयंभूउ, सयंभूहिन्तो**

वारि (नपुं.) (वारि+णो) = **वारिणो** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **वारित्तो, वारीओ, वारीउ, वारीहिन्तो**

महु (नपुं.) (महु+णो) = **महुणो** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो**

षष्ठी एकवचन 6/1

(ख) हरि (पु.) (हरि+णो) = **हरिणो** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **हरिस्स**

गामणी (पु.) (गामणी→गामणि+णो) = **गामणिणो** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **गामणिस्स**

साहु (पु.) (साहु+णो) = **साहुणो** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **साहुस्स**

सयंभू (पु.) (सयंभू→सयंभु+णो) = **सयंभुणो** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **सयंभुस्स**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वारि (नपुं.) (वारि+णो) = **वारिणो** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **वारिस्स**

महु (नपुं.) (महु+णो) = **महुणो** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **महुस्स**

इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (पु.)
इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)
तृतीया एकवचन 3/1

18. **प्राकृत भाषा** में इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त पुल्लिंग व इकारान्त, उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति एकवचन में **'णा'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। प्रत्यय जोड़ने के पूर्व शब्द का अंतिम **दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है और ह्रस्व स्वर ह्रस्व ही रहता है।** जैसे-

हरि (पु.) (हरि+णा) = **हरिणा** (तृतीया एकवचन)

गामणी (पु.) (गामणी→गामणि+णा) = **गामणिणा** (तृतीया एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+णा) = **साहुणा** (तृतीया एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू→सयंभु+णा) = **सयंभुणा** (तृतीया एकवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+णा) = **वारिणा** (तृतीया एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+णा) = **महुणा** (तृतीया एकवचन)

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)
प्रथमा एकवचन 1/1

19. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **'अनुस्वार'** (ं) जोड़ा जाता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कमल (नपुं.) (कमल+ं) = **कमलं** (प्रथमा एकवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+ं) = **वारिं** (प्रथमा एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+ं) = **महुं** (प्रथमा एकवचन)

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

(क) प्रथमा बहुवचन 1/2 (ख) द्वितीया बहुवचन 2/2

20. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन व द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'इँ'**, **'इं'** और **'णि'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। प्रत्यय जोड़ने के पूर्व शब्द का अंतिम **ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है।** जैसे-

प्रथमा बहुवचन 1/2

(क) कमल (नपुं.) (कमल→कमला+इँ, इं, णि)= **कमलाइँ, कमलाइं, कमलाणि** (प्रथमा बहुवचन)

वारि (नपुं.) (वारि→वारी+इँ, इं, णि) = **वारीइँ, वारीइं, वारीणि** (प्रथमा बहुवचन)

महु (नपुं.)(महु→महू+इँ, इं, णि)= **महूइँ, महूइं, महूणि** (प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

(ख) कमल(नपुं.)(कमल→कमला+इँ, इं, णि)= **कमलाइँ, कमलाइं, कमलाणि** (द्वितीया बहुवचन)

वारि (नपुं.)(वारि→वारी+इँ, इं, णि) = **वारीइँ, वारीइं, वारीणि** (द्वितीया बहुवचन)

महु (नपुं.)(महु→महू+इँ, इं, णि)=**महूइँ, महूइं, महूणि** (द्वितीया बहुवचन)

अकारान्त (नपुं.)

द्वितीया एकवचन 2/1

21. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के द्वितीया विभक्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एकवचन में **अनुस्वार (ं)** जोड़ा जाता है। जैसे-

कमल (नपुं.) (कमल+ं) = **कमलं** (द्वितीया एकवचन)

अकारान्त (नपुं.)

तृतीया एकवचन 3/1

22.(i) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति एकवचन में अन्त्य **'अ'** का **'ए'** करके उसमें **'ण' और 'णं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

कमल (नपुं.) (कमले+ण, णं) = **कमलेण, कमलेणं** (तृतीया एकवचन)

षष्ठी बहुवचन 6/2

(ii) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का **'आ'** करके उसमें **'ण' और 'णं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

कमल (नपुं.) (कमला+ण, णं) = **कमलाण, कमलाणं** (षष्ठी बहुवचन)

अकारान्त (नपुं.) तृतीया बहुवचन 3/2

23. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का **'ए'** करके उसमें **'हि', 'हिं'** और **'हिं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

कमल (नपुं.) (कमले+हि,हिं,हिं) = **कमलेहि, कमलेहिं, कमलेहिं**

(तृतीया बहुवचन)

अकारान्त (नपुं.) पंचमी एकवचन 5/1

24. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति एकवचन में अन्त्य **'अ'** का **'आ'** करके उसमें **'त्तो', 'दो→ओ', 'दु→उ', 'हि', 'हिन्तो'** और **'शून्य'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

कमल (नपुं.) (कमला+त्तो, ओ, उ, हि, हिन्तो, 0) = **कमलात्तो→**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कमलत्तो, कमलाओ, कमलाउ, कमलाहि, कमलाहिन्तो, कमला
(पंचमी एकवचन)

नोट- दीर्घ स्वर के आगे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

अकारान्त (नपुं.)
पंचमी बहुवचन 5/2

25.(i) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य '**अ**' का '**आ**' करके उसमें '**त्तो**', '**दो→ओ**', '**दु→उ**', '**हि**', '**हिन्तो**' और '**सुन्तो**' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-
कमल (नपुं.) (कमला+त्तो, ओ, उ, हि, हिन्तो, सुन्तो) = **कमलात्तो→ कमलत्तो, कमलाओ, कमलाउ, कमलाहि, कमलाहिन्तो, कमलासुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

नोट- दीर्घ स्वर के आगे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

(ii) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य '**अ**' का '**ए**' करके उसमें '**हि**', '**हिन्तो**' और '**सुन्तो**' प्रत्यय भी जोड़े जाते हैं। जैसे-
कमल (नपुं.) (कमले+हि, हिन्तो, सुन्तो) = **कमलेहि, कमलेहिन्तो, कमलेसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

अकारान्त (नपुं.)
षष्ठी एकवचन 6/1

26. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति एकवचन में '**स्स**' प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-
कमल (नपुं.) (कमल+स्स) = **कमलस्स** (षष्ठी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त (नपुं.)

सप्तमी एकवचन 7/1

27. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'ए'** और **'म्मि'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

कमल (नपुं.) (कमल+ए, म्मि) = **कमले, कमलम्मि** (सप्तमी एकवचन)

अकारान्त (नपुं.)

सप्तमी बहुवचन 7/2

28. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का **'ए'** करके उसमें **'सु'** और **'सुं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

कमल (नपुं.) (कमले+सु, सुं) = **कमलेसु, कमलेसुं** (सप्तमी बहुवचन)

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

(क) प्रथमा बहुवचन 1/2 (ख) द्वितीया बहुवचन 2/2

29. **प्राकृत भाषा** में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन तथा द्वितीया विभक्ति बहुवचन में विकल्प से **'उ'** और **'ओ'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। प्रत्यय जोड़ने के पूर्व शब्द का अंतिम **ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है और दीर्घ स्वर दीर्घ ही रहता है।** जैसे-

प्रथमा बहुवचन 1/2

(क) कहा (स्त्री.) (कहा+उ, ओ) = **कहाउ, कहाओ** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **कहा**

मइ (स्त्री.) (मइ→मई+उ, ओ) = **मईउ, मईओ** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **मई**

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+उ, ओ)= **लच्छीउ, लच्छीओ** (प्रथमा बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्य रूप - **लच्छी, लच्छीआ**

धेणु (स्त्री.) (धेणु→धेणू+उ, ओ) = **धेणूउ, धेणूओ** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **धेणू**

बहू (स्त्री.) (बहू+उ, ओ)) = **बहूउ, बहूओ** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **बहू**

द्वितीया बहुवचन 2/2

(ख) कहा (स्त्री.)(कहा+उ, ओ)) = **कहाउ, कहाओ** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **कहा**

मइ (स्त्री.) (मइ→मई+उ, ओ) = **मईउ, मईओ** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **मई**

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+उ, ओ))= **लच्छीउ, लच्छीओ** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **लच्छी, लच्छीआ**

धेणु (स्त्री.) (धेणु→धेणू+उ, ओ)) = **धेणूउ, धेणूओ** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **धेणू**

बहू (स्त्री.) (बहू+उ, ओ)) = **बहूउ, बहूओ** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **बहू**

ईकारान्त (स्त्री.)

प्रथमा एकवचन 1/1, प्रथमा बहुवचन 1/2, द्वितीया बहुवचन 2/2

30. **प्राकृत भाषा** में ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन व बहुवचन तथा द्वितीया विभक्ति बहुवचन में '**आ**' प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

प्रथमा एकवचन 1/1

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+आ) = **लच्छीआ** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **लच्छी**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रथमा बहुवचन 1/2

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+आ) = **लच्छीआ** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **लच्छी, लच्छीउ, लच्छीओ**

द्वितीया बहुवचन 2/2

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+आ) = **लच्छीआ** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **लच्छी, लच्छीउ, लच्छीओ**

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

(क) तृतीया एकवचन 3/1 (ख) षष्ठी एकवचन 6/1

(ग) सप्तमी एकवचन 7/1 (घ) पंचमी एकवचन 5/1

31. **प्राकृत भाषा** में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति एकवचन, षष्ठी विभक्ति एकवचन तथा सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'अ', 'आ', 'इ'** और **'ए'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। प्रत्यय जोड़ने के पूर्व शब्द का अंतिम **ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है और दीर्घ स्वर दीर्घ ही रहता है। आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों में 'आ' प्रत्यय नहीं जोड़ा जाता है।** जैसे-

तृतीया एकवचन 3/1

(क) कहा (स्त्री.) (कहा+अ, इ, ए) = **कहाअ, कहाइ, कहाए** (तृतीया एकवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ→मई+अ, आ, इ, ए) = **मईअ, मईआ, मईइ,मईए** (तृतीया एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+अ, आ, इ, ए) = **लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए** (तृतीया एकवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु→धेणू+अ,आ,इ,ए)=**धेणूअ,धेणूआ,धेणूइ,धेणूए** (तृतीया एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बहू (स्त्री.) (बहू+अ,आ,इ,ए) = **बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए**
(तृतीया एकवचन)

षष्ठी एकवचन 6/1

(ख) कहा (स्त्री.) (कहा+अ, इ, ए) = **कहाअ, कहाइ, कहाए** (षष्ठी एकवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ→मई+अ, आ, इ, ए) = **मईअ, मईआ, मईइ, मईए**
(षष्ठी एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+अ, आ, इ, ए) = **लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए** (षष्ठी एकवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु→धेणू+अ,आ,इ,ए)= **धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए**
(षष्ठी एकवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+अ,आ,इ,ए)=**बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए**
(षष्ठी एकवचन)

सप्तमी एकवचन 7/1

(ग) कहा (स्त्री.) (कहा+अ, इ, ए) = **कहाअ, कहाइ, कहाए** (सप्तमी एकवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ→मई+अ, आ, इ, ए) = **मईअ, मईआ, मईइ, मईए**
(सप्तमी एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+अ, आ, इ, ए) = **लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए** (सप्तमी एकवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु→धेणू+अ,आ,इ,ए)= **धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए**
(सप्तमी एकवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+अ,आ,इ,ए)=**बहूअ,बहूआ,बहूइ,बहूए** (सप्तमी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(घ) **प्राकृत भाषा** में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **'अ', 'आ', 'इ'** और **'ए'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। प्रत्यय जोड़ने के पूर्व शब्द का अंतिम **ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है और दीर्घ स्वर दीर्घ ही रहता है। आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों में 'आ' प्रत्यय नहीं जोड़ा जाता है।** जैसे-

कहा (स्त्री.) (कहा+अ, इ, ए) = **कहाअ, कहाइ, कहाए** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **कहत्तो, कहाओ, कहाउ, कहाहिन्तो**

मइ (स्त्री.) (मइ→मई+अ, आ, इ, ए) = **मईअ, मईआ, मईइ, मईए** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो**

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+अ, आ, इ, ए) = **लच्छीअ, लच्छीआ, लच्छीइ, लच्छीए** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **लच्छित्तो, लच्छीओ, लच्छीउ, लच्छीहिन्तो**

धेणु (स्त्री.) (धेणु→धेणू+अ,आ,इ,ए)=**धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो**

बहू (स्त्री.) (बहू+अ,आ,इ,ए) = **बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **बहुत्तो, बहूओ, बहूउ, बहूहिन्तो**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्तं, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)
द्वितीया एकवचन 2/1

32. **प्राकृत भाषा** में आकारान्त, ईकारान्त और ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के द्वितीया विभक्ति एकवचन में **'अनुस्वार'** (ं) जोड़ने पर **दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।** जैसे-

कहा (स्त्री.) (कहा+ं) = **कहं** (द्वितीया एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+ं) = **लच्छिं** (द्वितीया एकवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+ं) = **बहुं** (द्वितीया एकवचन)

---

33. **प्राकृत भाषा** में **ससा** (बहिन), **णणंदा** (ननद अर्थात् पति की बहिन), **धूआ** (पुत्री) और **दुहिआ** (पुत्री) आदि आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के रूप **कहा** के अनुसार चलेंगे।

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)
सम्बोधन एकवचन 8/1

34. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के संबोधन एकवचन में अनुस्वार नहीं होता है। जैसे-
कमल (नपुं.) हे **कमल** (संबोधन एकवचन)
वारि (नपुं.) हे **वारि** (संबोधन एकवचन)
महु (नपुं.) हे **महु** (संबोधन एकवचन)

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त (पु.)
सम्बोधन एकवचन 8/1

35.(i) **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के संबोधन एकवचन में **'ओ'** और **'दीर्घ'** विकल्प से जोड़े जाते हैं। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

देव (पु.) (हे देव+ओ) = **हे देवो** (संबोधन एकवचन)

देव (पु.) (हे देव+दीर्घ) = **हे देवा** (संबोधन एकवचन)

अन्य रूप - **हे देव**

(ii) **प्राकृत भाषा** में इकारान्त, उकारान्त पुल्लिंग व स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के संबोधन एकवचन में **'दीर्घ'** विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

सम्बोधन एकवचन 8/1

हरि (पु.) (हे हरि+दीर्घ) = **हे हरी** (संबोधन एकवचन)

अन्य रूप - **हे हरि**

साहु (पु.) (हे साहु+दीर्घ) = **हे साहू** (संबोधन एकवचन)

अन्य रूप - **हे साहु**

मइ (स्त्री.) (हे मइ+दीर्घ) = **हे मई** (संबोधन एकवचन)

अन्य रूप - **हे मइ**

धेणु (स्त्री.) (हे धेणु+दीर्घ) = **हे धेणू** (संबोधन एकवचन)

अन्य रूप - **हे धेणु**

आकारान्त (स्त्री.)

सम्बोधन एकवचन 8/1

36. **प्राकृत भाषा** में आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के संबोधन एकवचन में **'ए'** प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

कहा (स्त्री.) (हे कहा+ए) = **हे कहे** (संबोधन एकवचन)

अन्य रूप - **हे कहा**

ईकारान्त, ऊकारान्त (पु., स्त्री.)

सम्बोधन एकवचन 8/1

37. **प्राकृत भाषा** में ईकारान्त व ऊकारान्त पुल्लिंग, स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के संबोधन एकवचन में **'दीर्घ स्वर ह्रस्व'** हो जाता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गामणी (पु.) **हे गामणि** (संबोधन एकवचन)
सयंभू (पु.) **हे सयंभु** (संबोधन एकवचन)
लच्छी (स्त्री.) **हे लच्छि** (संबोधन एकवचन)
बहू (स्त्री.) **हे बहु** (संबोधन एकवचन)

---

38. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त संज्ञा शब्दों के अतिरिक्त आकारान्त, इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त आदि शब्दों के जिस विभक्ति, वचन के प्रत्यय पूर्व नियमों में नहीं बताए गए हैं वहाँ उस विभक्ति व वचन में अकारान्त शब्दों के समान प्रत्यय लगते हैं। शब्द-रूप निम्न प्रकार होंगे।

इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

प्रथमा बहुवचन 1/2, द्वितीया बहुवचन 2/2

प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के समान प्रथमा विभक्ति बहुवचन में इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग तथा आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के **ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है और दीर्घ स्वर दीर्घ ही रहता है**। जैसे-

प्रथमा बहुवचन 1/2

हरि (पु.) का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर **हरी** (प्रथमा बहुवचन)
गामणी (पु.) गामणी का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **गामणी** (प्रथमा बहुवचन)
साहु (पु.) साहु का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **साहू** (प्रथमा बहुवचन)
सयंभू (पु.) सयंभू का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **सयंभू** (प्रथमा बहुवचन)
कहा (स्त्री.) कहा का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **कहा** (प्रथमा बहुवचन)
मइ (स्त्री.) मइ का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **मई** (प्रथमा बहुवचन)
लच्छी (स्त्री.) लच्छी का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **लच्छी** (प्रथमा बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धेणु (स्त्री.) धेणु का अंतिम स्वर दीर्घ होने पर = **धेणू** (प्रथमा बहुवचन)

बहू (स्त्री.) बहू का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **बहू** (प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के समान आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **दीर्घ स्वर का दीर्घ ही रहता है।** जैसे-

कहा(स्त्री.)कहा का अंतिम स्वर दीर्घ दीर्घ ही रहता है = **कहा** (द्वितीया बहुवचन)

इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)
इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)
आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)
द्वितीया एकवचन 2/1

39. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के समान इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग, इकारान्त, उकारान्त नपुंसकलिंग तथा आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के द्वितीया विभक्ति एकवचन में **अनुस्वार** जोड़ने पर **दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है और ह्रस्व का ह्रस्व ही रहता है।** जैसे-

हरि (पु.) (हरि+ं) = **हरिं** (द्वितीया एकवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+ं) = **गामणिं** (द्वितीया एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+ं) = **साहुं** (द्वितीया एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+ं) = **सयंभुं** (द्वितीया एकवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+ं) = **वारिं** (द्वितीया एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+ं) = **महुं** (द्वितीया एकवचन)

कहा (स्त्री.) (कहा+ं) = **कहं** (द्वितीया एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मइ (स्त्री.) (मइ+÷) = **मइं** (द्वितीया एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+÷) = **लच्छिं** (द्वितीया एकवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु+÷) = **धेणुं** (द्वितीया एकवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+÷) = **बहुं** (द्वितीया एकवचन)

इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)
इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)
आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

40. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के समान इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग, इकारान्त, उकारान्त नपुंसकलिंग तथा आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति एकवचन में **'त्तो, ओ, उ और हिन्तो'** प्रत्यय जोड़ने पर **ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है और दीर्घ स्वर दीर्घ** ही रहता है। जैसे-

पंचमी एकवचन 5/1

हरि (पु.) (हरि+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **हरीत्तो→हरित्तो, हरीओ, हरीउ, हरीहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **गामणीत्तो→ गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ, गामणीहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **साहूत्तो→साहुत्तो, साहूओ, साहूउ, साहूहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **सयंभूत्तो→सयंभुत्तो, सयंभूओ, सयंभूउ, सयंभूहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **वारीत्तो→वारित्तो, वारीओ, वारीउ, वारीहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महु (नपुं.) (महु+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **महूत्तो→महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

कहा (स्त्री.) (कहा+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **कहात्तो→कहत्तो, कहाओ, कहाउ, कहाहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **मईत्तो→मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **लच्छीत्तो→लच्छित्तो, लच्छीओ, लच्छीउ, लच्छीहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **धेणूत्तो→धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+त्तो, ओ, उ, हिन्तो) = **बहूत्तो→बहुत्तो, बहूओ, बहूउ, बहूहिन्तो** (पंचमी एकवचन)

नोट- दीर्घ स्वर के आगे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)
इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)
षष्ठी एकवचन 6/1

41. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के समान इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग तथा इकारान्त, उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति एकवचन में **'स्स'** प्रत्यय जोड़ने पर **दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है और ह्रस्व का ह्रस्व ही रहता है।** जैसे-

हरि (पु.) (हरि+स्स) = **हरिस्स** (षष्ठी एकवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+स्स) = **गामणिस्स** (षष्ठी एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+स्स) = **साहुस्स** (षष्ठी एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+स्स) = **सयंभुस्स** (षष्ठी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वारि (नपुं.) (वारि+स्स) =**वारिस्स** (षष्ठी एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+स्स) = **महुस्स** (षष्ठी एकवचन)

इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)
इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)
आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

42. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के समान इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग, इकारान्त, उकारान्त नपुंसकलिंग तथा आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में **'ण** और **णं'** प्रत्यय जोड़ने पर **ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है और दीर्घ स्वर दीर्घ** ही रहता है। जैसे-

षष्ठी बहुवचन 6/2

हरि (पु.) (हरि+ण, णं) = **हरीण, हरीणं** (षष्ठी बहुवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+ण, णं) = **गामणीण, गामणीणं** (षष्ठी बहुवचन)

साहु (पु.) (साहु+ण, णं) = **साहूण, साहूणं** (षष्ठी बहुवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+ण, णं) = **सयंभूण, सयंभूणं** (षष्ठी बहुवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+ण, णं) = **वारीण, वारीणं** (षष्ठी बहुवचन)

महु (नपु.) (महु+ण, णं) = **महूण, महूणं** (षष्ठी बहुवचन)

कहा (स्त्री.) (कहा+ण, णं) = **कहाण, कहाणं** (षष्ठी बहुवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+ण, णं) = **मईण, मईणं** (षष्ठी बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+ण, णं) = **लच्छीण, लच्छीणं** (षष्ठी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धेणु (स्त्री.) (धेणु+ण, णं) = **धेणूण, धेणूणं** (षष्ठी बहुवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+ण, णं) = **बहूण, बहूणं** (षष्ठी बहुवचन)

इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)
इकारान्त, उकारान्त (नपुं.) सप्तमी एकवचन 7/1

43. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के समान इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग तथा इकारान्त, उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'म्मि'** प्रत्यय जोड़ने पर **दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है और ह्रस्व का ह्रस्व ही रहता है।** जैसे-

हरि(पु.) (हरि+म्मि) = **हरिम्मि** (सप्तमी एकवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+म्मि) = **गामणिम्मि** (सप्तमी एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+म्मि) = **साहुम्मि** (सप्तमी एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+म्मि) = **सयंभुम्मि** (सप्तमी एकवचन)

वारि(नपुं.) (वारि+म्मि) = **वारिम्मि** (सप्तमी एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+म्मि) = **महुम्मि** (सप्तमी एकवचन)

आकारान्त (स्त्री.)
प्रथमा एकवचन 1/1, सम्बोधन बहुवचन 8/2

44. **प्राकृत भाषा** में आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा एकवचन व संबोधन बहुवचन में **'शून्य'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

कहा (स्त्री.) (कहा+0) = **कहा** (प्रथमा एकवचन)

कहा (स्त्री.) (कहा+0) = **कहा** (संबोधन बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त (स्त्री.) सप्तमी बहुवचन 7/2

45. **प्राकृत भाषा** में आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी बहुवचन में '**सु**' और '**सुं**' प्रत्यय जोड़ा जाता है।

कहा (स्त्री.) (कहा+सु, सुं) = **कहासु , कहासुं** (सप्तमी बहुवचन)

अकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)
अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)
आकारान्त,इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)
सम्बोधन बहुवचन 8/2

46. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग, अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त नपुंसकलिंग, आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के संबोधन बहुवचन में निम्न रूप बनते हैं। जैसे-

देव (पु.) = **हे देवा** (संबोधन बहुवचन)

हरि (पु.) = **हे हरउ, हे हरओ, हे हरिणो, हे हरी** (संबोधन बहुवचन)

गामणी (पु.) = **हे गामणउ, हे गामणओ, हे गामणिणो, हे गामणी** (संबोधन बहुवचन)

साहु (पु.) = **हे साहउ, हे साहओ, हे साहुणो, हे साहवो, हे साहू** (संबोधन बहुवचन)

सयंभू (पु.) = **हे सयंभउ, हे सयंभओ, हे सयंभुणो, हे सयंभवो, हे सयंभू** (संबोधन बहुवचन)

कमल (नपुं.) = **हे कमलाइं, हे कमलाइँ, हे कमलाणि** (संबोधन बहुवचन)

वारि (नपुं.) = **हे वारीइं, हे वारीइँ, हे वारीणि** (संबोधन बहुवचन)

महु (नपुं.) = **हे महूइं, हे महूइँ, हे महूणि** (संबोधन बहुवचन)

कहा (स्त्री.) = **हे कहा, हे कहाउ, हे कहाओ** (संबोधन बहुवचन)

मई (स्त्री.) = **हे मई, हे मईउ, मईओ** (संबोधन बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.) = **हे लच्छी, हे लच्छीउ, हे लच्छीओ, हे लच्छीआ** (संबोधन बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धेणु (स्त्री.) = हे **धेणू, हे धेणूउ, हे धेणूओ** (संबोधन बहुवचन)

बहू (स्त्री.) = हे **बहू, हे बहूउ, हे बहूओ** (संबोधन बहुवचन)

अकारान्त (पु., नपुं)

चतुर्थी एकवचन 4/1

47. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग व अकारान्त नपुंसकलिंग में चतुर्थी विभक्तिबोधक प्रत्ययों का अभाव होने से षष्ठी विभक्ति एकवचन में प्रयुक्त **'स्स'** तथा षष्ठी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **अ** का **आ** करके उसमें प्रयुक्त **'ण** और **णं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देव+स्स) = **देवस्स** (चतुर्थी एकवचन)

कमल (नपुं.) (कमल+स्स) = **कमलस्स** (चतुर्थी एकवचन)

चतुर्थी बहुवचन 4/2

देव (पु.) (देवा+ण, णं) = **देवाण, देवाणं** (चतुर्थी बहुवचन)

कमल (नपुं.) (कमला+ण, णं) = **कमलाण, कमलाणं** (चतुर्थी बहुवचन)

अकारान्त (पु., नपुं)

चतुर्थी एकवचन 4/1

48. **प्राकृत भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग तथा अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के चतुर्थी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **'आय'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देव+आय) = **देवाय** (चतुर्थी एकवचन)

अन्य रूप - **देवस्स**

कमल (नपुं.) (कमल+आय) = **कमलाय** (चतुर्थी एकवचन)

अन्य रूप - **कमलस्स**

❑❑❑

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विशिष्ट शब्द

प्राकृत भाषा में उपर्युक्त तेरह प्रकार के संज्ञा शब्दों के अतिरिक्त विशेष शब्दों का भी प्रयोग होता है जिनके रूप विशेष प्रकार से चलते हैं।

1. संज्ञावाचक पुल्लिंग शब्द - **पिउ** (पिता)
   भाउ (भाई) और **जामाउ** (दामाद) के रूप **पिउ** के समान चलेंगे।
2. विशेषणात्मक पुल्लिंग शब्द - **कत्तु** (करनेवाला)
   भत्तु (भरण-पोषण करनेवाला), **दाउ** (दाता/देनेवाला) के रूप **कत्तु** के समान चलेंगे।
3. स्त्रीलिंग शब्द - **माउ** (माता)
4. पुल्लिंग शब्द - **अप्प, अत्त** (आत्मा)
5. पुल्लिंग शब्द - **राय** (राजा)

---

1. (i) **प्राकृत भाषा** में पिता के लिए **'पिउ'** शब्द का प्रयोग हो तो प्रथमा एकवचन व द्वितीया एकवचन में रूप निम्न प्रकार होंगे। जैसे-
   प्रथमा एकवचन - **पिआ**
   द्वितीया एकवचन -**पिअरं**
   शेष रूप उकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्द **साहु** के अनुसार बनेंगे।
   इसी प्रकार **भाउ** (भाई) और **जामाउ** (दामाद) के रूप बनेंगे।
   (ii) **प्राकृत भाषा** में पिता के लिए **'पिअर'** शब्द का प्रयोग हो तो रूप अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्द **देव** के अनुसार बनेंगे।

---

2. (i) **प्राकृत भाषा** में विशेषणात्मक संज्ञा शब्द **'कत्तु'** (करनेवाला) का प्रयोग हो तो प्रथमा एकवचन व द्वितीया एकवचन में रूप निम्न प्रकार होंगे। जैसे-
   प्रथमा एकवचन - **कत्ता**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीया एकवचन - **कत्तारं**

शेष रूप उकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्द **साहु** के अनुसार बनेंगे।

इसी प्रकार **भत्तु** (भरण-पोषण करनेवाला) और **दाउ** (दाता/देनेवाला) के रूप **कत्तु** के समान बनेंगे।

(ii) **प्राकृत भाषा** में विशेषणात्मक संज्ञा शब्द **कत्तार** (करनेवाला) का प्रयोग होता है तो रूप अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्द **देव** के अनुसार बनेंगे।

---

3. (i) **प्राकृत भाषा** में जब **माता** के लिए **माउ** शब्द का प्रयोग हो तो प्रथमा एकवचन व द्वितीया एकवचन में रूप निम्न प्रकार होंगे। जैसे-

प्रथमा एकवचन - **माआ**

द्वितीया एकवचन - **माअरं**

शेष रूप उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द **धेणु** के अनुसार बनेंगे।

(ii) **प्राकृत भाषा** में जब **माता** के लिए **माया/माअरा** शब्द का प्रयोग हो तो रूप स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द **कहा** के अनुसार बनेंगे।

(iii) **प्राकृत भाषा** में जब **माता** के लिए **माइ** शब्द का प्रयोग हो तो रूप स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द **मइ** के अनुसार बनेंगे।

---

4. **प्राकृत भाषा** में राजा के लिए **राज, राय/राअ, रायाण** का प्रयोग होता है। इनमें से **राय/राअ** और **रायाण** के रूप अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्द **देव** की तरह बनेंगे।

---

5. **प्राकृत भाषा** में आत्मा के लिए **अप्प/अत्त, अप्पाण** और **अत्ताण** का प्रयोग होता है। **अप्प/अत्त, अप्पाण** और **अत्ताण** के रूप अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्द **देव** की तरह बनेंगे।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त से भिन्न राज (राजा) के रूप निम्न प्रकार से भी बनेंगे।

राज (राजा)

प्रथमा एकवचन 1/1

6. **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द **राज** के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **'आ'** विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

राज (पु.) (राज+आ) = **राजा→राया** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **राओ**

रायो

रायाणो

प्रथमा बहुवचन 1/2, द्वितीया बहुवचन 2/2,

पंचमी एकवचन 5/1, षष्ठी एकवचन 6/1

7. (i) **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के प्रथमा विभक्ति बहुवचन, द्वितीया विभक्ति बहुवचन, पंचमी विभक्ति एकवचन व षष्ठी विभक्ति एकवचन में राज के **ज** का **'इ'** करके **'णो'** प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

प्रथमा बहुवचन 1/2

राज (पु.) (राइ+णो) = **राइणो** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **राया**

राआ

रायाणा

द्वितीया बहुवचन 2/2

राज (पु.) (राइ+णो) = **राइणो** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप - **राया, राये**

राआ, राए

रायाणा, रायाणे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पंचमी एकवचन 5/1

राज (पु.) (राइ+णो) = **राइणो** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **रायत्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहि, रायाहिन्तो, राया**
राअत्तो, राआओ, राआउ, राआहि, राआहिन्तो, राआ
रायाणत्तो, रायाणाओ, रायाणाउ, रायाणाहि, रायाणाहिन्तो, रायाणा

षष्ठी एकवचन 6/1

राज (पु.) (राइ+णो) = **राइणो** (षष्ठी एकवचन)

राज→राय (पु.) (राय+णो) = **रायणो** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **रायस्स**

राअस्स

रायाणस्स

(ii) **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के पंचमी विभक्ति एकवचन व षष्ठी विभक्ति एकवचन में राज के **आज** का **'अण्'** करके **'णो'** प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

राज (पु.) (रण्+णो) = **रण्णो** (पंचमी एकवचन)

राज (पु.) (रण्+णो) = **रण्णो** (षष्ठी एकवचन)

(iii) **पैशाची भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के षष्ठी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **राचिञो** होता है।

अन्य रूप - **रञ्ञा**

तृतीया एकवचन 3/1

8. (i) **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के तृतीया विभक्ति एकवचन में राज के **ज** का **'इ'** करके **'णा'** प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है।

राज (पु.) (राइ+णा) = **राइणा** (तृतीया एकवचन)

अन्य रूप - **रायणा**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ii) **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के तृतीया विभक्ति एकवचन में राज के **आज** का '**अण्**' करके '**णा**' प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

राज (पु.) (रण्+णा) = **रण्णा** (तृतीया एकवचन)

अन्य रूप - **रायेण, रायेणं**

राएण, राएणं

रायाणेण, रायाणेणं

(iii) **पैशाची भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के तृतीया विभक्ति एकवचन में विकल्प से **राचिञा** होता है।

अन्य रूप - **रञ्ञा**

सप्तमी एकवचन 7/1

9. **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द **राज** के सप्तमी विभक्ति एकवचन में राज के **ज** का विकल्प से '**इ**' करके '**म्मि**' प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

राज (पु.) (राइ+म्मि) = **राइम्मि** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप - **राये, रायम्मि**

राए, राअम्मि

रायाणे, रायाणम्मि

द्वितीया एकवचन 2/1

10. **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के द्वितीया विभक्ति एकवचन में राज के **ज** का विकल्प से '**इणं**' करके **राइणं** रूप बन जाता है।

अन्य रूप - **रायं**

राअं

रायाणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

षष्ठी बहुवचन 6/2

प्राकृत भाषा में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में राज के **ज** का विकल्प से **'इणं'** करके **राइणं** रूप बन जाता है।

अन्य रूप - **रायाण, रायाणं,**

राआण, राआणं

रायाणाण, रायाणाणं

तृतीया बहुवचन 3/2

11. **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के तृतीया विभक्ति बहुवचन में राज के **ज** का विकल्प से **'ई'** करके **हि, हिं, हिं** प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं। जैसे-

राज (पु.) (राई+हि, हिँ, हिं)= **राईहि, राईहिँ, राइहिं** (तृतीया बहुवचन)

अन्य रूप - **रायेहि, रायेहिँ, रायेहिं**

राएहि, राएहिँ, राएहिं

रायाणेहि, रायाणेहिँ, रायाणेहिं

पंचमी बहुवचन 5/2

प्राकृत भाषा में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के पंचमी विभक्ति बहुवचन में राज के **ज** का विकल्प से **'ई'** करके **त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो** प्रत्यय जोड़ दिए जाते हैं। जैसे-

राज (पु.) (राई+त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो) **राईत्तो→राइत्तो, राईओ, राईउ, राईहिन्तो, राईसुन्तो** (पंचमी बहुवचन)

अन्य रूप -(i) **रायत्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहि, रायाहिन्तो, रायासुन्तो, रायेहि, रायेहिन्तो, रायेसुन्ता**

(ii) **राअत्तो, राआओ, राआउ, राआहि, राआहिन्तो, राआसुन्तो, राएहि, राएहिन्तो, राएसुन्तो**

(iii) **रायाणत्तो, रायाणाओ, रायाणाउ, रायाणाहि, रायाणाहिन्तो,**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रायाणासुन्तो, रायाणेहि, रायाणेहिन्तो, रायाणेसुन्तो

षष्ठी बहुवचन 6/2

प्राकृत भाषा में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में राज के **ज** का <u>विकल्प से</u> **'ई'** करके **ण** और **णं** प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं। जैसे-

राज (पु.) (राई+ण, णं) = **राईण, राईणं** (षष्ठी बहुवचन)

सप्तमी बहुवचन 7/2

प्राकृत भाषा में पुल्लिंग संज्ञा शब्द राज के सप्तमी विभक्ति में राज के **ज** का <u>विकल्प से</u> **'ई'** करके **सु** और **सुं** प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं। जैसे-

राज (पु.) (राई+सु, सुं) = **राईसु, राईसुं** (सप्तमी बहुवचन)

रायेसु, रायेसुं

राएसु, राएसुं

रायाणेसु, रायाणेसुं

अकारान्त से भिन्न अप्प/अत्त (आत्मा) के रूप निम्न प्रकार बनेंगे।

अप्प/अत्त (आत्मा)

प्रथमा एकवचन 1/1

12. **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द **अप्प/अत्त** के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **'आ'** <u>विकल्प से</u> जोड़ा जाता है। जैसे-

अप्प (पु.) (अप्प+आ) = **अप्पा** (प्रथमा एकवचन)

अत्त (पु.) (अत्त+आ) = **अत्ता** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **अप्पो, अप्पाणो**

अत्तो, अत्ताणो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रथमा बहुवचन 1/2, द्वितीया बहुवचन 2/2,
पंचमी एकवचन 5/1, षष्ठी एकवचन 6/1

13. (i) **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द अप्प/अत्त के प्रथमा विभक्ति बहुवचन, द्वितीया विभक्ति बहुवचन व पंचमी विभक्ति एकवचन में अप्प/अत्त के अन्त्य **अ** का '**आ**' करके '**णो**' प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

प्रथमा बहुवचन 1/2

अप्प (पु.) (अप्पा+णो) = **अप्पाणो** (प्रथमा बहुवचन)

अत्त (पु.) (अत्ता+णो) = **अत्ताणो** (प्रथमा बहुवचन)

अन्य रूप - **अप्पा, अत्ता, अप्पाणा, अत्ताणा**

द्वितीया बहुवचन 2/2

अप्प (पु.) (अप्पा+णो) = **अप्पाणो** (द्वितीया बहुवचन)

अत्त (पु.) (अत्ता+णो) = **अत्ताणो** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप -**अप्पा, अप्पे, अत्ता, अत्ते, अप्पाणा, अप्पाणे, अत्ताणा, अत्ताणे**

पंचमी एकवचन 5/1

अप्प (पु.) (अप्पा+णो) = **अप्पाणो** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप-

(i) **अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहि, अप्पाहिन्तो, अप्पा**

(ii) **अत्तत्तो, अत्ताओ, अत्ताउ, अत्ताहि, अत्ताहिन्तो, अत्ता**

(iii) **अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणाउ, अप्पाणाहि, अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणा**

(iv) **अत्ताणत्तो, अत्ताणाओ, अत्ताणाउ, अत्ताणाहि, अत्ताणाहिन्तो, अत्ताणा**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ii) **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द अप्प/अत्त के षष्ठी विभक्ति एकवचन में **'णो'** प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

षष्ठी एकवचन 6/1

अप्प (पु.) (अप्प+णो) = **अप्पणो** (षष्ठी एकवचन)

अत्त (पु.) (अत्त+णो) = **अत्तणो** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **अप्पस्स, अत्तस्स, अप्पाणस्स, अत्ताणस्स**

तृतीया एकवचन 3/1

14. **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द अप्प/अत्त के तृतीया विभक्ति एकवचन में **'णिआ'** और **'णइआ'** प्रत्यय विकल्प से होते हैं। जैसे-

अप्प (पु.) (अप्प+णिआ, णइआ) = **अप्पणिआ, अप्पणइआ**
(तृतीया एकवचन)

अत्त (पु.) (अत्त+णिआ, णइआ) = **अत्तणिआ, अत्तणइआ**
(तृतीया एकवचन)

अन्य रूप - **अप्पणा, अप्पेण, अप्पेणं, अप्पाणेण, अप्पाणेणं**
अत्तणा, अत्तेण, अत्तेणं, अत्ताणेण, अत्ताणेणं

तृतीया एकवचन 3/1

15. **प्राकृत भाषा** में पुल्लिंग संज्ञा शब्द अप्प/अत्त के तृतीया विभक्ति एकवचन में **'णा'** प्रत्यय भी विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

अप्प (पु.) (अप्प+णा)= **अप्पणा**

अत्त (पु.) (अत्त+णा)= **अत्तणा** (तृतीया एकवचन)

अन्य रूप - **अप्पेण, अप्पेणं, अत्तेण, अत्तेणं, अप्पाणेण, अप्पाणेणं, अत्ताणेण, अत्ताणेणं, अप्पणिआ, अप्पणइआ, अत्तणिआ, अत्तणइआ**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शौरसेनी प्राकृत भाषा

अकारान्त (पु., नपुं.)

पंचमी एकवचन 5/1

1. **शौरसेनी प्राकृत** में अकारान्त पुल्लिंग व नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति एकवचन में '**आदो**' और '**आदु**' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देव+आदो, आदु) = **देवादो, देवादु** (पंचमी एकवचन)

कमल (नपुं.) (कमल+आदो, आदु) = **कमलादो, कमलादु** (पंचमी एकवचन)

इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (पु.)

इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

आकारान्त, इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (स्त्री.)

पंचमी एकवचन 5/1

2. **शौरसेनी भाषा** में इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग व इकारान्त, उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्द तथा आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति एकवचन में '**दो**', और '**दु**' प्रत्यय जोड़े जाते हैं तथा **ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है और दीर्घ स्वर का दीर्घ ही रहता है।** जैसे-

हरि (पु.) (हरि→हरी+दो, दु) = **हरीदो, हरीदु** (पंचमी एकवचन)

गामणी(पु.)(गामणी+दो, दु)=**गामणीदो, गामणीदु** (पंचमी एकवचन)

साहु (पु.) (साहु→साहू+दो, दु) = **साहूदो, साहूदु** (पंचमी एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+दो, दु) = **सयंभूदो, सयंभूदु** (पंचमी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वारि (नपुं.) (वारि→वारी+दो, दु) = **वारीदो, वारीदु** (पंचमी एकवचन)

महु (नपुं.) (महु→महू+दो, दु) = **महूदो, महूदु** (पंचमी एकवचन)

कहा (स्त्री.) (कहा+दो, दु) = **कहादो, कहादु** (पंचमी एकवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ→मई+दो, दु) = **मईदो, मईदु** (पंचमी एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+दो, दु) = **लच्छीदो, लच्छीदु** (पंचमी एकवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु→धेणू+दो, दु) = **धेणूदो, धेणूदु** (पंचमी एकवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+दो, दु) = **बहूदो, बहूदु** (पंचमी एकवचन)

अकारान्त (पु., नपुं.)

पंचमी बहुवचन 5/2

3. **शौरसेनी भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग व नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य 'अ' का 'आ' करके उसमें 'दो' और 'दु' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देवा+दो, दु) = **देवादो, देवादु** (पंचमी बहुवचन)

कमल (नपुं.) (कमला+दो, दु) = **कमलादो, कमलादु** (पंचमी बहुवचन)

इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (पु.)

इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

आकारान्त, इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (स्त्री.)

पंचमी बहुवचन 5/2

4. **शौरसेनी भाषा** में इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग, इकारान्त-उकारान्त नपुंसकलिंग व आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति बहुवचन में 'दो', और 'दु' प्रत्यय जोड़े जाते हैं तथा **ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है और दीर्घ स्वर का दीर्घ** ही रहता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हरि (पु.) (हरि→हरी+दो, दु) = **हरीदो, हरीदु** (पंचमी बहुवचन)
गामणी(पु.)(गामणी+दो, दु)=**गामणीदो, गामणीदु** (पंचमी बहुवचन)
साहु (पु.) (साहु→साहू+दो, दु) = **साहूदो, साहूदु** (पंचमी बहुवचन)
सयंभू (पु.) (सयंभू+दो, दु) = **सयंभूदो, सयंभूदु** (पंचमी बहुवचन)

वारि (नपुं.) (वारि→वारी+दो, दु) = **वारीदो, वारीदु** (पंचमी बहुवचन)
महु (नपुं.) (महु→महू+दो, दु) = **महूदो, महूदु** (पंचमी बहुवचन)

कहा (स्त्री.) (कहा+दो, दु) = **कहादो, कहादु** (पंचमी बहुवचन)
मइ (स्त्री.) (मइ→मई+दो, दु) = **मईदो, मईदु** (पंचमी बहुवचन)
लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+दो, दु) = **लच्छीदो, लच्छीदु** (पंचमी बहुवचन)
धेणु (स्त्री.) (धेणु→धेणू+दो, दु) = **धेणूदो, धेणूदु** (पंचमी बहुवचन)
बहू (स्त्री.) (बहू+दो, दु) = **बहूदो, बहूदु** (पंचमी बहुवचन)

अकारान्त (पु., नपुं)

सप्तमी एकवचन 7/1

5. **शौरसेनी भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'म्हि'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-
देव (पु.) (देव+म्हि) = **देवम्हि** (सप्तमी एकवचन)
कमल (नपुं.) (कमल+म्हि) = **कमलम्हि** (सप्तमी एकवचन)

इकारान्त-ईकारान्त, उकारान्त-ऊकारान्त (पु.)

इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

सप्तमी एकवचन 7/1

6. **शौरसेनी भाषा** में इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग व इकारान्त-उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'म्हि'**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्यय जोड़ा जाता है। **ह्रस्व स्वर का ह्रस्व ही रहता है तथा दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।** जैसे-

हरि (पु.) (हरि+म्हि) = **हरिम्हि** (सप्तमी एकवचन)

गामणी (पु.) (गामणी→गामणि+म्हि) = **गामणिम्हि** (सप्तमी एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+म्हि) = **साहुम्हि** (सप्तमी एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू→सयंभु+म्हि) = **सयंभुम्हि** (सप्तमी एकवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+म्हि) = **वारिम्हि** (सप्तमी एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+म्हि) = **महुम्हि** (सप्तमी एकवचन)

---

7. विशिष्ट शब्द **राय** आदि के पंचमी विभक्ति एकवचन में भी **'आदो'** और **'आदु'** प्रत्यय तथा पंचमी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का **'आ'** करके उसमें **'दो'** और **'दु'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं तथा सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'म्हि'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

राय (पु.) (राय+आदो, आदु) = **रायादो, रायादु** (पंचमी एकवचन)

राय (पु.) (राया+दो, दु) = **रायादो, रायादु** (पंचमी बहुवचन)

राय (पु.) (राय+म्हि) = **रायम्हि** (सप्तमी एकवचन)

अकारान्त (पु.)

संबोधन एकवचन 8/1

8. **शौरसेनी भाषा** में विशिष्ट संज्ञा शब्द **राज** के संबोधन एकवचन में <u>विकल्प से</u> **'अनुस्वार'** जोड़ा जाता है। जैसे-

राय (पु.) (राय+ँ) = **रायं** (संबोधन एकवचन)

नोट- शेष विभक्ति प्रत्यय प्राकृत भाषा के अनुसार होंगे।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मागधी प्राकृत भाषा

अकारान्त (पु.)

प्रथमा एकवचन 1/1

1. **मागधी प्राकृत** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **'ए'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देव+ए) = **देवे** (प्रथमा एकवचन)

अकारान्त (पु., नपुं.)

षष्ठी एकवचन 6/1

2. **मागधी भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग व नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति एकवचन में <u>विकल्प से</u> **'श्श'** और **'आह'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देव+श्श) = **देवश्श** (षष्ठी एकवचन)

देव (पु.) (देव+आह) = **देवाह** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **देवस्स**

कमल (नपुं.) (कमल+श्श) = **कमलश्श** (षष्ठी एकवचन)

कमल (नपुं.) (कमल+आह) = **कमलाह** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **कमलस्स**

अकारान्त (पु., नपुं) षष्ठी बहुवचन 6/2

3. **मागधी भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग व नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में <u>विकल्प से</u> **'आहँ'** प्रत्यय जोड़ा जाता है । जैसे-

देव (पु.) (देव+आहँ) = **देवाहँ** (षष्ठी बहुवचन)

कमल (नपुं.) (कमल+आहँ) = **कमलाहँ** (षष्ठी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त (पु., नपुं.)

सप्तमी एकवचन 7/1

4. **मागधी भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग व नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में '**आहिं**' और '**ए**' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देव+आहिं, ए) = **देवाहिं, देवे** (सप्तमी एकवचन)

कमल (नपुं.) (कमल+आहिं, ए) = **कमलाहिं, कमले** (सप्तमी एकवचन)

अकारान्त (पु.)

सम्बोधन बहुवचन 8/2

5. **मागधी भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के संबोधन बहुवचन में '**आहो**' प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देव+आहो) = **देवाहो** (संबोधन बहुवचन)

पैशाची प्राकृत भाषा

अकारान्त (पु., नपुं.)

पंचमी एकवचन 5/1

1. **पैशाची प्राकृत में** अकारान्त पुल्लिंग व नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति एकवचन में '**आतो**' और '**आतु**' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देव+आतो, आतु) = **देवातो, देवातु** (पंचमी एकवचन)

कमल (नपुं.) (कमल+आतो, आतु) = **कमलातो, कमलातु** (पंचमी एकवचन)

नोट- शेष विभक्ति प्रत्यय प्राकृत भाषा तथा शौरसेनी भाषा के अनुसार होंगे।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्धमागधी प्राकृत भाषा

अकारान्त (पु.)

प्रथमा एकवचन 1/1

1. अर्धमागधी **प्राकृत** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **'ए'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देव+ए) = **देवे** (प्रथमा एकवचन)

अकारान्त (पु.)

प्रथमा बहुवचन 1/2

2. **अर्धमागधी भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन में **'आओ'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देव+आओ) = **देवाओ** (प्रथमा बहुवचन)

अकारान्त (पु., नपुं.)

पंचमी बहुवचन 5/2

3. **अर्धमागधी भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग व नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का **'ए'** करके उसमें **'हिन्तो'**, और **'हिं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं । जैसे-

देव (पु.) (देवे+हिन्तो, हिं) = **देवेहिन्तो, देवेहिं** (पंचमी बहुवचन)

कमल (नपुं.)(कमले+हिन्तो,हिं)=**कमलेहिन्तो,कमलेहिं** (पंचमी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त (पु., नपुं.)

सप्तमी एकवचन 7/1

4. **अर्धमागधी भाषा** में अकारान्त पुल्लिंग व नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'अंसि'**, **'म्मि'**, **'अंमि'** और **'ए'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देव+अंसि, म्मि, अंमि, ए) = **देवंसि, देवम्मि, देवंमि, देवे** (सप्तमी एकवचन)

कमल (नपुं.) (कमल+अंसि, म्मि, अंमि, ए) = **कमलंसि, कमलम्मि, कमलंमि, कमले** (सप्तमी एकवचन)

नोट– शेष विभक्ति प्रत्यय प्राकृत भाषा के अनुसार होंगे।

❑❑❑

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सर्वनाम[1] शब्दों का विभक्ति-विवरण

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

प्रथमा बहुवचन 1/2

1. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **सव्वादि** सर्वनामों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन में **'ए'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

सव्व (सब) (पु.) (सव्व+ए) = **सव्वे** (प्रथमा बहुवचन)

त (वह)(पु.) (त+ए) = **ते** (प्रथमा बहुवचन)

ज (जो) (पु.)(ज+ए) = **जे** (प्रथमा बहुवचन)

क (कौन) (पु.) (क+ए) = **के** (प्रथमा बहुवचन)

एत (यह) (पु.) (एत+ए) = **एते** (प्रथमा बहुवचन)

इम (यह) (पु.) (इम+ए) = **इमे** (प्रथमा बहुवचन)

अन्न (दूसरा) (पु.) (अन्न+ए) = **अन्ने** (प्रथमा बहुवचन)

नोट-

1. जो प्रत्यय अकारान्त (पु., नपुं.) व आकारान्त (स्त्री.) संज्ञा शब्दों में प्रयुक्त हुए हैं वे ही प्रत्यय अकारान्त (पु., नपुं.) व आकारान्त (स्त्री.) सर्वनामों में प्रयुक्त होंगे। यद्यपि इसमें कुछ अपवाद हैं जो सर्वनामों की रूपावली से समझे जा सकते हैं।
   सर्वनाम शब्द इस प्रकार हैं- सव्व (सब), त (वह), ज (जो), क (कौन,क्या), एत (यह), इम (यह), अन्न (दूसरा), एक्क (एकही)।
2. यहाँ सव्वादि सर्वनामों के कुछ विभक्तियों के रूप बताये जा रहे हैं। शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिंग में **'देव'** के समान, नपुंसकलिंग में **'कमल'** के समान, स्त्रीलिंग में **'कहा'** व **'लच्छी'** के समान चलेंगे तथा सव्वादि सर्वनामों के अन्य रूप जो संज्ञा शब्दों के नियमानुसार बनाये गये हैं वहाँ **'संज्ञा शब्दों के नियमानुसार'** ऐसा लिखा गया है। जो रूप संज्ञाओं से स्वतन्त्र हैं वे यहाँ **'अन्य रूप'** में दिए गये हैं।
3. **'एक्क'** सर्वनाम के रूप परिशिष्ट 3 में देखें।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

सप्तमी एकवचन 7/1

2. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **सव्वादि** सर्वनामों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'स्सिं'**, **'म्मि'** और **'त्थ'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं किन्तु अकारान्त पुल्लिंग **एत** सर्वनाम में **'त्थ'** जोड़ने पर **त** का लोप हो जाता है और **इम** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'त्थ'** प्रत्यय नहीं जोड़ा जाता है। जैसे-

सव्व (सब) (पु.) (सव्व+स्सिं, म्मि, त्थ) = **सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ** (सप्तमी एकवचन)

त (वह)(पु.) (त+स्सिं, म्मि, त्थ) = **तस्सिं, तम्मि, तत्थ** (सप्तमी एकवचन)

ज (जो) (पु.) (ज+स्सिं, म्मि, त्थ) = **जस्सिं, जम्मि, जत्थ** (सप्तमी एकवचन)

क (कौन) (पु.) (क+स्सिं, म्मि, त्थ) = **कस्सिं , कम्मि, कत्थ** (सप्तमी एकवचन)

अन्न (अन्य) (पु.) (अन्न+स्सिं,म्मि,त्थ) = **अन्नस्सिं, अन्नम्मि, अन्नत्थ** (सप्तमी एकवचन)

एत (यह) (पु.) (एत+स्सिं, म्मि, त्थ) = **एतस्सिं, एतम्मि, एतत्थ→एत्थ** (सप्तमी एकवचन)

इम (यह) (पु.)(इम+स्सिं,म्मि)= **इमस्सिं, इमम्मि** (सप्तमी एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

सप्तमी एकवचन 7/1

3. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **सव्वादि** सर्वनामों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में <u>विकल्प से</u> **'हिं'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है **इम** और **एत** सर्वनाम को छोड़कर। जैसे-

सव्व (सब) (पु.) (सव्व+हिं) = **सव्वहिं** (सप्तमी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्य रूप- **सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ**

त (वह) (पु.) (त+हिं) = **तहिं** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप- **तस्सिं, तम्मि, तत्थ**

ज (जो) (पु.) (ज+हिं) = **जहिं** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप- **जस्सिं, जम्मि, जत्थ**

क (कौन) (पु.) (क+हिं) = **कहिं** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप- **कस्सिं, कम्मि, कत्थ**

अन्न (अन्य) (पु.) (अन्न+हिं) = **अन्नहिं** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप- **अन्नस्सिं, अन्नम्मि, अन्नत्थ**

नोट– हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार आकारान्त स्त्रीलिंग **ता, जा** और **का** सर्वनामों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में भी विकल्प से **'हिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है।

ता (वह)(स्त्री.) (ता+हिं) = **ताहिं** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप- **ताअ, ताइ, ताए** (स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द कहा के अनुसार)

जा (जो) (स्त्री.)(जा+हिं) = **जाहिं** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप- **जाअ, जाइ, जाए** (स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द कहा के अनुसार)

का (कौन) (स्त्री.) (का+हिं) = **काहिं** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप- **काअ, काइ, काए** (स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द कहा के अनुसार)

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

षष्ठी बहुवचन 6/2

4. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **सव्वादि** सर्वनामों के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में विकल्प से **'एसिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

सव्व (सब) (पु.) (सव्व+एसिं) = **सव्वेसिं** (षष्ठी बहुवचन)

अन्य रूप - **सव्वाण, सव्वाणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

अन्न (अन्य) (पु.) (अन्न+एसिं) = **अन्नेसिं** (षष्ठी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्य रूप - **अन्नाण, अन्नाणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

इम (यह) (पु.) (इम+एसिं) = **इमेसिं** (षष्ठी बहुवचन)

अन्य रूप - **इमाण, इमाणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

एत (यह) (पु.) (एत+एसिं) = **एतेसिं** (षष्ठी बहुवचन)

अन्य रूप - **एताण, एताणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

त (वह) (पु.) (त+एसिं) = **तेसिं** (षष्ठी बहुवचन)

अन्य रूप - **ताण, ताणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

ज (जो) (पु.) (ज+एसिं) = **जेसिं** (षष्ठी बहुवचन)

अन्य रूप - **जाण, जाणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

क (कौन) (पु.) (क+एसिं) = **केसिं** (षष्ठी बहुवचन)

अन्य रूप - **काण, काणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

नोट– हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार आकारान्त स्त्रीलिंग **सव्वादि** सर्वनामों के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में भी विकल्प से **'एसिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

सव्वा (सब) (पु.) (सव्वा+एसिं) = **सव्वेसिं** (षष्ठी बहुवचन)

अन्य रूप - **सव्वाण, सव्वाणं** (स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द कहा के अनुसार)

नोट- इसी प्रकार अन्य रूपों में भी बना लेने चाहिए।

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

षष्ठी बहुवचन 6/2

5. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **क** और **त** सर्वनामों के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में विकल्प से **'आस'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

क (कौन) (पु.) (क+आस) = **कास** (षष्ठी बहुवचन)

अन्य रूप - **केसिं**

त (वह) (पु.) (त+आस) = **तास** (षष्ठी बहुवचन)

अन्य रूप - **तेसिं**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

षष्ठी एकवचन 6/1

6. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **क, ज** और **त** सर्वनामों के षष्ठी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **'आस'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

क (कौन) (पु.) (क+आस) = **कास** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **कस्स** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

ज (जो) (पु.) (ज+आस) = **जास** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **जस्स** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

त (वह) (पु.) (त+आस) = **तास** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **तस्स** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

नोट– हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार आकारान्त स्त्रीलिंग **का** और **ता** सर्वनाम के षष्ठी विभक्ति एकवचन में भी विकल्प से **'आस'** प्रत्यय जोड़ा जाता है।

आकारान्त सर्वनाम (स्त्री.)

षष्ठी एकवचन 6/1

का (कौन) (स्त्री.) (का+आस) = **कास** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **काअ, काइ, काए** (स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द कहा के अनुसार)

ता (वह)(स्त्री.) (ता+आस) = **तास** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **ताअ, ताइ, ताए** (स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द कहा के अनुसार)

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

सप्तमी एकवचन 7/1

7. प्राकृत भाषा में कालवाचक शब्द **क, त** और **ज** सर्वनामों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **'आहे', आला'** और **इआ'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क (कब) (पु.) (क+आहे, आला, इआ) = **काहे, काला, कइआ**
(सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप - **कस्सिं, कम्मि, कत्थ, कहिं**

त (तब) (पु.) (त+आहे, आला, इआ) = **ताहे, ताला, तइआ**
(सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप - **तस्सिं, तम्मि, तत्थ, तहिं**

ज (जब) (पु.) (ज+आहे, आला, इआ) = **जाहे, जाला, जइआ**
(सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप - **जस्सिं, जम्मि, जत्थ, जहिं**

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

पंचमी एकवचन 5/1

8. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **क, त** और **ज** सर्वनामों के पंचमी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **'म्हा'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

क (कौन) (पु.) (क+म्हा) = **कम्हा** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, का**
(पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

त (वह)(पु.) (त+म्हा) = **तम्हा** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, ता**
(पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

ज (जो) (पु.) (ज+म्हा) = **जम्हा** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जा**
(पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

पंचमी एकवचन 5/1

9. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **त** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **'ओ'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है। जैसे-

त (वह) (पु.) (त+ओ) = **तो** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **तम्हा**

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

पंचमी एकवचन 5/1

10. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **क** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **'इणो'** और **'ईस'** प्रत्यय भी जोड़े जाते हैं। जैसे-

क (कौन) (पु.) (क+इणो, ईस) = **किणो, कीस** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **कम्हा**

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

तृतीया एकवचन 3/1

11. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम, एत, क, ज** और **त** सर्वनामों के तृतीया विभक्ति एकवचन में विकल्प से **'इणा'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है। जैसे-

इम (यह) (पु.) (इम+इणा) = **इमिणा** (तृतीया एकवचन)

अन्य रूप - **इमेण, इमेणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

एत (यह) (पु.) (एत+इणा) = **एतिणा** (तृतीया एकवचन)

अन्य रूप - **एतेण, एतेणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

क (कौन) (पु.) (क+इणा) = **किणा** (तृतीया एकवचन)

अन्य रूप - **केण, केणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

ज (जो) (पु.) (ज+इणा) = **जिणा** (तृतीया एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्य रूप - **जेण, जेणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

त (वह) (पु.) (त+इणा) = **तिणा** (तृतीया एकवचन)

अन्य रूप - **तेण, तेणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

प्रथमा एकवचन 1/1

12. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **एत** और **त** सर्वनामों के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **त** का **स** करके विकल्प से **'ओ'** प्रत्यय जोड़ा जाता है और **'स'** भी बना रहता है। जैसे-

त→स (वह) (पु.) (स+ओ) = **सो** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **स**

एत→एस (वह) (पु.) (एस+ओ) = **एसो** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **एस**

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

प्रथमा एकवचन 1/1

13. (i) प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **'ओ'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

इम (यह) (इम+ओ) = **इमो** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **सभी विभक्तियों में देव के अनुसार**

आकारान्त सर्वनाम (स्त्री.)

प्रथमा एकवचन 1/1

(ii) प्राकृत भाषा में आकारान्त स्त्रीलिंग **इमा** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **इमा** होता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इमा (यह) (इमा+0) = **इमा** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **सभी विभक्तियों में कहा के अनुसार**

अकारान्त सर्वनाम (पु.), आकारान्त सर्वनाम (स्त्री.)

प्रथमा एकवचन 1/1

14. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** व आकारान्त स्त्रीलिंग **इमा** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में विकल्प से **अयं** (पुल्लिंग) व **इमिआ** (स्त्रीलिंग) होता है।

अन्य रूप- **इमो** (पु.) (प्रथमा एकवचन)

(पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

इमा (स्त्री.) (प्रथमा एकवचन)

(स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द कहा के अनुसार)

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

सप्तमी एकवचन 7/1

15. (i) प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **इम** का विकल्प से **अ** हो जाता है और **'स्सिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

इम→**अ** (यह) (पु.) (अ+स्सिं) = **अस्सिं** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप - **इमस्सिं, इमम्मि**

षष्ठी एकवचन 6/1

(ii) प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** सर्वनाम के षष्ठी विभक्ति एकवचन में **इम** का विकल्प से **अ** हो जाता है और **'स्स'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

इम→**अ** (यह) (पु.) (अ+स्स) = **अस्स** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **इमस्स** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

सप्तमी एकवचन 7/1

16. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **इम** के **म** का <u>विकल्प से</u> **ह** हो जाता है।

इम (यह) (पु.) **इह** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप - **इमस्सिं, इमम्मि**

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

द्वितीया एकवचन 2/1, द्वितीया बहुवचन 2/2, तृतीया एकवचन 3/1, तृतीया बहुवचन 3/2

17. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** सर्वनाम के द्वितीया विभक्ति एकवचन, द्वितीया विभक्ति बहुवचन, तृतीया विभक्ति एकवचन व तृतीया विभक्ति बहुवचन में <u>विकल्प से</u> **इम** का **ण** हो जाता है।

द्वितीया एकवचन 2/1

(i) प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** सर्वनाम के द्वितीया विभक्ति एकवचन में <u>विकल्प से</u> **इम** का **ण** हो जाता है और उसके पश्चात् **'अनुस्वार'** (ं) जोड़ा जाता है। जैसे-

इम→**ण** (यह) (पु.) (ण+ं) = **णं** (द्वितीया एकवचन)

अन्य रूप- **इमं, इणं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

द्वितीया बहुवचन 2/2

(ii) प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** सर्वनाम के द्वितीया विभक्ति बहुवचन में <u>विकल्प से</u> **इम** का **ण** हो जाता है और उसके पश्चात् **'शून्य'** (**0**) प्रत्यय जोड़ा जाता है और अन्त्य **अ** का **आ** और **ए** हो जाता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इम→**ण** (यह) (पु.) (ण+0) = **णा, णे** (द्वितीया बहुवचन)

अन्य रूप- **इमे, इमा** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

तृतीया एकवचन 3/1

(iii) प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** सर्वनाम के तृतीया विभक्ति एकवचन में विकल्प से **इम** का **ण** हो जाता है और उसके पश्चात् **'इणा'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

इम→**ण** (यह) (पु.) (ण+इणा) = **णिणा** (तृतीया एकवचन)

अन्य रूप - **इमेण, इमेणं, णेण, णेणं, इमिणा**

(पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

तृतीया बहुवचन 3/2

(iv) प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** सर्वनाम के तृतीया विभक्ति बहुवचन में विकल्प से **इम** का **ण** हो जाता है और उसके पश्चात् **'हि', 'हिं', 'हिं'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं और अन्त्य **अ** का **ए** हो जाता है। जैसे-

इम→**ण**(यह) (पु.) (ण+हि, हिं, हिं)=**णेहि, णेहिं, णेहिं** (तृतीया बहुवचन)

अन्य रूप - **इमेहि, इमेहिं, इमेहिं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

द्वितीया एकवचन 2/1

18. प्राकृत भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **इम** सर्वनाम के द्वितीया विभक्ति एकवचन में **इणं** होता है।

अन्य रूप - **इमं** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

अकारान्त सर्वनाम (नपुं.)

प्रथमा एकवचन 1/1, द्वितीया एकवचन 2/1

19. प्राकृत भाषा में अकारान्त नपुंसकलिंग **इम** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में क्रम से **इदं, इणमो, इणं** होते हैं।

अकारान्त सर्वनाम (नपुं.)

प्रथमा एकवचन 1/1, द्वितीया एकवचन 2/1

20. प्राकृत भाषा में अकारान्त नपुंसकलिंग **क** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में **किं** होता है।

अकारान्त सर्वनाम (पु., नपुं.), आकारान्त सर्वनाम (स्त्री.)

षष्ठी एकवचन 6/1, षष्ठी बहुवचन 6/2

21. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग **इम, एत, त** तथा स्त्रीलिंग **इमा, एता, ता** सर्वनामों के षष्ठी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **से** तथा षष्ठी विभक्ति बहुवचन में विकल्प से **सिं** होता है।

अन्य रूप - (पुल्लिंग में **देव** के समान, नपुंसकलिंग में **कमल** के समान तथा स्त्रीलिंग में **कहा** के समान चलेंगे जिन्हें रूपावली में देखें)

अकारान्त सर्वनाम (पु., नपुं.)

पंचमी एकवचन 5/1

22. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग सर्वनाम **एत** के पंचमी विभक्ति एकवचन में विकल्प से **त्तो** और **त्ताहे** प्रत्यय जोड़े जाते हैं और **एत** के **त** का लोप हो जाता है।

एत (यह) (पु., नपुं.) (एत+त्तो, त्ताहे) = **एत्तो, एत्ताहे** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **एताओ, एताउ, एताहि, एताहिन्तो, एता**

(पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार, तथा नपुंसकलिंग कमल के अनुसार)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त सर्वनाम (पु., नपुं.)

सप्तमी एकवचन 7/1

23. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग सर्वनाम **एत** के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **त्थ** प्रत्यय जोड़ा जाता है और **एत** के **त** का लोप हो जाता है।

एत (यह) (पु., नपुं.) (एत+त्थ) = **एत्थ** (सप्तमी एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (पु., नपुं.)

सप्तमी एकवचन 7/1

24. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग सर्वनाम **एत** के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **ए** का विकल्प से **अ** और **ई** होता है तथा **त** का लोप हो जाता है और **म्मि** प्रत्यय जोड़ा जाता है।

एत (यह)(पु., नपुं.)(अ+म्मि)=**अअम्मि→अयम्मि** (सप्तमी एकवचन)

(ई+म्मि) = **ईअम्मि→ईयम्मि** (सप्तमी एकवचन)

अन्य रूप - **एतम्मि, एतस्सिं, एत्थ**

अकारान्त सर्वनाम (पु., नपुं.)

प्रथमा एकवचन 1/1

25. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग सर्वनाम **एत** के प्रथमा विभक्ति एकवचन में विकल्प से **एस, इणं, इणमो** होते हैं।

एत (यह) (पु., नपुं.) = **एस, इणं, इणमो** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **एसो** (पुल्लिंग संज्ञा शब्द देव के अनुसार)

एतं (नपुंसकलिंग संज्ञा शब्द कमल के अनुसार)

अकारान्त सर्वनाम (पु.) आकारान्त सर्वनाम (स्त्री.)

प्रथमा एकवचन 1/1

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

26. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, स्त्रीलिंग सर्वनाम **एत, एता** और **त, ता** के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **त** का **स** करके अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्द **देव** के अनुसार **एसो, सो** तथा आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द **कहा** के अनुसार **एसा, सा** होता है।

एत (यह) (पु.) = **एसो** (प्रथमा एकवचन)

त (वह) (पु.) = **सो** (प्रथमा एकवचन)

एता (यह) (स्त्री.) = **एसा** (प्रथमा एकवचन)

ता (वह) (स्त्री.) = **सा** (प्रथमा एकवचन)

---

27. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग सर्वनाम **अमु** का प्रथमा विभक्ति एकवचन में **अह** होता है।

अमु (वह) (पु., नपुं., स्त्री.) = **अह** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप- **अमू (पुं.), अमुं (नपुं.), अमू (स्त्री.)**

---

28. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग सर्वनाम **अमु** के पुल्लिंग में **साहु** के अनुसार, नपुंसकलिंग में **महु** के अनुसार तथा स्त्रीलिंग में **धेणु** के अनुसार रूप बनेंगे।

---

29. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग सर्वनाम **अमु** का <u>विकल्प से</u> **अय** और **इय** होता है और सप्तमी विभक्ति एकवचन मे **म्मि** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

अमु→**अय, इय** (वह) (पु.) = (अय, इय+म्मि) =**अयम्मि, इयम्मि**
(सप्तमी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुरुषवाचक सर्वनाम

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंगों में)

प्रथमा एकवचन 1/1

30. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **'तं, तुं, तुवं, तुह, तुमं'** होते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तं, तुं, तुवं, तुह, तुमं** (प्रथमा एकवचन)

प्रथमा बहुवचन 1/2

31. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति बहुवचन में **'भे, तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्ह, उय्हे'** होते हैं।

तुम्ह (तुम)(तीनों लिंग)-**भे, तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे**
(प्रथमा बहुवचन)

तथा

तुम्हे और **तुज्झे** भी होते हैं। (हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

द्वितीया एकवचन 2/1

32. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के द्वितीया विभक्ति एकवचन में **'तं, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे, तुए'** होते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग)- **तं, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे, तुए**
(द्वितीया एकवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

33. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'वो, तुज्झ, तुब्भे, तुय्हे, उय्हे, भे'** होते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग)- **वो, तुज्झ, तुब्भे, तुय्हे, उय्हे, भे, तुम्हे, तुज्झे** (द्वितीया बहुवचन)

तथा

तुम्हे और **तुज्झे** भी होते हैं। (हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

तृतीया एकवचन 3/1

34. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के तृतीया विभक्ति एकवचन में **'भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ'** होते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ** (तृतीया एकवचन)

तृतीया बहुवचन 3/2

35. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के तृतीया विभक्ति बहुवचन में **'भे, तुब्भेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं'** होते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग)- **भे, तुब्भेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं** (तृतीया बहुवचन)

तथा

तुम्हेहिं और **तुज्झेहिं** भी होते हैं। (हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

पंचमी एकवचन 5/1

36. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति एकवचन में **'तइ, तुव, तुम, तुह, तुब्भ** तथा **तुम्ह** और **तुज्झ'** के अन्त्य स्वर का दीर्घ करके पंचमी बोधक **त्तो, ओ, उ, हि, हिन्तो** और **शून्य** प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग)-

तइत्तो, तईओ, तईउ, तईहिन्तो

तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिन्तो, तुवा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुमाहि, तुमाहिन्तो, तुमा
तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ, तुहाहि, तुहाहिन्तो, तुहा
तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भाहिन्तो, तुब्भा
(पंचमी एकवचन)

तथा

तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहि, तुम्हाहिन्तो, तुम्हा
तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झाहिन्तो, तुज्झा भी होते हैं। (हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

नोट- दीर्घ स्वर के आगे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

पंचमी एकवचन 5/1

37. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति एकवचन में (विकल्प से) **'तुय्ह, तुब्भ, तहिन्तो'** होते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग)- **तुय्ह, तुब्भ, तहिन्तो**
(पंचमी एकवचन)

तथा

तुम्ह और **तुज्झ** भी होते हैं। (हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

अतिरिक्त रूप- नियम 36 के अनुसार

पंचमी बहुवचन 5/2

38. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति बहुवचन में **'तुब्भ, तुय्ह, उय्ह, उम्ह'** करके अन्त्य स्वर का दीर्घ किया जाता है और पंचमी बोधक **त्तो, ओ, उ, हि, हिन्तो** और **सुन्तो** प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग)-

तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भाहिन्तो, तुब्भासुन्तो
तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ, तुय्हाहि, तुय्हाहिन्तो,तुय्हासुन्तो
उय्हत्तो, उय्हाओ, उय्हाउ, उय्हाहि, उय्हाहिन्तो, उय्हासुन्तो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाउ, उम्हाहि, उम्हाहिन्तो, उम्हासुन्तो

(पंचमी बहुवचन)

तथा

तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहि, तुम्हाहिन्तो, तुम्हासुन्तो
तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झाहिन्तो, तुज्झासुन्तो
भी होते हैं। (हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

नोट– दीर्घ स्वर के आगे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

षष्ठी एकवचन 6/1

39. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के षष्ठी विभक्ति एकवचन में **'तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह** होते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) -

तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह (षष्ठी एकवचन)

तथा

तुम्ह, तुज्झ, उम्ह, उज्झ भी होते हैं। (हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

षष्ठी बहुवचन 6/2

40. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में **'तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भं, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण'** होते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) -

तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भं, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण (षष्ठी बहुवचन)

तथा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तुम्ह, तुम्हं, तुज्झ, तुज्झं, तुम्हाण, तुम्हाणं, तुज्झाण, तुज्झाणं, तुब्भाणं, तुवाणं, तुमाणं, तुहाणं, उम्हाणं भी होते हैं।

(हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

सप्तमी एकवचन 7/1

41. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए'** होते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए**

सप्तमी एकवचन 7/1

42. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'तु, तुव, तुम, तुह, तुब्भ'** करके **म्मि, स्सिं** और **त्थ** प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तुम्मि, तुस्सिं, तुत्थ**
तुवम्मि, तुवस्सिं, तुवत्थ
तुमम्मि, तुमस्सिं, तुमत्थ
तुहम्मि, तुहस्सिं, तुहत्थ
तुब्भम्मि, तुब्भस्सिं, तुब्भत्थ

(सप्तमी एकवचन)

तथा

तुम्ह और **तुज्झ** करके **म्मि, स्सिं** और **त्थ** प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

तुम्हम्मि, तुम्हस्सिं, तुम्हत्थ
तुज्झम्मि, तुज्झस्सिं, तुज्झत्थ

(हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सप्तमी बहुवचन 7/2

43. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति बहुवचन में '**तु, तुव, तुम, तुह, तुब्भ**' करके **सु** और **सुं** प्रत्यय जोड़े जाते हैं तथा अन्त्य **अ** का **ए** हो जाता है।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) -**तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु, तुवेसुं, तुमेसुं, तुहेसुं, तुब्भेसुं** (सप्तमी बहुवचन)

तथा

तुम्हेसु, तुज्झेसु, तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, तुम्हसु, तुज्झसु, तुब्भासु, तुम्हासु, तुज्झासु भी होते हैं। (हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

तुवसुं, तुमसुं, तुहसुं, तुब्भसुं, तुम्हसुं, तुज्झसुं, तुम्हेसुं, तुज्झेसुं भी होते हैं। (1/27)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुरुषवाचक सर्वनाम

अम्ह (मैं) (तीनों लिंगों में)

प्रथमा एकवचन 1/1

44. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **'म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं'** होते हैं।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं**

(प्रथमा एकवचन)

प्रथमा बहुवचन 1/2

45. प्राकृत भाषा में पुल्लिग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति बहुवचन में **'अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे'** होते हैं।

अम्ह (मैं)(तीनों लिंग)-**अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे**

(प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया एकवचन 2/1

46. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के द्वितीया विभक्ति एकवचन में **'णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिमं, अहं'** होते हैं।

अम्ह (मैं.) (तीनों लिंग)- **णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिमं, अहं** (द्वितीया एकवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

47. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे'** होते हैं।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग)- **अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे** (द्वितीया बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तृतीया एकवचन 3/1

48. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के तृतीया विभक्ति एकवचन में **'मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ, णे'** होते हैं।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ, णे** (तृतीया एकवचन)

तृतीया बहुवचन 3/2

49. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के तृतीया विभक्ति बहुवचन में **'अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे'** होते हैं।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग)- **अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे** (तृतीया बहुवचन)

पंचमी एकवचन 5/1

50. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति एकवचन में **'मइ, मम, मह, मज्झ'** के अन्त्य स्वर का दीर्घ करके पंचमी बोधक **त्तो, ओ, उ, हि, हिन्तो** और **शून्य** प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग)-

मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो

ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिन्तो, ममा

महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिन्तो, महा

मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिन्तो, मज्झा

(पंचमी एकवचन)

नोट– दीर्घ स्वर के आगे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पंचमी बहुवचन 5/2

51. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति बहुवचन में '**मम** और **अम्ह**' करके पंचमी बोधक **त्तो, ओ, उ, हि, हिन्तो** और **सुन्तो** प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग)- **ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिन्तो, ममासुन्तो**

अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ, अम्हाहि, अम्हाहिन्तो, अम्हासुन्तो

(पंचमी बहुवचन)

तथा

ममेहि, ममेहिन्तो, ममेसुन्तो, अम्हेहि, अम्हेहिन्तो, अम्हेसुन्तो भी होते हैं। (हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

नोट– दीर्घ स्वर के आगे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

षष्ठी एकवचन 6/1

52. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के षष्ठी विभक्ति एकवचन में '**मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं**' होते हैं।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं** (षष्ठी एकवचन)

षष्ठी बहुवचन 6/2

53. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में '**णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्झाण**' होते हैं।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्झाण** (षष्ठी बहुवचन)

तथा

अम्हाणं, ममाणं, महाणं, और **मज्झाणं** भी होते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सप्तमी एकवचन 7/1

54. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'मि, मइ, ममाइ, मए, मे'** होते हैं।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **मि, मइ, ममाइ, मए, मे** (सप्तमी एकवचन)

सप्तमी एकवचन 7/1

55. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'अम्ह, मम, मह, मज्झ'** करके **म्मि** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि** (सप्तमी एकवचन)

तथा

अम्हे, ममे, महे, मज्झे, अम्हस्सिं, अम्हत्थ, ममस्सिं, ममत्थ, महस्सिं, महत्थ, मज्झस्सिं, मज्झत्थ भी होते हैं।

(पिशल, प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, पृष्ठ-610)

सप्तमी बहुवचन 7/2

56. प्राकृत भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति बहुवचन में **'अम्ह, मम, मह, मज्झ'** करके सप्तमी बोधक **सु** और **सुं** प्रत्यय जोड़े जाते हैं तथा अन्त्य **अ** का **ए** हो जाता है।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु, अम्हेसुं, ममेसुं, महेसुं, मज्झेसुं** (सप्तमी बहुवचन)

तथा

अम्हसु, ममसु, महसु, मज्झसु, अम्हासु भी होते हैं।

(हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार)

अम्हसुं, ममसुं, महसुं, मज्झसुं, अम्हासुं भी होते हैं। (1/27)

❑❑❑

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-1

संज्ञा-शब्दरूप

यहाँ निम्नलिखित संज्ञा शब्दों की रूपावली दी जा रही है।

पुल्लिंग शब्द- देव, हरि, गामणी, साहु, सयंभू

नपुंसकलिंग शब्द- कमल, वारि, महु

स्त्रीलिंग शब्द- कहा, मइ, लच्छी, धेणु, बहू

नोटः अगले पृष्ठों में संज्ञा शब्दों की रूपावली दी जा रही है। प्राकृत भाषा, शौरसेनी भाषा, मागधी भाषा तथा पैशाची भाषा के संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की रूपावली आचार्य हेमचन्द्र रचित प्राकृत व्याकरण से तथा अर्धमागधी भाषा के संज्ञा शब्दों की रूपावली रिचार्ड पिशल द्वारा रचित प्राकृत भाषाओं के व्याकरण से ली गई है। शौरसेनी, मागधी तथा पैशाची भाषाओं के कुछ विभक्तियों के रूप जो आचार्य हेमचन्द्र ने नहीं दिये थे वे रिचार्ड पिशल द्वारा रचित प्राकृत भाषाओं के व्याकरण से भी लिये गये हैं।

प्राकृत भाषाओं का व्याकरण-रिचार्ड पिशल	**पृष्ठ संख्या**
1. अकारान्त पुल्लिंग व नपुंसकलिंग संज्ञा शब्द	515,516
2. आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द	538

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

3. इ-ईकारान्त व उ-ऊकारान्त पुल्लिंग व नपुंसकलिंग संज्ञा शब्द 544-546

4. इ-ईकारान्त व उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द 557-563

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त पुल्लिंग-देव (देव)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	देवो	देवो	**देवे**	देवो	देवे, देवो
द्वितीया	देवं	देवं	देवं	देवं	देवं, **देवे**
तृतीया	देवेण देवेणं	देवेण	देवेण	देवेण	देवेण देवेणं
चतुर्थी	देवाय, देवाअ देवस्स	देवाय	**देवाअ**	देवाय	**देवाए** **देवाय**
पंचमी	देवत्तो देवाओ देवाउ देवाहि देवाहिन्तो देवा	**देवादो** **देवादु**	**देवादो** **देवादु**	**देवातो** **देवातु**	देवाओ देवाउ देवा
षष्ठी	देवस्स	देवस्स	**देवश्श** **देवाह**	देवस्स	देवस्स
सप्तमी	देवे देवम्मि	देवे, देवम्मि **देवम्हि**	देवे **देवाहिं**	देवे	देवे, देवम्मि **देवंमि** **देवंसि**
सम्बोधन	हे देव हे देवा हे देवो	हे देव हे देवा हे देवो	हे देव **हे देवे**	हे देव हे देवा हे देवो	हे देव हे देवा हे देवो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त पुल्लिंग-देव (देव)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	देवा	देवा	देवा	देवा	देवा, **देवाओ**
द्वितीया	देवा, देवे	देवे	देवे	देवे	देवा, देवे
तृतीया	देवेहि, देवेहिं, देवेहिँ	देवेहिं	देवेहिं	देवेहिं	देवेहि, देवेहिं, देवेहिँ
चतुर्थी	देवाण देवाणं	देवाण देवाणं	देवाण देवाणं	देवाण देवाणं	देवाण देवाणं
पंचमी	देवत्तो देवाओ देव्राउ देवाहि देवाहिन्तो देवासुन्तो देवेहि देवेहिन्तो देवेसुन्तो	देवत्तो **देवादो** **देवादु** देवाहि देवाहिन्तो देवासुन्तो देवेहि देवेहिन्तो देवेसुन्तो	देवत्तो **देवादो** **देवादु** देवाहि देवाहिन्तो देवासुन्तो देवेहि देवेहिन्तो देवेसुन्तो	देवत्तो **देवादो** **देवादु** देवाहि देवाहिन्तो देवासुन्तो देवेहि देवेहिन्तो देवेसुन्तो	**देवेहिं** **देवेहिन्तो**
षष्ठी	देवाण देवाणं	देवाण देवाणं	देवाणं **देवाहँ**	देवाण देवाणं	देवाण देवाणं
सप्तमी	देवेसु देवेसुं	देवेसु देवेसुं	देवेसु देवेसुं	देवेसु देवेसुं	देवेसु देवेसुं
सम्बोधन	हे देवा	हे देवा	हे देवा **हे देवाहो**	हे देवा	हे देवा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इकारान्त पुल्लिंग-हरि (हरि)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	हरी	हरी	हली	हरी	हरी
द्वितीया	हरिं	हरिं	हलिं	हरिं	हरिं
तृतीया	हरिणा	हरिणा	हलिणा	हरिणा	हरिणा
चतुर्थी व षष्ठी	हरिणो हरिस्स	हरिणो	हलिणो	हरिणो	हरिणो हरिस्स
पंचमी	हरिणो हरित्तो हरीओ हरीउ हरीहिन्तो	**हरीदो** **हरीदु**	**हलीदो** **हलीदु**	**हरीदो** **हरीदु**	हरिणो हरित्तो हरीओ हरीउ हरीहिन्तो
सप्तमी	हरिम्मि	हरिम्मि **हरिम्हि**	हलिम्मि	हरिम्मि	हरिम्मि **हरिंमि** **हरिंसि**
सम्बोधन	हे हरि हे हरी	हे हरि हे हरी	हे हलि हे हली	हे हरि हे हरी	हे हरि हे हरी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इकारान्त पुल्लिंग-हरि (हरि)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	हरउ हरओ हरिणो हरी	हरिणो हरओ	हलिणो हलओ	हरिणो हरओ	हरउ हरओ हरिणो हरी हरीओ
द्वितीया	हरिणो हरी	हरिणो हरी	हलिणो हली	हरिणो हरी	हरिणो हरी **हरओ**
तृतीया	हरीहि हरीहिं हरीहिँ	हरीहिं	हलीहिं	हरीहिं	हरीहि हरीहिं हरीहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	हरीण हरीणं	हरीणं	हलीणं	हरीणं	हरीण हरीणं
पंचमी	हरित्तो हरीओ हरीउ हरीहिन्तो हरीसुन्तो	हरित्तो **हरीदो** **हरीदु** हरीहिन्तो हरीसुन्तो	हलित्तो **हलीदो** **हलीदु** हलीहिन्तो हलीसुन्तो	हरित्तो **हरीदो** **हरीदु** हरीहिन्तो हरीसुन्तो	हरित्तो हरीओ हरीउ **हरीहिन्तो** हरीसुन्तो
सप्तमी	हरीसु हरीसुं	हरीसु हरीसुं	हलीसु हलीसुं	हरीसु हरीसुं	हरीसु हरीसुं
सम्बोधन	हे हरउ हे हरओ हे हरिणो हे हरी	हे हरउ हे हरओ हे हरिणो हे हरी	हे हलउ हे हलओ हे हलिणो हे हली	हे हरउ हे हरओ हे हरिणो हे हरी	हे हरउ हे हरओ हे हरिणो हे हरी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ईकारान्त पुल्लिंग–गामणी (गाँव का मुखिया)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	गामणी	गामणी	गामणी	गामणी	गामणी
द्वितीया	गामणिं	गामणिं	गामणिं	गामणिं	गामणिं
तृतीया	गामणिणा	गामणिणा	गामणिणा	गामणिणा	गामणिणा
चतुर्थी व षष्ठी	गामणिणो गामणिस्स	गामणिणो	गामणिणो	गामणिणो	गामणिणो गामणिस्स
पंचमी	गामणिणो गामणित्तो गामणीओ गामणीउ गामणीहिन्तो	**गामणीदो** **गामणीदु**	**गामणीदो** **गामणीदु**	**गामणीदो** **गामणीदु**	गामणिणो गामणित्तो गामणीओ गामणीउ गामणीहिन्तो
सप्तमी	गामणिम्मि	गामणिम्मि **गामणिम्हि**	गामणिम्मि	गामणिम्मि	गामणिम्मि **गामणिंमि** **गामणिंसि**
सम्बोधन	हे गामणि	हे गामणि	हे गामणि	हे गामणि	हे गामणि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ईकारान्त पुल्लिंग–गामणी (गाँव का मुखिया)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	गामणउ गामणओ गामणिणो गामणी	गामणिणो गामणओ	गामणिणो गामणओ	गामणिणो गामणओ	गामणउ गामणओ गामणिणो गामणी **गामणीओ**
द्वितीया	गामणिणो गामणी	गामणिणो गामणी	गामणिणो गामणी	गामणिणो गामणी	गामणिणो गामणी गामणओ
तृतीया	गामणीहि गामणीहिं गामणीहिं	गामणीहिं	गामणीहिं	गामणीहिं	गामणीहि गामणीहिं गामणीहिं
चतुर्थी व षष्ठी	गामणीण गामणीणं	गामणीणं	गामणीणं	गामणीणं	गामणीण गामणीणं
पंचमी	गामणित्तो गामणीओ गामणीउ गामणीहिन्तो गामणींसुन्तो	गामणित्तो **गामणीदो** **गामणीदु** गामणीहिन्तो गामणीसुन्तो	गामणित्तो **गामणीदो** **गामणीदु** गामणीहिन्तो गामणीसुन्तो	गामणित्तो **गामणीदो** **गामणीदु** गामणीहिन्तो गामणीसुन्तो	गामणित्तो गामणीओ गामणीउ गामणीहिन्तो गामणीसुन्तो
सप्तमी	गामणीसु गामणीसुं	गामणीसु गामणीसुं	गामणीसु गामणीसुं	गामणीसु गामणीसुं	गामणीसु गामणीसुं
सम्बोधन	हे गामणउ हे गामणओ हे गामणिणो हे गामणी	हे गामणउ हे गामणओ हे गामणिणो हे गामणी	हे गामणउ हे गामणओ हे गामणिणो हे गामणी	हे गामणउ हे गामणओ हे गामणिणो हे गामणी	हे गामणउ हे गामणओ हे गामणिणो हे गामणी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उकारान्त पुल्लिंग–साहु (साधू)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	साहू	साहू	साहू	साहू	साहू
द्वितीया	साहुं	साहुं	साहुं	साहुं	साहुं
तृतीया	साहुणा	साहुणा	साहुणा	साहुणा	साहुणा
चतुर्थी व षष्ठी	साहुणो साहुस्स	साहुणो	साहुणो **साहुश्श**	साहुणो	साहुणो साहुस्स
पंचमी	साहुणो साहुत्तो साहूओ साहूउ साहूहिन्तो	**साहूदो** **साहूदु**	**साहूदो** **साहूदु**	**साहूदो** **साहूदु**	साहुणो साहुत्तो साहूओ साहूउ साहूहिन्तो
सप्तमी	साहुम्मि	साहुम्मि **साहुम्हि**	साहुम्मि	साहुम्मि	साहुम्मि **साहुंमि** **साहुंसि**
सम्बोधन	हे साहु हे साहू	हे साहु हे साहू	हे साहु हे साहू	हे साहु हे साहू	हे साहु हे साहू

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उकारान्त पुल्लिंग-साहु (साधू)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	साहउ, साहओ, साहुणो साहवो साहू	साहुणो साहओ	साहुणो साहओ	साहुणो साहओ	साहउ, साहओ, साहुणो साहवो साहू **साहूओ**
द्वितीया	साहुणो साहू	साहुणो साहू	साहुणो साहू	साहुणो साहू	साहुणो साहू **साहवो**
तृतीया	साहूहि साहूहिं साहूहिँ	साहूहिं	साहूहिं	साहूहिं	साहूहि साहूहिं साहूहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	साहूण साहूणं	साहूणं	साहूणं	साहूणं	साहूण साहूणं
पंचमी	साहुत्तो साहूओ साहूउ साहूहिन्तो साहूसुन्तो	साहुत्तो **साहूदो** **साहदु** साहूहिन्तो साहूसुन्तो	साहुत्तो **साहूदो** **साहदु** साहूहिन्तो साहूसुन्तो	साहुत्तो **साहूदो** **साहदु** साहूहिन्तो साहूसुन्तो	साहुत्तो साहूओ साहूउ साहूहिन्तो साहूसुन्तो **साहूहिं**
सप्तमी	साहूसु साहूसुं	साहूसु साहूसुं	साहूसु साहूसुं	साहूसु साहूसुं	साहूसु साहूसुं
सम्बोधन	हे साहउ हे साहओ हे साहुणो हे साहवो हे साहू	हे साहउ हे साहओ हे साहुणो हे साहवो हे साहू	हे साहउ हे साहओ हे साहुणो हे साहवो हे साहू	हे साहउ हे साहओ हे साहुणो हे साहवो हे साहू	**हे साहवो**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ऊकारान्त पुल्लिंग-सयंभू (सर्वज्ञ)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	सयंभू	सयंभू	सयंभू	सयंभू	सयंभू
द्वितीया	सयंभुं	सयंभुं	सयंभुं	सयंभुं	सयंभुं
तृतीया	सयंभुणा	सयंभुणा	सयंभुणा	सयंभुणा	सयंभुणा
चतुर्थी व षष्ठी	सयंभुणो सयंभुस्स	सयंभुणो	सयंभुणो **सयंभुश्श**	सयंभुणो	सयंभुणो सयंभुस्स
पंचमी	सयंभुणो सयंभुत्तो सयंभूओ सयंभूउ सयंभूहिन्तो	**सयंभूदो** **सयंभूदु**	**सयंभूदो** **सयंभूदु**	**सयंभूदो** **सयंभूदु**	सयंभुणो सयंभुत्तो सयंभूओ सयंभूउ सयंभूहिन्तो
सप्तमी	सयंभुम्मि	सयंभुम्मि **सयंभुम्हि**	सयंभुम्मि	सयंभुम्मि	सयंभुम्मि **सयंभुंमि** **सयंभुंसि**
सम्बोधन	हे सयंभु	हे सयंभु	हे सयंभु	हे सयंभु	हे सयंभु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ऊकारान्त पुल्लिंग-सयंभू (सर्वज्ञ)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	सयंभउ, सयंभओ सयंभुणो, सयंभवो सयंभू	सयंभुणो सयंभओ	सयंभुणो सयंभओ	सयंभुणो सयंभओ	सयंभउ,सयंभओ सयंभुणो, सयंभवो, सयंभू
द्वितीया	सयंभुणो सयंभू	सयंभुणो सयंभू	सयंभुणो सयंभू	सयंभुणो सयंभू	सयंभुणो सयंभू **सयंभवो**
तृतीया	सयंभूहि सयंभूहिं सयंभूहिँ	सयंभूहिं	सयंभूहिं	सयंभूहिं	सयंभूहि सयंभूहिं सयंभूहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	सयंभूण सयंभूणं	सयंभूणं	सयंभूणं	सयंभूणं	सयंभूण सयंभूणं
पंचमी	सयंभुत्तो सयंभूओ सयंभूउ सयंभूहिन्तो सयंभूसुन्तो	सयंभुत्तो **सयंभूदो** **सयंभूदु** सयंभूहिन्तो सयंभूसुन्तो	सयंभुत्तो **सयंभूदो** **सयंभूदु** सयंभूहिन्तो सयंभूसुन्तो	सयंभुत्तो **सयंभूदो** **सयंभूदु** सयंभूहिन्तो सयंभूसुन्तो	सयंभुत्तो सयंभूओ सयंभूउ सयंभूहिन्तो सयंभूसुन्तो **सयंभूहिं**
सप्तमी	सयंभूसु सयंभूसुं	सयंभूसु सयंभूसुं	सयंभूसु सयंभूसुं	सयंभूसु सयंभूसुं	सयंभूसु सयंभूसुं
सम्बोधन	हे सयंभउ हे सयंभओ हे सयंभुणो हे सयंभवो हे सयंभू	हे सयंभउ हे सयंभओ हे सयंभुणो हे सयंभवो हे सयंभू	हे सयंभउ हे सयंभओ हे सयंभुणो हे सयंभवो हे सयंभू	हे सयंभउ हे सयंभओ हे सयंभुणो हे सयंभवो हे सयंभू	**हे सयंभवो**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त नपुंसकलिंग–कमल (कमल का फूल)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	कमलं	कमलं	कमलं	कमलं	कमलं
द्वितीया	कमलं	कमलं	कमलं	कमलं	कमलं
तृतीया	कमलेण कमलेणं	कमलेण	कमलेण	कमलेण	कमलेण कमलेणं
चतुर्थी	कमलाय कमलस्स	कमलाय	कमलाअ	कमलाय	**कमलाए** **कमलाय**
पंचमी	कमलत्तो कमलाओ कमलाउ कमलाहि कमलाहिन्तो कमला	**कमलादो** **कमलादु**	**कमलादो** **कमलादु**	**कमलातो** **कमलातु**	कमलाओ कमलाउ कमला
षष्ठी	कमलस्स	कमलस्स	**कमलशश** **कमलाह**	कमलस्स	कमलस्स
सप्तमी	कमले कमलम्मि	कमले **कमलम्हि**	कमले **कमलाहिं**	कमले	कमले,कमलम्मि **कमलंमि** **कमलंसि**
सम्बोधन	हे कमल	हे कमल	हे कमल	हे कमल	हे कमल

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त नपुंसकलिंग-कमल (कमल का फूल)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	कमलाइं कमलाइँ कमलाणि	कमलाइँ	कमलाइँ	कमलाइँ	कमलाइं,कमलाइँ कमलाणि, **कमला**
द्वितीया	कमलाइं कमलाइँ कमलाणि	कमलाइँ	कमलाइँ	कमलाइँ	कमलाइं,कमलाइँ कमलाणि, **कमला**
तृतीया	कमलेहि कमलेहिं कमलेहिँ	कमलेहिं	कमलेहिं	कमलेहिं	कमलेहिं कमलेहिं कमलेहिँ
चतुर्थी	कमलाण कमलाणं	कमलाण कमलाणं	कमलाण कमलाणं	कमलाण कमलाणं	कमलाण कमलाणं
पंचमी	कमलत्तो कमलाओ कमलाउ कमलाहि कमलाहिन्तो कमलासुन्तो कमलेहि कमलेहिन्तो कमलेसुन्तो	कमलत्तो **कमलादो** **कमलादु** कमलाहि कमलाहिन्तो कमलासुन्तो कमलेहि कमलेहिन्तो कमलेसुन्तो	कमलत्तो **कमलादो** **कमलादु** कमलाहि कमलाहिन्तो कमलासुन्तो कमलेहि कमलेहिन्तो कमलेसुन्तो	कमलत्तो **कमलादो** **कमलादु** कमलाहि कमलाहिन्तो कमलासुन्तो कमलेहि कमलेहिन्तो कमलेसुन्तो	**कमलेहिं** कमलेहिन्तो
षष्ठी	कमलाण कमलाणं	कमलाण कमलाणं	कमलाण **कमलाहँ**	कमलाण कमलाणं	कमलाण कमलाणं
सप्तमी	कमलेसु कमलेसुं	कमलेसु कमलेसुं	कमलेसु कमलेसुं	कमलेसु कमलेसुं	कमलेसु कमलेसुं
सम्बोधन	हे कमलाइं, हे कमलाइँ हे कमलाणि	हे कमलाइँ	हे कमलाइँ	हे कमलाइँ	हे कमलाइं, हे कमलाइँ हे कमलाणि **हे कमला**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इकारान्त नपुंसकलिंग–वारि (जल)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	वारिं	वारिं वारि	वालिं वालि	वारिं वारि	वारिं वारि वारिँ
द्वितीया	वारिं वारि वारिँ	वारिं वारि	वालिं वालि	वारिं वारि	वारिं वारि वारिँ
तृतीया	वारिणा	वारिणा	वालिणा	वारिणा	वारिणा
चतुर्थी व षष्ठी	वारिणो वारिस्स	वारिणो	वारिणो वालिश्श	वारिणो	वारिणो वारिस्स
पंचमी	वारिणो वारित्तो वारीओ वारीउ वारीहिन्तो	**वारीदो** **वारीदु**	**वालीदो** **वालीदु**	**वारीदो** **वारीदु**	वारिणो वारित्तो वारीओ वारीउ वारीहिन्तो
सप्तमी	वारिम्मि	वारिम्मि **वारिम्हि**	वालिम्मि	वारिम्मि	वारिम्मि **वारिंमि** **वारिंसि**
सम्बोधन	हे वारि	हे वारि	हे वालि	हे वारि	हे वारि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इकारान्त नपुंसकलिंग–वारि (जल)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	वारीइं वारीइँ वारीणि	वारीइं वारीइँ वारीणि	वालीइं वालीइँ वालीणि	वारीइं वारीइँ वारीणि	वारीइं वारीइँ वारीणि **वारी**
द्वितीया	वारीइं वारीइँ वारीणि	वारीइं वारीइँ वारीणि	वालीइं वालीइँ वालीणि	वारीइं वारीइँ वारीणि	वारीइं वारीइँ वारीणि **वारी**
तृतीया	वारीहि वारीहिं वारीहिँ	वारीहिं	वालीहिं	वारीहिं	वारीहि वारीहिं वारीहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	वारीण वारीणं	वारीणं	वालीणं	वारीणं	वारीण वारीणं
पंचमी	वारित्तो वारीओ वारीउ वारीहिन्तो वारीसुन्तो	वारित्तो **वारीदो** **वारीदु** वारीहिन्तो वारीसुन्तो	वालित्तो **वालीदो** **वालीदु** वालीहिन्तो वालीसुन्तो	वारित्तो **वारीदो** **वारीदु** वारीहिन्तो वारीसुन्तो	वारित्तो वारीओ वारीउ **वारीहिन्तो** वारीसुन्तो
सप्तमी	वारीसु वारीसुं	वारीसु वारीसुं	वालीसु वालीसुं	वारीसु वारीसुं	वारीसु वारीसुं
सम्बोधन	हे वारीइं हे वारीइँ हे वारीणि	हे वारीइं हे वारीइँ हे वारीणि	हे वालीइं हे वालीइँ हे वालीणि	हे वारीइं हे वारीइँ हे वारीणि	हे वारीइं हे वारीइँ हे वारीणि **हे वारी**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उकारान्त नपुंसकलिंग–महु (मधु)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	महुं	महुं महु	महुं महु	महुं महु	महुं महु महुँ
द्वितीया	महुं महु महुँ	महुं महु	महुं महु	महुं महु	महुं महु महुँ
तृतीया	महुणा	महुणा	महुणा	महुणा	महुणा
चतुर्थी व षष्ठी	महुणो महुस्स	महुणो	महुणो	महुणो **महुश्श**	महुणो महुस्स
पंचमी	महुणो महुत्तो महूओ महूउ महूहिन्तो	**महूदो** **महूदु**	**महूदो** **महूदु**	**महूदो** **महूदु**	महुणो महुत्तो महूओ महूउ महूहिन्तो
सप्तमी	महुम्मि	महुम्मि **महुम्हि**	महुम्मि	महुम्मि	महुम्मि **महुंमि** **महुंसि**
सम्बोधन	हे महु	हे महु	हे महु	हे महु	हे महु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उकारान्त नपुंसकलिंग–महु (मधु)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	महूइं महूईँ महूणि	महूइं महूईँ महूणि	महूइं महूईँ महूणि	महूइं महूईँ महूणि	महूइं महूईँ महूणि **महू**
द्वितीया	महूइं महूईँ महूणि	महूइं महूईँ महूणि	महूइं महूईँ महूणि	महूइं महूईँ महूणि	महूइं महूईँ महूणि **महू**
तृतीया	महूहि महूहिं महूहिँ	महूहिं	महूहिं	महूहिं	महूहि महूहिं महूहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	महूण महूणं	महूणं	महूणं	महूणं	महूण महूणं
पंचमी	महुणो महुत्तो महूओ महूउ महूहिन्तो महूसुन्तो	महुणो महुत्तो **महूदो** **महूदु** महूहिन्तो महूसुन्तो	महुणो महुत्तो **महूदो** **महूदु** महूहिन्तो महूसुन्तो	महुणो महुत्तो **महूदो** **महूदु** महूहिन्तो महूसुन्तो	महुणो महुत्तो महूओ महूउ महूहिन्तो महूसुन्तो **महूहिं**
सप्तमी	महूसु महूसुं	महूसु महूसुं	महूसु महूसुं	महूसु महूसुं	महूसु महूसुं
सम्बोधन	हे महूइं हे महूईँ हे महूणि	हे महूइं हे महूईँ हे महूणि	हे महूइं हे महूईँ हे महूणि	हे महूइं हे महूईँ हे महूणि	हे महूइं हे महूईँ हे महूणि **हे महू**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग–कहा (कथा)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	कहा	कहा	कहा	कहा	कहा
द्वितीया	कहं	कहं	कहं	कहं	कहं
तृतीया	कहाअ कहाइ कहाए	कहाए	कहाए	कहाए	कहाए
चतुर्थी व षष्ठी	कहाअ, कहाइ कहाए	कहाए	कहाए	कहाए	कहाए
पंचमी	कहाअ, कहाइ कहाए कहत्तो कहाओ कहाउ कहाहिन्तो	**कहादो** **कहादु** **कहाए**	**कहादो** **कहादु** **कहाए**	**कहादो** **कहादु** **कहाए**	कहाअ कहाइ कहत्तो कहाओ कहाउ कहाहिन्तो
सप्तमी	कहाअ, कहाइ कहाए	कहाए	कहाए	कहाए	कहाए
सम्बोधन	हे कहा हे कहे	हे कहा हे कहे	हे कहा हे कहे	हे कहा हे कहे	हे कहा हे कहे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग-कहा (कथा)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	कहा कहाओ कहाउ	कहा कहाओ	कहा कहाओ	कहा कहाओ	कहा कहाओ कहाउ
द्वितीया	कहा कहाओ कहाउ	कहा कहाओ	कहा कहाओ	कहा कहाओ	कहा कहाओ कहाउ
तृतीया	कहाहि कहाहिं कहाहिँ	कहाहिं	कहाहिं	कहाहिं	कहाहि कहाहिं कहाहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	कहाण कहाणं	कहाणं	कहाणं	कहाणं	कहाण कहाणं
पंचमी	कहत्तो कहाओ कहाउ कहाहिन्तो कहासुन्तो	कहत्तो **कहादो** **कहादु** कहाहिन्तो कहासुन्तो	कहत्तो **कहादो** **कहादु** कहाहिन्तो कहासुन्तो	कहत्तो **कहादो** **कहादु** कहाहिन्तो कहासुन्तो	कहत्तो कहाओ कहाउ कहाहिन्तो कहासुन्तो
सप्तमी	कहासु कहासुं	कहासु कहासुं	कहासु कहासुं	कहासु कहासुं	कहासु कहासुं
सम्बोधन	हे कहा हे कहाओ हे कहाउ	हे कहा हे कहाओ	हे कहा हे कहाओ	हे कहा हे कहाओ	हे कहा हे कहाओ हे कहाउ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इकारान्त स्त्रीलिंग-मइ (मति)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	मई	मई	मई	मई	मई
द्वितीया	मइं	मइं	मइं	मइं	मइं
तृतीया	मईअ, मईआ मईइ, मईए	मईअ, मईआ मईइ, मईए	मईअ,मईआ मईइ, मईए	मईअ, मईआ मईइ, मईए	मईअ, मईआ मईइ, मईए
चतुर्थी व षष्ठी	मईअ, मईआ मईइ, मईए	मईअ, मईआ मईइ, मईए	मईअ,मईआ मईइ, मईए	मईअ,मईआ मईइ, मईए	मईअ, मईआ मईइ, मईए
पंचमी	मईअ, मईआ मईइ, मईए मइत्तो मईओ मईउ मईहिन्तो	**मईदो** **मईदु**	**मईदो** **मईदु**	**मईदो** **मईदु**	मईअ, मईआ मईइ, मईए मइत्तो मईओ मईउ मईहिन्तो
सप्तमी	मईअ, मईआ मईइ, मईए	मईअ, मईआ मईइ, मईए	मईअ,मईआ मईइ, मईए	मईअ,मईआ मईइ, मईए	मईअ, मईआ मईइ, मईए
सम्बोधन	हे मइ हे मई	हे मइ हे मई	हे मइ हे मई	हे मइ हे मई	हे मइ हे मई

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इकारान्त स्त्रीलिंग–मइ (मति)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	मई मईओ मईउ	मई मईओ	मई मईओ	मई मईओ	मई मईओ मईउ
द्वितीया	मई मईओ मईउ	मई मईओ	मई मईओ	मई मईओ	मई मईओ मईउ
तृतीया	मईहि मईहिं मईहिँ	मईहिं	मईहिं	मईहिं	मईहि मईहिं मईहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	मईण मईणं	मईणं	मईणं	मईणं	मईण मईणं
पंचमी	मइत्तो मईओ मईउ मईहिन्तो मईसुन्तो	मइत्तो **मईदो** **मईदु** मईहिन्तो मईसुन्तो	मइत्तो **मईदो** **मईदु** मईहिन्तो मईसुन्तो	मइत्तो **मईदो** **मईदु** मईहिन्तो मईसुन्तो	मइत्तो मईओ मईउ मईहिन्तो मईसुन्तो
सप्तमी	मईसु मईसुं	मईसु मईसुं	मईसु मईसुं	मईसु मईसुं	मईसु मईसुं
सम्बोधन	हे मई हे मईओ हे मईउ	हे मई हे मईओ	हे मई हे मईओ	हे मई हे मईओ	हे मई हे मईओ हे मईउ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ईकारान्त स्त्रीलिंग–लच्छी (लक्ष्मी)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	लच्छी	लच्छी	लच्छी	लच्छी	लच्छी
	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ
द्वितीया	लच्छिं	लच्छिं	लच्छिं	लच्छिं	लच्छिं
तृतीया	लच्छीअ	लच्छीअ	लच्छीअ	लच्छीअ	लच्छीअ
	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ
	लच्छीइ	लच्छीइ	लच्छीइ	लच्छीइ	लच्छीइ
	लच्छीए	लच्छीए	लच्छीए	लच्छीए	लच्छीए
चतुर्थी	लच्छीअ	लच्छीअ	लच्छीअ	लच्छीअ	लच्छीअ
व षष्ठी	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ
	लच्छीइ	लच्छीइ	लच्छीइ	लच्छीइ	लच्छीइ
	लच्छीए	लच्छीए	लच्छीए	लच्छीए	लच्छीए
पंचमी	लच्छीअ	**लच्छीदो**	**लच्छीदो**	**लच्छीदो**	लच्छीअ
	लच्छीआ	**लच्छीदु**	**लच्छीदु**	**लच्छीदु**	लच्छीआ
	लच्छीइ	**लच्छीए**	**लच्छीए**	**लच्छीए**	लच्छीइ
	लच्छीए				लच्छीए
	लच्छित्तो				लच्छित्तो
	लच्छीओ				लच्छीओ
	लच्छीउ				लच्छीउ
	लच्छीहिन्तो				लच्छीहिन्तो
सप्तमी	लच्छीअ	लच्छीअ	लच्छीअ	लच्छीअ	लच्छीअ
	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ	लच्छीआ
	लच्छीइ	लच्छीइ	लच्छीइ	लच्छीइ	लच्छीइ
	लच्छीए	लच्छीए	लच्छीए	लच्छीए	लच्छीए
सम्बोधन	हे लच्छि	हे लच्छि	हे लच्छि	हे लच्छि	हे लच्छि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ईकारान्त स्त्रीलिंग-लच्छी (लक्ष्मी)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	लच्छीओ लच्छीआ लच्छी, लच्छीउ	लच्छीओ लच्छीआ लच्छी	लच्छीओ लच्छीआ लच्छी	लच्छीओ लच्छीआ लच्छी	लच्छीओ लच्छीआ लच्छी, लच्छीउ
द्वितीया	लच्छीओ लच्छीआ लच्छी, लच्छीउ	लच्छीओ लच्छीआ लच्छी	लच्छीओ लच्छीआ लच्छी	लच्छीओ लच्छीआ लच्छी	लच्छीओ लच्छीआ लच्छी, लच्छीउ
तृतीया	लच्छीहि लच्छीहिं लच्छीहिँ	लच्छीहिं	लच्छीहिं	लच्छीहिं	लच्छीहि लच्छीहिं लच्छीहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	लच्छीण लच्छीणं	लच्छीणं	लच्छीणं	लच्छीणं	लच्छीण लच्छीणं
पंचमी	लच्छित्तो लच्छीओ लच्छीउ लच्छीहिन्तो लच्छीसुन्तो	लच्छित्तो **लच्छीदो** **लच्छीदु** लच्छीहिन्तो लच्छीसुन्तो	लच्छित्तो **लच्छीदो** **लच्छीदु** लच्छीहिन्तो लच्छीसुन्तो	लच्छित्तो **लच्छीदो** **लच्छीदु** लच्छीहिन्तो लच्छीसुन्तो	लच्छित्तो लच्छीओ लच्छीउ लच्छीहिन्तो लच्छीसुन्तो
सप्तमी	लच्छीसु लच्छीसुं	लच्छीसु लच्छीसुं	लच्छीसु लच्छीसुं	लच्छीसु लच्छीसुं	लच्छीसु लच्छीसुं
सम्बोधन	हे लच्छी हे लच्छीओ हे लच्छीआ हे लच्छीउ	हे लच्छी हे लच्छीओ हे लच्छीआ	हे लच्छी हे लच्छीओ हे लच्छीआ	हे लच्छी हे लच्छीओ हे लच्छीआ	हे लच्छी हे लच्छीओ हे लच्छीआ हे लच्छीउ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उकारान्त स्त्रीलिंग–धेणु (गाय)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	धेणू	धेणू	धेणू	धेणू	धेणू
द्वितीया	धेणुं	धेणुं	धेणुं	धेणुं	धेणुं
तृतीया	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए
चतुर्थी व षष्ठी	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए
पंचमी	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए धेणुत्तो धेणूओ धेणूउ धेणूहिन्तो	**धेणूदो** **धेणूदु** **धेणूए**	**धेणूदो** **धेणूदु** **धेणूए**	**धेणूदो** **धेणूदु** **धेणूए**	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए धेणुत्तो धेणूओ धेणूउ धेणूहिन्तो
सप्तमी	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए	धेणूअ धेणूआ धेणूइ, धेणूए
सम्बोधन	हे धेणु हे धेणू	हे धेणु हे धेणू	हे धेणु हे धेणू	हे धेणु हे धेणू	हे धेणु हे धेणू

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उकारान्त स्त्रीलिंग-धेणु (गाय)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	धेणूओ धेणू धेणूउ	धेणूओ धेणू	धेणूओ धेणू	धेणूओ धेणू	धेणूओ धेणू धेणूउ
द्वितीया	धेणूओ धेणू धेणूउ	धेणूओ धेणू	धेणूओ धेणू	धेणूओ धेणू	धेणूओ धेणू धेणूउ
तृतीया	धेणूहि धेणूहिं धेणूहिँ	धेणूहिं	धेणूहिं	धेणूहिं	धेणूहि धेणूहिं धेणूहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	धेणूण धेणूणं	धेणूणं	धेणूणं	धेणूणं	धेणूण धेणूणं
पंचमी	धेणुत्तो धेणूओ धेणूउ धेणूहिन्तो धेणूसुन्तो	धेणुत्तो **धेणूदो** **धेणूदु** धेणूहिन्तो धेणूसुन्तो	धेणुत्तो **धेणूदो** **धेणूदु** धेणूहिन्तो धेणूसुन्तो	धेणुत्तो **धेणूदो** **धेणूदु** धेणूहिन्तो धेणूसुन्तो	धेणुत्तो धेणूओ धेणूउ धेणूहिन्तो धेणूसुन्तो
सप्तमी	धेणूसु धेणूसुं	धेणूसु धेणूसुं	धेणूसु धेणूसुं	धेणूसु धेणूसुं	धेणूसु धेणूसुं
सम्बोधन	हे धेणूओ हे धेणू हे धेणूउ	हे धेणूओ हे धेणू	हे धेणूओ हे धेणू	हे धेणूओ हे धेणू	हे धेणूओ हे धेणू हे धेणूउ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ऊकारान्त स्त्रीलिंग-बहू (बहू)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	बहू	बहू	बहू	बहू	बहू
द्वितीया	बहुं	बहुं	बहुं	बहुं	बहुं
तृतीया	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए
चतुर्थी व षष्ठी	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए
पंचमी	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए बहुत्तो बहूओ बहूउ बहूहिन्तो	**बहूदो** **बहूदु** **बहूए**	**बहूदो** **बहूदु** **बहूए**	**बहूदो** **बहूदु** **बहूए**	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए बहुत्तो बहूओ बहूउ बहूहिन्तो
सप्तमी	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए	बहूअ बहूआ बहूइ, बहूए
सम्बोधन	हे बहु	हे बहु	हे बहु	हे बहु	हे बहु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ऊकारान्त स्त्रीलिंग–बहू (बहू)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	बहूओ बहू बहूउ	बहूओ बहू	बहूओ बहू	बहूओ बहू	बहूओ बहू बहूउ
द्वितीया	बहूओ बहू बहूउ	बहूओ बहू	बहूओ बहू	बहूओ बहू	बहूओ बहू बहूउ
तृतीया	बहूहि बहूहिं बहूहिँ	बहूहिं	बहूहिं	बहूहिं	बहूहि बहूहिं बहूहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	बहूण बहूणं	बहूणं	बहूणं	बहूणं	बहूण बहूणं
पंचमी	बहुत्तो बहूओ बहूउ बहूहिन्तो बहूसुन्तो	बहुत्तो **बहूदो** **बहूदु** बहूहिन्तो बहूसुन्तो	बहुत्तो **बहूदो** **बहूदु** बहूहिन्तो बहूसुन्तो	बहुत्तो **बहूदो** **बहूदु** बहूहिन्तो बहूसुन्तो	बहुत्तो बहूओ बहूउ बहूहिन्तो बहूसुन्तो
सप्तमी	बहूसु बहूसुं	बहूसु बहूसुं	बहूसु बहूसुं	बहूसु बहूसुं	बहूसु बहूसुं
सम्बोधन	हे बहू हे बहूओ हे बहूउ	हे बहू हे बहूओ	हे बहू हे बहूओ	हे बहू हे बहूओ	हे बहू हे बहूओ हे बहूउ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-2

विशिष्ट शब्दरूप

यहाँ निम्नलिखित विशिष्ट शब्दों की रूपावली दी जा रही है।

विशिष्ट शब्द पुल्लिंग- पिउ (पिता) उकारान्त से भिन्न रूप
उकारान्त की तरह रूप
पिअर (पिता) अकारान्त की तरह रूप

विशिष्ट शब्द स्त्रीलिंग- माउ (माता) उकारान्त से भिन्न रूप
उकारान्त की तरह रूप
माइ (माता) इकारान्त की तरह रूप
माआ (माता) आकारान्त की तरह रूप
माअरा (माता) आकारान्त की तरह रूप

विशेषण- कत्तु (करनेवाला) उकारान्त से भिन्न रूप
उकारान्त की तरह रूप
कत्तार (करनेवाला)अकारान्त की तरह रूप

विशिष्ट शब्द पुल्लिंग-अप्प/अत्त (आत्मा) अकारान्त से भिन्न रूप
अप्प/अत्त (आत्मा) अकारान्त की तरह रूप
अप्पाण (आत्मा) अकारान्त की तरह रूप
अत्ताण (आत्मा) अकारान्त की तरह रूप

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विशिष्ट शब्द पुल्लिंग– राय/राअ (राजा) अकारान्त की तरह रूप

राय/राअ (राजा) अकारान्त से भिन्न रूप

रायाण (राजा) अकारान्त की तरह रूप

नोटः अगले पृष्ठों में विशिष्ट शब्दों की रूपावली दी जा रही है। प्राकृत भाषा, शौरसेनी भाषा, मागधी भाषा तथा पैशाची भाषा के विशिष्ट शब्दों की रूपावली आचार्य हेमचन्द्र रचित प्राकृत व्याकरण से तथा अर्धमागधी भाषा के विशिष्ट शब्दों की रूपावली रिचार्ड पिशल द्वारा रचित प्राकृत भाषाओं के व्याकरण से ली गई है। शौरसेनी, मागधी तथा पैशाची भाषाओं के कुछ विभक्तियों के रूप जो आचार्य हेमचन्द्र ने नहीं दिये थे वे रिचार्ड पिशल द्वारा रचित प्राकृत भाषाओं के व्याकरण से भी लिये गये हैं।

प्राकृत भाषाओं का व्याकरण–रिचार्ड पिशल	पृष्ठ संख्या
1. विशिष्ट शब्द - पिउ, माउ, माइ, माअरा, कत्तु	563-570
2. विशिष्ट शब्द- आत्मा, राज	580-586

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पिउ (पिता) (उकारान्त से भिन्न रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	पिआ, पिया	पिदा	पिदा	पिदा	पिया
द्वितीया	पिअरं, पियरं	पिदरं	पिदलं	पिदरं	पियरं

पिउ (पिता) (उकारान्त की तरह रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	-	-	-	-	-
द्वितीया	-	-	-	-	-
तृतीया	पिउणा	पिदुणा	पिदुणा	पिदुणा	पिउणा
चतुर्थी व षष्ठी	पिउस्स पिउणो	पिदुणो	**पिउश्श** पिदुणो	पिदुणो	पिउस्स पिउणो
पंचमी	पिउणो पिउत्तो पिऊओ पिऊउ पिऊहिन्तो	**पिऊदो** **पिऊदु**	**पिऊदो** **पिऊदु**	**पिऊदो** **पिऊदु**	पिउणो पिउत्तो पिऊओ पिऊउ पिऊहिन्तो
सप्तमी	पिउम्मि	पिउम्मि **पिउम्हि**	पिउम्मि	पिउम्मि	पिउम्मि **पिउंमि** **पिउंसि**
सम्बोधन	हे पिउ हे पिऊ	हे पिउ हे पिऊ	हे पिउ हे पिऊ	हे पिउ हे पिऊ	हे पिउ हे पिऊ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पिउ (पिता) (उकारान्त से भिन्न रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	-	-	-	-	-
द्वितीया	-	-	-	-	-

पिउ (पिता) (उकारान्त की तरह रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	पिअउ, पिअओ पिअवो, पिउणो पिऊ	पिउणो पिअओ	पिउणो पिअओ	पिउणो पिअओ	पिअउ, पिअओ पिअवो, पिउणो पिऊ
द्वितीया	पिउणो, पिऊ	पिउणो, पिऊ	पिउणो, पिऊ	पिउणो, पिऊ	पिउणो, पिऊ **पिअवो**
तृतीया	पिऊहि, पिऊहिं पिऊँहिं	पिऊहिं	पिऊहिं	पिऊहिं	पिऊहि, पिऊहिं पिऊहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	पिऊण पिऊणं	पिऊणं	पिऊणं	पिऊणं	पिऊण पिऊणं
पंचमी	पिउत्तो पिऊओ पिऊउ पिऊहिन्तो पिऊसुन्तो	**पिऊदो** **पिऊदु**	**पिऊदो** **पिऊदु**	**पिऊदो** **पिऊदु**	पिउत्तो पिऊओ पिऊउ पिऊहिन्तो पिऊसुन्तो
सप्तमी	पिऊसु पिऊसुं	पिऊसु पिऊसुं	पिऊसु पिऊसुं	पिऊसु पिऊसुं	पिऊसु पिऊसुं
सम्बोधन	हे पिअउ हे पिअओ हे पिअवो हे पिउणो, हे पिऊ	हे पिउणो हे पिअओ	हे पिउणो हे पिअओ	हे पिउणो हे पिअओ	**हे पिअवो**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त पुल्लिंग-पिअर (पिता)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	पिअरो	पिअरो	पिअलो पिअले	पिअरो	पिअरे, पिअरो
द्वितीया	पिअरं, पियरं	पिदरं	पिदलं	पिदरं	पियरं
तृतीया	पिअरेण पिअरेणं	पिअरेण	पिदलेण	पिअरेण	पिअरेण पिअरेणं
चतुर्थी	पिअराय पिअरस्स	पिअराय	पिअलाअ	पिअराय	पिअराए पिअराय
पंचमी	पिअरत्तो पिअराओ पिअराउ पिअराहि पिअराहिन्तो पिअरा	**पिअरादो** **पिअरादु**	**पिअलादो** **पिअलादु**	**पिअरातो** **पिअरातु**	पिअराओ पिअराउ पिअरा
षष्ठी	पिअरस्स	पिअरस्स	**पिअलश्श** **पिअलाह**	पिअरस्स	पिअरस्स
सप्तमी	पिअरे पिअरम्मि	पिअरे पिअरम्मि **पिअरम्हि**	पिअले	पिअरे	पिअरे,पिअरम्मि **पिअरंमि** **पिअरंसि**
सम्बोधन	हे पिअर हे पिअरा हे पिअरो	हे पिअर हे पिअरा हे पिअरो	हे पिअल हे पिअला हे पिअलो	हे पिअर हे पिअरा हे पिअरो	हे पिअर हे पिअरा हे पिअरो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त पुल्लिंग-पिअर (पिता)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	पिअरा	पिदरो	पिअलो	पिअरा	पियरो
द्वितीया	पिअरा, पिअरे	पिदरो, पिदरे	पिदलो,पिदले	पिदरो, पिदरे	पियरो
तृतीया	पिअरेहि पिअरेहिं पिअरेहिँ	पिअरेहिं	पिअलेहिं	पिअरेहिं	पिअरेहि पिअरेहिं पिअरेहिँ
चतुर्थी	पिअराण पिअराणं	पिअराण पिअराणं	पिअलाण पिअलाणं	पिअराण पिअराणं	पिअराण पिअराणं
पंचमी	पिअरत्तो पिअराओ पिअराउ पिअराहि पिअराहिन्तो पिअरासुन्तो पिअरेहि पिअरेहिन्तो पिअरेसुन्तो	पिअरत्तो पिअरादो पिअरादु पिअराहि पिअराहिन्तो पिअरासुन्तो	पिअलत्तो पिअलादो पिअलादु पिअलाहि पिअलाहिन्तो पिअलासुन्तो	पिअरत्तो पिअरादो पिअरादु पिअराहि पिअराहिन्तो पिअरासुन्तो	**पिअरेहिं** **पिअरेहिन्तो**
षष्ठी	पिअराण पिअराणं	पिअराण पिअराणं	पिअलाण पिअलाणं	पिअराण पिअराणं	पिअराण पिअराणं
सप्तमी	पिअरेसु पिअरेसुं	पिअरेसु पिअरेसुं	पिअलेसु पिअलेसुं	पिअरेसु पिअरेसुं	पिअरेसु पिअरेसुं
सम्बोधन	हे पिअरा	हे पिअरा	हे पिअला	हे पिअरा	हे पियरा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

माउ (माता) (उकारान्त से भिन्न रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	माआ, माया	मादा	मादा	मादा	माया
द्वितीया	माअरं, मायरं	मादरं	मादरं	मादरं	मायरं

माउ (माता) (उकारान्त की तरह रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	-	-	-	-	-
द्वितीया	-	-	-	-	-
तृतीया	माऊअ, माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए
चतुर्थी व षष्ठी	माऊअ, माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए
पंचमी	माऊअ, माऊआ माऊइ, माऊए माउत्तो माऊओ माऊउ माऊहिन्तो	**माऊदो** **माऊदु**	**माऊदो** **माऊदु**	**माऊदो** **माऊदु**	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए माउत्तो माऊओ माऊउ माऊहिन्तो
सप्तमी	माऊअ, माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ,माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए	माऊअ,माऊआ माऊइ, माऊए
सम्बोधन	हे माउ हे माऊ	हे माउ हे माऊ	हे माउ हे माऊ	हे माउ हे माऊ	हे माउ हे माऊ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

माउ (माता) (उकारान्त से भिन्न रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	-	-	-	-	-
द्वितीया	-	-	-	-	-

माउ (माता) (उकारान्त की तरह रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	माऊउ, माऊओ	माऊओ	माऊओ	माऊओ	माऊउ, माऊओ
	माऊ	माऊ	माऊ	माऊ	माऊ
द्वितीया	माऊउ, माऊओ	माऊओ	माऊओ	माऊओ	माऊउ, माऊओ
	माऊ	माऊ	माऊ	माऊ	माऊ
तृतीया	माऊहि	माऊहिं	माऊहिं	माऊहिं	माऊहि
	माऊहिं				माऊहिं
	माऊहिँ				माऊहिँ
चतुर्थी	माऊण	माऊणं	माऊणं	माऊणं	माऊण
व षष्ठी	माऊणं				माऊणं
पंचमी	माउत्तो	माउत्तो	माउत्तो	माउत्तो	माउत्तो
	माऊओ	**माऊदो**	**माऊदो**	**माऊदो**	माऊओ
	माऊउ	**माऊदु**	**माऊदु**	**माऊदु**	माऊउ
	माऊहिन्तो	माऊहिन्तो	माऊहिन्तो	माऊहिन्तो	माऊहिन्तो
	माऊसुन्तो	माऊसुन्तो	माऊसुन्तो	माऊसुन्तो	माऊसुन्तो
सप्तमी	माऊसु	माऊसु	माऊसु	माऊसु	माऊसु
	माऊसुं	माऊसुं	माऊसुं	माऊसुं	माऊसुं
सम्बोधन	हे माऊ, हे माऊउ	हे माऊ	हे माऊ	हे माऊ	हे माऊ, हे माऊउ
	हे माऊओ	हे माऊओ	हे माऊओ	हे माऊओ	हे माऊओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

माइ (माता) (इकारान्त की तरह रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	माई	माई	माई	माई	माई
द्वितीया	माइं	माइं	माइं	माइं	माइं
तृतीया	माईअ माईआ माईइ माईए	माईअ माईआ माईइ माईए	माईअ माईआ माईइ माईए	माईअ माईआ माईइ माईए	माईअ माईआ माईइ माईए
चतुर्थी व षष्ठी	माईअ माईआ माईइ माईए	माईअ माईआ माईइ माईए	माईअ माईआ माईइ माईए	माईअ माईआ माईइ माईए	माईअ माईआ माईइ माईए
पंचमी	माईअ माईआ माईइ माईए माइत्तो माईओ माईउ माईहिन्तो	**माईदो** **माईदु**	**माईदो** **माईदु**	**माईदो** **माईदु**	माईओ माईआ माईइ माईए माइत्तो माईओ माईउ माईहिन्तो
सप्तमी	माईअ माईआ माईइ, माईए	माईअ माईआ माईइ, माईए	माईअ माईआ माईइ, माईए	माईअ माईआ माईइ, माईए	माईआ माईआ माईइ, माईए
सम्बोधन	हे माइ हे माई	हे माइ हे माई	हे माइ हे माई	हे माइ हे माई	हे माइ हे माई

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

माइ (माता) (इकारान्त की तरह रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	माई माईओ माईउ	माई माईओ	माई माईओ	माई माईओ	माई माईओ माईउ
द्वितीया	माई माईओ माईउ	माई माईओ	माई माईओ	माई माईओ	माई माईओ माईउ
तृतीया	माईहि माईहिं माईहिँ	माईहिं	माईहिं	माईहिं	माईहि माईहिं माईहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	माईण माईणं	माईणं	माईणं	माईणं	माईण माईणं
पंचमी	माइत्तो माईओ माईउ माईहिन्तो माईसुन्तो	माइत्तो **माईदो** **माईदु** माईहिन्तो माईसुन्तो	माइत्तो **माईदो** **माईदु** माईहिन्तो माईसुन्तो	माइत्तो **माईदो** **माईदु** माईहिन्तो माईसुन्तो	माइत्तो माईओ माईउ माईहिन्तो माईसुन्तो
सप्तमी	माईसु माईसुं	माईसु माईसुं	माईसु माईसुं	माईसु माईसुं	माईसु माईसुं
सम्बोधन	हे माई, हे माईउ हे माईओ	हे माई हे माईओ	हे माई हे माईओ	हे माई हे माईओ	हे माई, हे माईउ हे माईओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग-माआ (माता)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	माआ	माआ	माआ	माआ	माआ
द्वितीया	माअं	माअं	माअं	माअं	माअं
तृतीया	माआअ माआइ माआए	माआए	माआए	माआए	माआए
चतुर्थी व षष्ठी	माआअ, मायाइ माआए	माआए	माआए	माआए	माआए
पंचमी	माआअ, माआइ माआए माअत्तो माआओ माआउ माआहिन्तो	**माआदो** **माआदु** **माआए**	**माआदो** **माआदु** **माआए**	**माआदो** **माआदु** **माआए**	माआअ माआइ माअत्तो माआओ माआउ माआहिन्तो
सप्तमी	माआअ,मायाइ माआए	माआए	माआए	माआए	माआए माआअ, माआइ
सम्बोधन	हे माआ हे माए	हे माआ हे माए	हे माआ हे माए	हे माआ हे माए	हे माआ हे माए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग-माआ (माता)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	माआ माआओ माआउ	माआ माआओ	माआ माआओ	माआ माआओ	माआ माआओ माआउ
द्वितीया	माआ माआओ माआउ	माआ माआओ	माआ माआओ	माआ माआओ	माआ माआओ माआउ
तृतीया	माआहि माआहिं माआहिँ	माआहिं	माआहिं	माआहिं	माआहि माआहिं माआहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	माआण माआणं	माआणं	माआणं	माआणं	माआण माआणं
पंचमी	माअत्तो माआओ माआउ माआहिन्तो माआसुन्तो	माअत्तो **माआदो** **माआदु** माआहिन्तो माआसुन्तो	माअत्तो **माआदो** **माआदु** माआहिन्तो माआसुन्तो	माअत्तो **माआदो** **माआदु** माआहिन्तो माआसुन्तो	माअत्तो माआओ माआउ माआहिन्तो माआसुन्तो
सप्तमी	माआसु माआसुं	माआसु माआसुं	माआसु माआसुं	माआसु माआसुं	माआसु माआसुं
सम्बोधन	हे माआ हे माआओ हे माआउ	हे माआ हे माआओ	हे माआ हे माआओ	हे माआ हे माआओ	हे माआ हे माआओ हे माआउ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग–माअरा (माता)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	माअरा	माअरा	माअला	माअरा	माअरा
द्वितीया	माअरं, मायरं	मादरं	मादलं	मादरं	मायरं
तृतीया	माअराअ माअराइ माअराए	माअराए	माअलाए	माअराए	माअराए
चतुर्थी व षष्ठी	माअराअ माअराइ माअराए	माअराए	माअलाए	माअराए	माअराए
पंचमी	माअराअ, माअराइ माअराए माअरत्तो माअराओ माअराउ माअराहिन्तो	**माअरादो** **माअरादु** **माअराए**	**माअलादो** **माअलादु** **माअलाए**	**माअरादो** **माअरादु** **माअराए**	माअराअ माअराइ माअरत्तो माअराओ माअराउ माअराहिन्तो
सप्तमी	माअराअ, माअराइ माअराए	माअराए	माअलाए	माअराए	माअराए
सम्बोधन	हे माअरा हे माअराए	हे माअरा हे माअराए	हे माअला हे माअलाए	हे माअरा हे माअराए	हे माअरा हे माअराए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग-माअरा (माता)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	माअरा माअराओ माअराउ	माअरा माअराओ	माअला माअलाओ	माअरा माअराओ	माअरा माअराओ माअराउ
द्वितीया	माअरा माअराओ माअराउ	माअरा माअराओ	माअला माअलाओ	माअरा माअराओ	माअरा माअराओ माअराउ
तृतीया	माअराहि माअराहिं माअराहिँ	माअराहिं	माअलाहिं	माअराहिं	माअराहि माअराहिं माअराहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	माअराण माअराणं	माअराणं	माअलाणं	माअराणं	माअराण माअराणं
पंचमी	माअरत्तो माअराओ माअराउ माअराहिन्तो माअरासुन्तो	माअरत्तो **माअरादो** **माअरादु** माअराहिन्तो माअरासुन्तो	माअलत्तो **माअलादो** **माअलादु** माअलाहिन्तो माअलासुन्तो	माअरत्तो **माअरादो** **माअरादु** माअराहिन्तो माअरासुन्तो	माअरत्तो माअराओ माअराउ माअराहिन्तो माअरासुन्तो
सप्तमी	माअरासु माअरासुं	माअरासु माअरासुं	माअलासु माअलासुं	माअरासु माअरासुं	माअरासु माअरासुं
सम्बोधन	हे माअरा हे माअराओ हे माअराउ	हे माअरा हे माअराओ	हे माअला हे माअलाओ	हे माअरा हे माअराओ	हे माअरा हे माअराओ हे माअराउ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कत्तु (करनेवाला) (उकारान्त से भिन्न रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	कत्ता	कत्ता	कत्ता	कत्ता	कत्ता
द्वितीया	कत्तारं	कत्तारं	कत्तालं	कत्तारं	कत्तारं

कत्तु (करनेवाला) (उकारान्त की तरह रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	-	-	-	-	-
द्वितीया	-	-	-	-	-
तृतीया	कत्तुणा	कत्तुणा	कत्तुणा	कत्तुणा	कत्तुणा
चतुर्थी व षष्ठी	कत्तुणो कत्तुस्स	कत्तुणो	कत्तुणो **कत्तुश्श**	कत्तुणो	कत्तुणो
पंचमी	कत्तुणो कत्तुत्तो कत्तूओ कत्तूउ कत्तूहिन्तो	**कत्तूदो** **कत्तूदु**	**कत्तूदो** **कत्तूदु**	**कत्तूदो** **कत्तूदु**	कत्तुणो कत्तुत्तो कत्तूओ कत्तूउ कत्तूहिन्तो
सप्तमी	कत्तुम्मि	कत्तुम्मि **कत्तुम्हि**	कत्तुम्मि	कत्तुम्मि	कत्तुम्मि **कत्तुंमि** **कत्तुंसि**
सम्बोधन	हे कत्तु हे कत्तू	हे कत्तु हे कत्तू	हे कत्तु हे कत्तू	हे कत्तु हे कत्तू	हे कत्तु हे कत्तू

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कत्तु (करनेवाला) (उकारान्त से भिन्न रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	-	-	-	-	-
द्वितीया	-	-	-	-	-

कत्तु (करनेवाला) (उकारान्त की तरह रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	कत्तउ, कत्तओ कत्तवो, कत्तुणो कत्तू	कत्तुणो कत्तओ	कत्तुणो कत्तओ	कत्तुणो कत्तओ	कत्तउ, कत्तओ कत्तवो, कत्तुणो कत्तू
द्वितीया	कत्तुणो, कत्तू	कत्तुणो, कत्तू	कत्तुणो, कत्तू	कत्तुणो, कत्तू	कत्तुणो, कत्तू **कत्तवो**
तृतीया	कत्तूहि, कत्तूहिं कत्तूहिँ	कत्तूहिं	कत्तूहिं	कत्तूहिं	कत्तूहि, कत्तूहिं कत्तूहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	कत्तूण कत्तूणं	कत्तूणं	कत्तूणं	कत्तूणं	कत्तूण कत्तूणं
पंचमी	कत्तुत्तो कत्तूओ कत्तूउ कत्तूहिन्तो कत्तूसुन्तो	**कत्तूदो** **कत्तूदु**	**कत्तूदो** **कत्तूदु**	**कत्तूदो** **कत्तूदु**	कत्तुत्तो कत्तूओ कत्तूउ कत्तूहिन्तो कत्तूसुन्तो
सप्तमी	कत्तूसु कत्तूसुं	कत्तूसु कत्तूसुं	कत्तूसु कत्तूसुं	कत्तूसु कत्तूसुं	कत्तूस कत्तूसुं
सम्बोधन	हे कत्तउ हे कत्तओ हे कत्तवो हे कत्तुणो हे कत्तू	हे कत्तुणो हे कत्तओ	हे कत्तुणो हे कत्तओ	हे कत्तुणो हे कत्तओ	**हे कत्तवो**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कत्तार (करनेवाला)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	कत्तारो	कत्तारो	कत्तालो	कत्तारो	कत्तारो
द्वितीया	कत्तारं	कत्तारं	कत्तालं	कत्तारं	कत्तारं
तृतीया	कत्तारेण कत्तारेणं	कत्तारेण	कत्तालेण	कत्तारेण	कत्तारेण कत्तारेणं
चतुर्थी व षष्ठी	कत्तारस्स	कत्तारस्स	**कत्तालश्श**	कत्तारस्स	कत्तारस्स
पंचमी	कत्तारत्तो कत्ताराओ कत्ताराउ कत्ताराहि कत्ताराहिन्तो कत्तारा	**कत्तारादो** **कत्तारादु**	**कत्तालादो** **कत्तालादु**	**कत्तारातो** **कत्तारातु**	कत्ताराओ कत्ताराउ कत्तारा
सप्तमी	कत्तारे कत्तारम्मि	कत्तारे कत्तारम्मि **कत्तारम्हि**	कत्तारे कत्तालम्मि **कत्तालाहिं**	कत्तारे कत्तारम्मि	कत्तारे कत्तारम्मि **कत्तारंमि** **कत्तारंसि**
सम्बोधन	हे कत्तार हे कत्तारा हे कत्तारो	हे कत्तार हे कत्तारा हे कत्तारो	हे कत्ताल **हे कत्तालो**	हे कत्तार हे कत्तारा हे कत्तारो	हे कत्तार हे कत्तारा हे कत्तारो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कत्तार (करनेवाला)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	कत्तारा	कत्तारा	कत्ताला	कत्तारा	कत्तारा
द्वितीया	कत्तारा, कत्तारे	कत्तारे	कत्ताले	कत्तारे	कत्तारा, कत्तारे
तृतीया	कत्तारेहि, कत्तारेहिं, कत्तारेहिँ	कत्तारेहिं	कत्तालेहिं	कत्तारेहिं	कत्तारेहि, कत्तारेहिं कत्तारेहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	कत्ताराण कत्ताराणं	कत्ताराण कत्ताराणं	कत्तालाण कत्तालाणं	कत्ताराण कत्ताराणं	कत्ताराण कत्ताराणं
पंचमी	कत्तारत्तो कत्ताराओ कत्तराउ कत्ताराहि कत्ताराहिन्तो कत्तारासुन्तो कत्तारेहि कत्तारेहिन्तो कत्तारेसुन्तो	कत्तारत्तो **कत्तारादो** **कत्तारादु** कत्ताराहि कत्ताराहिन्तो कत्तारासुन्तो कत्तारेहि कत्तारेहिन्तो कत्तारेसुन्तो	कत्तालत्तो **कत्तालादो** **कत्तालादु** कत्तालाहि कत्तालाहिन्तो कत्तालासुन्तो कत्तालेहि कत्तालेहिन्तो कत्तालेसुन्तो	कत्तारत्तो **कत्तारादो** **कत्तारादु** कत्ताराहि कत्ताराहिन्तो कत्तारासुन्तो कत्तारेहि कत्तारेहिन्तो कत्तारेसुन्तो	**कत्तारेहिं** **कत्तारेहिन्तो**
सप्तमी	कत्तारेसु कत्तारेसुं	कत्तारेसु कत्तारेसुं	कत्तालेसु कत्तालेसुं	कत्तारेसु कत्तारेसुं	कत्तारेसु कत्तारेसुं
सम्बोधन	हे कत्तारा	हे कत्तारा	हे कत्ताला हे कत्तालाहो	हे कत्तारा	हे कत्तारा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अप्प/अत्त (आत्मा)

(अकारान्त पुल्लिंग से भिन्न रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	अप्पा अत्ता	अप्पा **आदा** अत्ता **चेदा**	अत्ता	अप्पा **आता**	अप्पा **आया**
द्वितीया	-	-	-	-	-
तृतीया	अप्पणा अत्तणा अप्पणइया अत्तणइया अप्पणिआ अत्तणिआ	अप्पणा अत्तणा अप्पणइया अत्तणइया अप्पणिआ अत्तणिआ	अप्पणा अत्तणा अप्पणइया अत्तणइया अप्पणिआ अत्तणिआ	अप्पणा अत्तणा अप्पणइया अत्तणइया अप्पणिआ अत्तणिआ	अप्पणा अत्तणा अप्पणइया अत्तणइया अप्पणिआ अत्तणिआ
चतुर्थी व षष्ठी	अप्पणो अत्तणो	अप्पणो अत्तणो	अप्पणो अत्तणो	अप्पणो अत्तणो	अप्पणो अत्तणो
पंचमी	अप्पाणो	अप्पाणो	अप्पाणो	अप्पाणो	अप्पाणो
सप्तमी	-	-	-	-	-
सम्बोधन	-	-	-	-	-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अप्प/अत्त (आत्मा)
(अकारान्त पुल्लिंग से भिन्न रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	अप्पाणो अत्ताणो	अप्पाणो अत्ताणो	अप्पाणो अत्ताणो	अप्पाणो अत्ताणो	अप्पाणो अत्ताणो
द्वितीया	अप्पाणो अत्ताणो	अप्पाणो अत्ताणो	अप्पाणो अत्ताणो	अप्पाणो अत्ताणो	अप्पाणो अत्ताणो
तृतीया	-	-	-	-	-
चतुर्थी व षष्ठी	-	-	-	-	-
पंचमी	-	-	-	-	-
सप्तमी	-	-	-	-	-
सम्बोधन	हे अत्ताणो	हे अत्ताणो	हे अत्ताणो	हे अत्ताणो	हे अत्ताणो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अप्प/अत्त (आत्मा)
(अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)
एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	अप्पो, अत्तो	अप्पो, अत्तो	अप्पो, अत्तो	अप्पो, अत्तो	अप्पो, अत्तो
द्वितीया	अप्पं, अत्तं	अप्पं, अत्तं आदं	अप्पं, अत्तं	अप्पं, अत्तं	अप्पं, अत्तं
तृतीया	अप्पेण, अप्पेणं अत्तेण, अत्तेणं	अप्पेण, अप्पेणं अत्तेण, अत्तेणं	अप्पेण,अप्पेणं अत्तेण,अत्तेणं	अप्पेण, अप्पेणं अत्तेण, अत्तेणं	अप्पेण, अप्पेणं अत्तेण, अत्तेणं
चतुर्थी व षष्ठी	अप्पस्स अत्तस्स	अप्पस्स अत्तस्स	अप्पश्श अत्तश्श	अप्पस्स अत्तस्स	अप्पस्स अत्तस्स
पंचमी	अप्पत्तो अप्पाओ अप्पाउ अप्पाहि अप्पाहिन्तो अप्पा अत्तत्तो अत्ताओ अत्ताउ अत्ताहि अत्ताहिन्तो अत्ता	अप्पादो अप्पादु अत्तादो अत्तादु	अप्पादो अप्पादु अत्तादो अत्तादु	अप्पातो अप्पातु अत्तातो अत्तातु	अप्पत्तो अप्पाओ अप्पाउ अप्पाहि अप्पाहिन्तो अप्पा अत्तत्तो अत्ताओ अत्ताउ अत्ताहि अत्ताहिन्तो अत्ता
सप्तमी	अप्पे, अप्पम्मि अत्ते, अत्तम्मि	अप्पे, अप्पम्मि अत्ते, अत्तम्मि आदम्हि	अप्पे,अप्पम्मि अत्ते,अत्तम्मि	अप्पे, अप्पम्मि अत्ते, अत्तम्मि	अप्पे, अप्पम्मि अत्ते, अत्तम्मि
सम्बोधन	हे अप्प, हे अत्त हे अप्पा, हे अत्ता हे अप्पो, हे अत्तो	हे अप्प, हे अत्त हे अप्पा, हे अत्ता हे अप्पं, हे अत्तं	हे अप्प,हे अत्त हे अप्पा,हे अत्ता हे अप्पं,हे अत्तं	हे अप्प,हे अत्त हे अप्पा,हे अत्ता हे अप्पं,हे अत्तं	हे अप्प, हे अत्त हे अप्पा,हे अत्ता हे अप्पो, हे अत्तो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अप्प/अत्त (आत्मा)
(अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)
बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	अप्पा, अत्ता	अप्पा, अत्ता	अप्पा, अत्ता	अप्पा, अत्ता	अप्पा, अत्ता
द्वितीया	अप्पा, अत्ता अप्पे, अत्ते	अप्पे, अत्ते	अप्पे, अत्ते	अप्पे, अत्ते	अप्पा, अत्ता अप्पे, अत्ते
तृतीया	अप्पेहि, अत्तेहि अप्पेहिं, अत्तेहिं अप्पेहिँ, अत्तेहिँ	अप्पेहि, अत्तेहि अप्पेहिं, अत्तेहिं अप्पेहिँ, अत्तेहिँ	अप्पेहि,अत्तेहि अप्पेहिं,अत्तेहिं अप्पेहिँ,अत्तेहिँ	अप्पेहि, अत्तेहि अप्पेहिं, अत्तेहिं अप्पेहिँ, अत्तेहिँ	अप्पेहि, अत्तेहि अप्पेहिं, अत्तेहिं अप्पेहिँ, अत्तेहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	अप्पाण, अप्पाणं अत्ताण, अत्ताणं	अप्पाण,अप्पाणं अत्ताण, अत्ताणं	अप्पाण,अप्पाणं अत्ताण,अत्ताणं	अप्पाण,अप्पाणं अत्ताण, अत्ताणं	अप्पाण,अप्पाणं अत्ताण, अत्ताणं
पंचमी	अप्पत्तो, अप्पाओ अप्पाउ, अप्पाहि अप्पाहिन्तो अप्पासुन्तो अप्पेहि अप्पेहिन्तो अप्पेसुन्तो अत्तत्तो, अत्ताओ अत्ताउ, अत्ताहि अत्ताहिन्तो अत्तासुन्तो अत्तेहि अत्तेहिन्तो अत्तेसुन्तो	अप्पत्तो,अप्पादो अप्पादु,अप्पाहि अप्पाहिन्तो अप्पासुन्तो अप्पेहि अप्पेहिन्तो अप्पेसुन्तो अत्तत्तो,**अत्तादो** **अत्तादु**,अत्ताहि अत्ताहिन्तो अत्तासुन्तो अत्तेहि अत्तेहिन्तो अत्तेसुन्तो	अप्पत्तो,**अप्पादो** **अप्पादु**,अप्पाहि अप्पाहिन्तो अप्पासुन्तो अप्पेहि अप्पेहिन्तो अप्पेसुन्तो अत्तत्तो, **अत्तादो** **अत्तादु**, अत्ताहि अत्ताहिन्तो अत्तासुन्तो अत्तेहि अत्तेहिन्तो अत्तेसुन्तो	अप्पत्तो,**अप्पातो** अप्पातु,अप्पाहि अप्पाहिन्तो अप्पासुन्तो अप्पेहि अप्पेहिन्तो अप्पेसुन्तो अत्तत्तो,**अत्तादो** **अत्तादु**,अत्ताहि अत्ताहिन्तो अत्तासुन्तो अत्तेहि अत्तेहिन्तो अत्तेसुन्तो	अप्पत्तो,अप्पाओ अप्पाउ,अप्पाहि अप्पाहिन्तो अप्पासुन्तो अप्पेहि अप्पेहिन्तो अप्पेसुन्तो अत्तत्तो, अत्ताओ अत्ताउ, अत्ताहि अत्ताहिन्तो अत्तासुन्तो अत्तेहि अत्तेहिन्तो अत्तेसुन्तो
सप्तमी	अप्पेसु, अप्पेसुं अत्तेसु, अत्तेसुं	अप्पेसु,अप्पेसुं अत्तेसु, अत्तेसुं	अप्पेसु,अप्पेसुं अत्तेसु,अत्तेसुं	अप्पेसु, अप्पेसुं अत्तेसु, अत्तेसुं	अप्पेसु, अप्पेसुं अत्तेसु, अत्तेसुं
सम्बोधन	हे अप्पा हे अत्ता	हे अप्पा हे अत्ता	हे अप्पा हे अत्ता	हे अप्पा हे अत्ता	हे अप्पा हे अत्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अप्पाण (आत्मा)

(अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	अप्पाणो	अप्पाणो	अप्पाणो	अप्पाणो	अप्पाणो
द्वितीया	अप्पाणं	अप्पाणं	अप्पाणं	अप्पाणं	अप्पाणं **आयाणं**
तृतीया	अप्पाणेण अप्पाणेणं	अप्पाणेण अप्पाणेणं	अप्पाणेण अप्पाणेणं	अप्पाणेण अप्पाणेणं	अप्पाणेण अप्पाणेणं
चतुर्थी व षष्ठी	अप्पाणस्स	अप्पाणस्स	**अप्पाणश्श**	अप्पाणस्स	अप्पाणस्स
पंचमी	अप्पाणत्तो अप्पाणाओ अप्पाणाउ अप्पाणाहि अप्पाणाहिन्तो अप्पाणा	**अप्पाणादो** **अप्पाणादु**	**अप्पाणादो** **अप्पाणादु**	**अप्पाणातो** **अप्पाणातु**	अप्पाणत्तो अप्पाणाओ अप्पाणाउ अप्पाणाहि अप्पाणाहिन्तो अप्पाणा
सप्तमी	अप्पाणे अप्पाणम्मि	अप्पाणे अप्पाणम्मि **अप्पाणम्हि**	अप्पाणे अप्पाणम्मि	अप्पाणे अप्पाणम्मि	अप्पाणे अप्पाणम्मि **अप्पाणंमि** **अप्पाणंसि**
सम्बोधन	हे अप्पाण हे अप्पाणा हे अप्पाणो	हे अप्पाण हे अप्पाणा हे अप्पाणो	हे अप्पाण हे अप्पाणा हे अप्पाणो	हे अप्पाण हे अप्पाणा हे अप्पाणो	हे अप्पाण हे अप्पाणा हे अप्पाणो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अप्पाण (आत्मा)

(अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	अप्पाणा	अप्पाणा	अप्पाणा	अप्पाणा	अप्पाणा
द्वितीया	अप्पाणा	अप्पाणा	अप्पाणा	अप्पाणा	अप्पाणा
	अप्पाणे	अप्पाणे	अप्पाणे	अप्पाणे	अप्पाणे
तृतीया	अप्पाणेहि	अप्पाणेहि	अप्पाणेहि	अप्पाणेहि	अप्पाणेहि
	अप्पाणेहिं	अप्पाणेहिं	अप्पाणेहिं	अप्पाणेहिं	अप्पाणेहिं
	अप्पाणेहिँ	अप्पाणेहिँ	अप्पाणेहिँ	अप्पाणेहिँ	अप्पाणेहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	अप्पाणाण	अप्पाणाण	अप्पाणाण	अप्पाणाण	अप्पाणाण
	अप्पाणाणं	अप्पाणाणं	अप्पाणाणं	अप्पाणाणं	अप्पाणाणं
पंचमी	अप्पाणत्तो	अप्पाणत्तो	अप्पाणत्तो	अप्पाणत्तो	अप्पाणत्तो
	अप्पाणाओ	**अप्पाणादो**	**अप्पाणादो**	**अप्पाणादो**	अप्पाणाओ
	अप्पाणाउ	**अप्पाणादु**	**अप्पाणादु**	**अप्पाणादु**	अप्पाणाउ
	अप्पाणाहि	अप्पाणाहि	अप्पाणाहि	अप्पाणाहि	अप्पाणाहि
	अप्पाणाहिन्तो	अप्पाणाहिन्तो	अप्पाणाहिन्तो	अप्पाणाहिन्तो	अप्पाणाहिन्तो
	अप्पाणासुन्तो	अप्पाणासुन्तो	अप्पाणासुन्तो	अप्पाणासुन्तो	अप्पाणासुन्तो
	अप्पाणेहि	अप्पाणेहि	अप्पाणेहि	अप्पाणेहि	अप्पाणेहि
	अप्पाणेहिन्तो	अप्पाणेहिन्तो	अप्पाणेहिन्तो	अप्पाणेहिन्तो	अप्पाणेहिन्तो
	अप्पाणेसुन्तो	अप्पाणेसुन्तो	अप्पाणेसुन्तो	अप्पाणेसुन्तो	अप्पाणेसुन्तो
सप्तमी	अप्पाणेसु	अप्पाणेसु	अप्पाणेसु	अप्पाणेसु	अप्पाणेसु
	अप्पाणेसुं	अप्पाणेसुं	अप्पाणेसुं	अप्पाणेसुं	अप्पाणेसुं
सम्बोधन	हे अप्पाणा	हे अप्पाणा	हे अप्पाणा	हे अप्पाणा	हे अप्पाणा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्ताण (आत्मा)

(अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	अत्ताणो	अत्ताणो	अत्ताणो	अत्ताणो	अत्ताणो
द्वितीया	अत्ताणं	अत्ताणं	अत्ताणं	अत्ताणं	अत्ताणं
तृतीया	अत्ताणेण अत्ताणेणं	अत्ताणेण अत्ताणेणं	अत्ताणेण अत्ताणेणं	अत्ताणेण अत्ताणेणं	अत्ताणेण अत्ताणेणं
चतुर्थी व षष्ठी	अत्ताणस्स	अत्ताणस्स	**अत्ताणश्श**	अत्ताणस्स	अत्ताणस्स
पंचमी	अत्ताणत्तो अत्ताणाओ अत्ताणाउ अत्ताणाहि अत्ताणाहिन्तो अत्ताणा	**अत्ताणादो** **अत्ताणादु**	**अत्ताणादो** **अत्ताणादु**	**अत्ताणातो** **अत्ताणातु**	अत्ताणत्तो अत्ताणाओ अत्ताणाउ अत्ताणाहि अत्ताणाहिन्तो अत्ताणा
सप्तमी	अत्ताणे अत्ताणम्मि	अत्ताणे अत्ताणम्मि **अत्ताणम्हि**	अत्ताणे अत्ताणम्मि	अत्ताणे अत्ताणम्मि	अत्ताणे अत्ताणम्मि **अत्ताणंमि** **अत्ताणंसि**
सम्बोधन	हे अत्ताण हे अत्ताणा हे अत्ताणो	हे अत्ताण हे अत्ताणा हे अत्ताणो	हे अत्ताण हे अत्ताणा हे अत्ताणो	हे अत्ताण हे अत्ताणा हे अत्ताणो	हे अत्ताण हे अत्ताणा हे अत्ताणो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्ताण (आत्मा)
(अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)
बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	अत्ताणा	अत्ताणा	अत्ताणा	अत्ताणा	अत्ताणा
द्वितीया	अत्ताणा अत्ताणे	अत्ताणा अत्ताणे	अत्ताणा अत्ताणे	अत्ताणा अत्ताणे	अत्ताणा अत्ताणे
तृतीया	अत्ताणेहि अत्ताणेहिं अत्ताणेहिँ	अत्ताणेहि अत्ताणेहिं अत्ताणेहिँ	अत्ताणेहि अत्ताणेहिं अत्ताणेहिँ	अत्ताणेहि अत्ताणेहिं अत्ताणेहिँ	अत्ताणेहि अत्ताणेहिं अत्ताणेहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	अत्ताणाण अत्ताणाणं	अत्ताणाण अत्ताणाणं	अत्ताणाण अत्ताणाणं	अत्ताणाण अत्ताणाणं	अत्ताणाण अत्ताणाणं
पंचमी	अत्ताणत्तो अत्ताणाओ अत्ताणाउ अत्ताणाहि अत्ताणाहिन्तो अत्ताणासुन्तो अत्ताणेहि अत्ताणेहिन्तो अत्ताणेसुन्तो	अत्ताणत्तो **अत्ताणादो** **अत्ताणादु** अत्ताणाहि अत्ताणाहिन्तो अत्ताणासुन्तो अत्ताणेहि अत्ताणेहिन्तो अत्ताणेसुन्तो	अत्ताणत्तो **अत्ताणादो** **अत्ताणादु** अत्ताणाहि अत्ताणाहिन्तो अत्ताणासुन्तो अत्ताणेहि अत्ताणेहिन्तो अत्ताणेसुन्तो	अत्ताणत्तो **अत्ताणादो** **अत्ताणादु** अत्ताणाहि अत्ताणाहिन्तो अत्ताणासुन्तो अत्ताणेहि अत्ताणेहिन्तो अत्ताणेसुन्तो	अत्ताणत्तो अत्ताणाओ अत्ताणाउ अत्ताणाहि अत्ताणाहिन्तो अत्ताणासुन्तो अत्ताणेहि अत्ताणेहिन्तो अत्ताणेसुन्तो
सप्तमी	अत्ताणेसु अत्ताणेसुं	अत्ताणेसु अत्ताणेसुं	अत्ताणेसु अत्ताणेसुं	अत्ताणेसु अत्ताणेसुं	अत्ताणेसु अत्ताणेसुं
सम्बोधन	हे अत्ताणा	हे अत्ताणा	हे अत्ताणा	हे अत्ताणा	हे अत्ताणा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राय/राअ (राजा)

(अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	राओ	रायो	लाओ	रायो	रायो
द्वितीया	रायं, राअं	रायं, राअं	लायं, लाअं	रायं, राअं	रायं, राअं
तृतीया	रायेण, रायेणं राएण, राएणं	रायेण राएण	लायेण लाएण	रायेण राएण	रायेण, रायेणं राएण, राएणं
चतुर्थी व षष्ठी पंचमी	रायस्स राअस्स रायत्तो रायाओ रायाउ रायाहि रायाहिन्तो राया राअत्तो राआओ राआउ राआहि राआहिन्तो राआ	रायस्स राअस्स **रायादो** **रायादु** **राआदो** **राआदु**	लायश्श लाअश्श **लायादो** **लायादु** **लाआदो** **लाआदु**	रायस्स राअस्स **रायातो** **रायातु** **राआतो** **राआतु**	रायस्स राअस्स रायत्तो रायाओ रायाउ रायाहि रायाहिन्तो राया राअत्तो राआओ राआउ राआहि राआहिन्तो राआ
सप्तमी	राये, रायम्मि राए, राअम्मि	राये, रायम्मि राए, राअम्मि **रायम्हि,राअम्हि**	लाये,लायम्मि लाए,लाअम्मि	राये, रायम्मि राए, राअम्मि	राये, रायम्मि राए, राअम्मि **रायंसि,राअंसि** **रायंमि,राअंमि**
सम्बोधन	हे राय, हे राअ हे राया, हे राआ हे रायो, हे राओ	हे राय, हे राअ हे राया, हे राआ हे रायं, हे राअं	हे लाय, हे लाअ हे लाया, हे लाआ हे लायं,हे लाअं	हे राय, हे राअ हे राया, हे राआ हे रायं,हे राअं	हे राय, हे राअ हे राया,हे राआ हे रायं, हे राअं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राय/राअ (राजा)

(अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	राया, राआ	राया, राआ	लाया, लाआ	राया, राआ	राया, राआ
द्वितीया	राया, राआ	राया, राआ	लाया, लाआ	राया, राआ	राया, राआ
	राये, राए	राये, राए	लाये,लाए	राये, राए	राये, राए
तृतीया	रायेहि, राएहि	रायेहि, राएहि	लायेहि,लाएहि	रायेहि, राएहि	रायेहिं, राएहिं
	रायेहिं, राएहिं	रायेहिं, राएहिं	लायेहिं,लाएहिं	रायेहिं, राएहिं	रायेहिं, राएहिं
	रायेहिँ, राएहिँ	रायेहिँ, राएहिँ	लायेहिँ, लाएहिँ	रायेहिँ, राएहिँ	रायेहिँ, राएहिँ
चतुर्थी	रायाण, रायाणं	रायाण,रायाणं	लायाण,लायाणं	रायाण,रायाणं	रायाण,रायाणं
व षष्ठी	राआण, राआणं	राआण, राआणं	लाआण,लाआणं	राआण, राआणं	राआण, राआणं
पंचमी	रायत्तो, रायाओ	रायत्तो,**रायादो**	लायत्तो,**लायादो**	रायत्तो,**रायादो**	रायत्तो,रायाओ
	रायाउ, रायाहि	रायादु,रायाहि	**लायादु**, लायाहि	**रायादु**,रायाहि	रायाउ,रायाहि
	रायाहिन्तो	रायाहिन्तो	लायाहिन्तो	रायाहिन्तो	रायाहिन्तो
	रायासुन्तो	रायासुन्तो	लायासुन्तो	रायासुन्तो	रायासुन्तो
	रायेहि	रायेहि	लायेहि	रायेहि	रायेहि
	रायेहिन्तो	रायेहिन्तो	लायेहिन्तो	रायेहिन्तो	रायेहिन्तो
	रायेसुन्तो	रायेसुन्तो	लायेसुन्तो	रायेसुन्तो	रायेसुन्तो
	राअत्तो, राआओ	राअत्तो,राआदो	लाअत्तो,लाआदो	राअत्तो,राआतो	राअत्तो, राआओ
	राआउ, राआहि	राआदु,राआहि	लाआदु, लाआहि	राआदु,राआहि	राआउ, राआहि
	राआहिन्तो	राआहिन्तो	लाआहिन्तो	राआहिन्तो	राआहिन्तो
	राआसुन्तो	राआसुन्तो	लाआसुन्तो	राआसुन्तो	राआसुन्तो
	राएहि	राएहि	लाएहि	राएहि	राएहि
	राएहिन्तो	राएहिन्तो	लाएहिन्तो	राएहिन्तो	राएहिन्तो
	राएसुन्तो	राएसुन्तो	लाएसुन्तो	राएसुन्तो	राएसुन्तो
सप्तमी	रायेसु, रायेसुं	रायेसु, रायेसुं	लायेसु,लायेसुं	रायेसु, रायेसुं	रायेसु, रायेसुं
	राएसु, राएसुं	राएसु, राएसुं	लाएसु,लाएसुं	राएसु, राएसुं	राएसु, राएसुं
सम्बोधन	हे राया	हे राया	हे लाया	हे राया	हे राया
	हे राआ	हे राआ	हे लाआ	हे राआ	हे राआ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राय/राअ (राजा)
(अकारान्त पुल्लिंग से भिन्न रूप)

एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	राया	राआ	लाआ	राजा	राया
द्वितीया	राइणं	राइणं	लाइणं	राइणं	राइणं रायाणं रायं
तृतीया	राइणा रण्णा रायणा	राइणा रण्णा रायणा	लाइणा लण्णा,लञ्आ लायणा	राइणा रञ्आ, राचिआ रायणा	राइणा रण्णा रायणा
चतुर्थी व षष्ठी	रण्णो राइणो रायणो	रण्णो राइणो रायणो	लण्णो लाइणो लायणों	रञ्ञो राचिओ रायणो	रण्णो राइणो रायणो
पंचमी	रण्णो राइणो	रण्णो राइणो	लण्णो लाइणो	रञ्ञो राचिओ	रण्णो राइणो
सप्तमी	राइम्मि	राइम्मि	लाइम्मि	राइम्मि	राइम्मि
सम्बोधन	-	-	-	-	-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राय/राअ (राजा)

(अकारान्त पुल्लिंग से भिन्न रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	राइणो	राइणो	लाइणो	राइणो	राइणो
द्वितीया	राइणो	राइणो	लाइणो	राइणो	राइणो
तृतीया	राईहि राईहिं राईहिँ	राईहि राईहिं राईहिँ	लाईहि लाईहिं लाईहिँ	राईहि राईहि राईहिँ	राईहि राईहिं राईहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	राइणं राईण राईणं	राइणं राईण राईणं	लाइणं लाईण लाईणं	राइणं राईण राईणं	राइणं राईण राईणं
पंचमी	राइत्तो राईओ राईउ राईहिन्तो राईसुन्तो	राइत्तो राईओ राईउ राईहिन्तो राईसुन्तो	लाइत्तो लाईओ लाईउ लाईहिन्तो लाईसुन्तो	राइत्तो राईओ राईउ राईहिन्तो राईसुन्तो	राइत्तो राईओ राईउ राईहिन्तो राईसुन्तो
सप्तमी	राईसु राईसुं	राईसु राईसुं	लाईसु लाईसुं	राईसु राईसुं	राईसु राईसुं
सम्बोधन	राइणो	राइणो	लाइणो	राइणो	राइणो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रायाण (राजा)
(अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)
एकवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	रायाणो	राआणो	लाआणो	राआणो	रायाणो
द्वितीया	रायाणं	राआणं	लाआणं	राआणं	रायाणं
तृतीया	रायाणेण रायाणेणं	रायाणेण रायाणेणं	लायाणेण रायाणेणं	रायाणेण रायाणेणं	रायाणेण रायाणेणं
चतुर्थी व षष्ठी	रायाणस्स	रायाणस्स	लायाणस्स	रायाणस्स	रायाणस्स
पंचमी	रायाणत्तो रायाणाओ रायाणाउ रायाणाहि रायाणाहिन्तो	**रायाणादो** **रायाणादु**	**लायाणादो** **लायाणादु**	**रायाणातो** **रायाणातु**	रायाणत्तो रायाणाओ रायाणाउ रायाणाहि रायाणाहिन्तो
सप्तमी	रायाणे रायाणम्मि	रायाणे रायाणम्मि **रायाणम्हि**	लायाणे लायाणम्मि	रायाणे रायाणम्मि	रायाणे रायाणम्मि **रायाणंसि** **रायाणंमि**
सम्बोधन	हे रायाण हे रायाणा हे रायाणो	हे रायाण हे रायाणा हे रायाणो	हे लायाण हे लायाणा हे लायाणो	हे रायाण हे रायाणा हे रायाणो	हे रायाण हे रायाणा हे रायाणो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रायाण (राजा)

(अकारान्त पुल्लिंग की तरह रूप)

बहुवचन

विभक्ति	प्राकृत भाषा	शौरसेनी भाषा	मागधी भाषा	पैशाची भाषा	अर्धमागधी भाषा
प्रथमा	रायाणा	राआणा	लाआणा	राआणा	रायाणा
द्वितीया	रायाणा	राआणा	लाआणा	राआणा	रायाणा
	रायाणे	राआणे	लाआणे	राआणे	रायाणे
तृतीया	रायाणेहि	रायाणेहि	लायाणेहि	रायाणेहि	रायाणेहि
	रायाणेहिं	रायाणेहिं	लायाणेहिं	रायाणेहिं	रायाणेहिं
	रायाणेहिँ	रायाणेहिँ	लायाणेहिँ	रायाणेहिँ	रायाणेहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	रायाणाण	रायाणाण	लायाणाण	रायाणाण	रायाणाण
	रायाणाणं	रायाणाणं	लायाणाणं	रायाणाणं	रायाणाणं
पंचमी	रायाणत्तो	रायाणत्तो	लायाणत्तो	रायाणत्तो	रायाणत्तो
	रायाणाओ	**रायाणादो**	**लायाणादो**	**रायाणादो**	रायाणाओ
	रायाणाउ	**रायाणादु**	**लायाणादु**	**रायाणादु**	रायाणाउ
	रायाणाहि	रायाणाहि	लायाणाहि	रायाणाहि	रायाणाहि
	रायाणाहिन्तो	रायाणाहिन्तो	लायाणाहिन्तो	रायाणाहिन्तो	रायाणाहिन्तो
	रायाणासुन्तो	रायाणासुन्तो	लायाणासुन्तो	रायाणासुन्तो	रायाणासुन्तो
	रायाणेहि	रायाणेहि	लायाणेहि	रायाणेहि	रायाणेहि
	रायाणेहिन्तो	रायाणेहिन्तो	लायाणेहिन्तो	रायाणेहिन्तो	रायाणेहिन्तो
	रायाणेसुन्तो	रायाणेसुन्तो	लायाणेसुन्तो	रायाणेसुन्तो	रायाणेसुन्तो
सप्तमी	रायाणेसु	रायाणेसु	लायाणेसु	रायाणेसु	रायाणेसु
	रायाणेसुं	रायाणेसुं	लायाणेसुं	रायाणेसुं	रायाणेसुं
सम्बोधन	हे रायाणा	हे राआणा	हे लाआणा	हे राचाणा	हे रायाणा

❑❑❑

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-3
सर्वनाम-रूप

यहाँ निम्नलिखित सर्वनामों की रूपावली दी जा रही है।

पुल्लिंग सर्वनाम- सव्व, त, ज, क, एत, इम, अन्न, अमु, एक्क

नपुंसकलिंग सर्वनाम- सव्व, त, ज, क, एत, इम, अन्न, अमु, एक्क

स्त्रीलिंग सर्वनाम-सव्वा, ता, जा, का, एता, इमा, अन्ना,अमु, एक्का

पुरुषवाचक सर्वनाम तीनों लिंगों में- तुम्ह, अम्ह

नोट: शौरसेनी भाषा में प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम-रूपों को **गहरे काले अक्षरों** में, मागधी भाषा में प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम-रूपों को **रेखांकित अक्षरों** में, पैशाची भाषा में प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम-रूपों को **तिरछे अक्षरों** में तथा अर्धमागधी भाषा में प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम-रूपों को **गहरे काले** तथा **तिरछे अक्षरों** में दिखाया गया है।

*एअ पुल्लिंग तथा ती, जी की, एआ, एई, इमी स्त्रीलिंग सर्वनामों के लिए प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ (भाग-1), अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर देखी जा सकती है।

प्राकृत भाषाओं का व्याकरण-रिचार्ड पिशल	**पृष्ठ संख्या**
1. सर्वनाम- अम्ह, तुम्ह	608-622
2. शेष सर्वनाम	622-643

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग–सव्व (सब)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वो, ***सव्वे*** (सब, सबने)	सव्वे (सब, सबने)
द्वितीया	सव्वं (सबको)	सव्वा, सव्वे (सबको)
तृतीया	सव्वेण, सव्वेणं (सबसे, सबके द्वारा)	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ (सबसे, सबके द्वारा)
चतुर्थी	सव्वाय; सव्वस्स (सबके लिए)	सव्वाण, सव्वाणं, सव्वेसिं (सबके लिए)
पंचमी	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा **सव्वादो, सव्वादु** *सव्वातो, सव्वातु* (सबसे)	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेहि, सव्वेहिन्तो, सव्वेसुन्तो **सव्वादो, सव्वादु** (सबसे)
षष्ठी	सव्वस्स सव्वश्श, सव्वाह (सबका, सबकी, सबके)	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं सव्वाहँ (सबका, सबकी, सबके)
सप्तमी	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ सव्वहिं ***सव्वम्हि, सव्वंसि, सव्वंमि*** (सबमें, सब पर)	सव्वेसु, सव्वेसुं (सबमें, सब पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग–सव्व (सब)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वं (सबने)	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि (सब, सबने)
द्वितीया	सव्वं (सबको)	सव्वाइं, सव्वाइँ, सव्वाणि (सबको)
तृतीया	सव्वेण, सव्वेणं (सबसे, सबके द्वारा)	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ (सबसे, सबके द्वारा)
चतुर्थी	सव्वाय, सव्वस्स (सबके लिए)	सव्वाण, सव्वाणं, सव्वेसिं (सबके लिए)
पंचमी	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा **सव्वादो, सव्वादु** *सव्वातो, सव्वातु* (सबसे)	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेहि, सव्वेहिन्तो, सव्वेसुन्तो **सव्वादो, सव्वादु** (सबसे)
षष्ठी	सव्वस्स सव्वश्श, सव्वाह (सबका, सबकी, सबके)	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं सव्वाहँ (सबका, सबकी, सबके)
सप्तमी	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ सव्वहिं *सव्वम्हि, सव्वंसि, सव्वंमि* (सबमें, सब पर)	सव्वेसु, सव्वेसुं (सबमें, सब पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग-सव्वा (सब)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वा (सब, सबने)	सव्वा, सव्वाउ, सव्वाओ (सब, सबने)
द्वितीया	सव्वं (सबको)	सव्वा, सव्वाउ, सव्वाओ (सबको)
तृतीया	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए (सबसे, सबके द्वारा)	सव्वाहि, सव्वाहिं, सव्वाहिँ (सबसे, सबके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए (सबके लिए) (सबका, सबकी, सबके)	सव्वाण, सव्वाणं, सव्वेसिं (सबके लिए) (सबका, सबकी, सबके)
पंचमी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिन्तो **सव्वादो, सव्वादु** *सव्वातो, सव्वातु* (सबसे)	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिन्तो, सव्वासुन्तो **सव्वादो, सव्वादु** (सबसे)
सप्तमी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए (सबमें, सब पर)	सव्वासु, सव्वासुं (सबमें, सब पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग–त (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सो, स ***से,*** शे, (वह, उसने)	ते, शे, ***से*** (वे, उन्होंने)
द्वितीया	तं (उसे, उसको)	ते, ता, **से** (उन्हें, उनको)
तृतीया	तेण, ***तेणं,*** तिणा, ***से*** (उससे, उसके द्वारा)	***तेहि,*** तेहिं, तेहिँ (उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	तस्स, से, शे, ***सि*** तास तश्श, ताह (उसके लिए) (उसका, उसकी, उसके)	ताण, **ताणं,** ***तेसिं, तेसि,*** सिं, ***से*** तास ताहँ (उनके लिए) (उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	तत्तो, ***ताओ,*** ताउ, ताहिन्तो ताहि, ता, ***तम्हा,*** तो **तादो, तादु** (उस से)	तत्तो, ताओ, ताउ, ***तेब्भो*** ताहि, ताहिन्तो, तासुन्तो, तेहि, ***तेहिन्तो,*** तेसुन्तो, **तादो, तादु** (उन से)
सप्तमी	**तस्सिं,** तम्मि, तत्थ तहिं, ताहे, ताला, तइआ, **तम्हि** ***तंमि, तंसि,*** तश्शिं (उसमें, उस पर)	तेसु, तेसुं (उनमें, उन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग–त (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तं (वह, उसने)	ताइं, ताइँ, ताणि (वे, उन्होंने)
द्वितीया	तं (उसे, उसको)	ताइं, ताइँ, ताणि (उन्हें, उनको)
तृतीया	तेण, ***तेणं,*** तिणा, ***से*** (उससे, उसके द्वारा)	***तेहि,*** तेहिं, तेहिँ (उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	तस्स, से, <u>शे</u>, ***सि*** तास <u>तश्श, ताह</u> (उसके लिए) (उसका, उसकी, उसके)	ताण, **ताणं,** ***तेसिं, तेसि,*** सिं, ***से*** तास <u>ताहँ</u> (उनके लिए) (उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	तत्तो, ***ताओ,*** ताउ, ताहिन्तो ताहि, ता, ***तम्हा,*** तो **तादो, तादु** (उस से)	तत्तो, ताओ, ताउ, ***तेब्भो*** ताहि, ताहिन्तो, तासुन्तो, तेहि, ***तेहिन्तो,*** तेसुन्तो, **तादो, तादु** (उन से)
सप्तमी	**तस्सिं,** तम्मि, तत्थ तहिं, ताहे, ताला, तइआ, **तम्हि** ***तंमि, तंसि,*** <u>तश्शिं</u> (उसमें, उस पर)	तेसु, तेसुं (उनमें, उन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग–ता (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा (वह, उसने)	ता, ताउ, ताओ (वे, उन्होंने)
द्वितीया	तं (उसे, उसको)	ता, ताउ, ताओ (उन्हें, उनको)
तृतीया	ताअ, ताइ, ताए (उससे, उसके द्वारा)	***ताहि***, ताहिं, तांहिं (उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	ताअ, ताइ, ताए तास, से (उसके लिए) (उसका, उसकी, उसके)	ताण, **ताणं** तेसिं, सिं, ***तासिं, तासि*** (उनके लिए) (उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो ताअ, ताइ, ताए **तादो, तादु** (उस से)	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो तासुन्तो **तादो, तादु** (उन से)
सप्तमी	ताअ, ताइ, ताए ताहिं (उसमें, उस पर)	तासु, तासुं (उनमें, उन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग-ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जो, जे (जो, जिसने)	जे (जो, जिन्होंने)
द्वितीया	जं (जिसे, जिसको)	जे, जा (जिन्हें, जिनको)
तृतीया	जेण, जेणं, जिणा (जिससे, जिसके द्वारा)	जेहि, जेहिं, जेहिँ (जिनसे, जिनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	जस्स, जास, यश, याह (जिसके लिए) (जिसका, जिसकी,जिसके)	जाण, **जाणं**, ***जेसिं, जेसि*** (जिनके लिए) (जिनका, जिनकी, जिनके)
पंचमी	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो, जा जम्हा **जादो, जादु** (जिस से)	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो,जासुन्तो जेहि, ***जेहिन्तो***, जेसुन्तो, **जादो, जादु** (जिन से)
सप्तमी	जस्सिं, जम्मि, जत्थ जहिं जाहे, जाला, जइया **जम्हि,** ***जंमि, जंसि*** (जिसमें, जिस पर)	जेसु, जेसुं (जिनमें, जिन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग – ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जं (जो, जिसने)	जाइं, जाइँ, जाणि (जो, जिन्होंने)
द्वितीया	जं (जिसे, जिसको)	जाइं, जाइँ, जाणि (जिन्हें, जिनको)
तृतीया	जेण, जेणं, जिणा (जिससे, जिसके द्वारा)	जेहि, जेहिं, जेहिँ (जिनसे, जिनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	जस्स, जास, यश्श, याह (जिसके लिए) (जिसका, जिसकी,जिसके)	जाण, **जाणं**, ***जेसिं, जेसि*** (जिनके लिए) (जिनका, जिनकी, जिनके)
पंचमी	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो, जा जम्हा **जादो, जादु** (जिस से)	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो,जासुन्तो जेहि, ***जेहिन्तो***, जेसुन्तो, **जादो, जादु** (जिन से)
सप्तमी	जस्सिं, जम्मि, जत्थ जहिं जाहे, जाला, जइया **जम्हि,** ***जंमि, जंसि*** (जिसमें, जिस पर)	जेसु, जेसुं (जिनमें, जिन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - जा (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जा (जो, जिसने)	जा, जाउ, जाओ (जो, जिन्होंने)
द्वितीया	जं (जिसे, जिसको)	जा, जाउ, जाओ (जिन्हें, जिनको)
तृतीया	जाअ, जाइ, जाए (जिससे, जिसके द्वारा)	जाहि, जाहिं, जाहिँ (जिनसे, जिनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	जाअ, जाइ, जाए (जिसके लिए) (जिसका, जिसकी,जिसके)	जाण, जाणं, जेसिं, ***जासिं*** (जिनके लिए) (जिनका, जिनकी, जिनके)
पंचमी	जाअ, जाइ, जाए जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो **जादो, जादु** (जिस से)	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो, जासुन्तो **जादो, जादु** (जिन से)
सप्तमी	जाअ, जाइ, जाए जाहिं (जिसमें, जिस पर)	जासु जासुं (जिनमें, जिन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग – क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को, ***के*** (कौन, किसने)	के (कौन, किन्होंने)
द्वितीया	कं (किसे, किसको)	के, का (किन्हें, किनको)
तृतीया	केण, केणं, किणा (किससे, किसके द्वारा)	केहि, केहिं, केहिँ (किनसे, किनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	कस्स, कास, काह (किसके लिए) (किसका, किसकी,किसके)	काण, काणं कास, ***केसिं*** (किनके लिए) (किनका, किनकी, किनके)
पंचमी	कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो, का कम्हा, ***कओहिन्तो*** किणो, कीस **कादो, कादु** (किस से)	कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, कासुन्तो केहि, केहिन्तो, केसुन्तो **कादो, कादु** (किन से)
सप्तमी	**कस्सिं,** कम्मि, कत्थ कहिं काहे, काला, कइआ **कम्हि** ***कंमि, कंसि,*** कश्शिं (किसमें, किस पर)	केसु, केसुं (किनमें, किन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	किं (कौन, किसने)	काइं, काइँ, काणि (कौन, किन्होंने)
द्वितीया	किं (किसे, किसको)	काइं, काइँ, काणि (किन्हें, किनको)
तृतीया	केण, केणं, किणा (किससे, किसके द्वारा)	केहि, केहिं, केहिँ (किनसे, किनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	कस्स, कास, काह (किसके लिए) (किसका, किसकी,किसके)	काण, काणं कास, ***केसिं*** (किनके लिए) (किनका, किनकी, किनके)
पंचमी	कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो, का कम्हा, ***कओहिन्तो*** किणो, कीस **कादो, कादु** (किस से)	कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, कासुन्तो केहि, केहिन्तो, केसुन्तो **कादो, कादु** (किन से)
सप्तमी	**कस्सिं,** कम्मि, कत्थ कहिं काहे, काला, कइआ **कम्हि** ***कंमि, कंसि,*** कश्शिं (किसमें, किस पर)	केसु, केसुं (किनमें, किन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - का (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	का (कौन, किसने)	काउ, काओ, का (कौन, किन्होंने)
द्वितीया	कं (किसे, किसको)	काउ, काओ, का (किन्हें, किनको)
तृतीया	काअ, काइ, काए (किससे, किसके द्वारा)	काहि, काहिं, काहिँ (किनसे, किनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	काअ, काइ, काए, कास, काह (किसके लिए) (किसका, किसकी, किसके)	काण, काणं, केसिं (किनके लिए) (किनका, किनकी, किनके)
पंचमी	काअ, काइ, काए कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो **कादो, कादु** (किस से)	कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो कासुन्तो **कादो, कादु** (किन से)
सप्तमी	काअ, काइ, काए काहिं (किसमें, किस पर)	कासु कासुं (किनमें, किन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग – एत (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एसो एस, इणं, इणमो (यह, इसने)	एते **एदे** (ये, इन्होंने)
द्वितीया	एतं **एदं** (इसे, इसको)	एते, एता **एदे, एदा** (इन्हें, इनको)
तृतीया	एतेण, एतेणं, एतिणा **एदेण, एदेणं, एदिणा** (इससे, इसके द्वारा)	एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ **एदेहि, एदेहिं, एदेहिँ** (इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	एतस्स से **एदस्स** (इसके लिए) (इसका, इसकी, इसके)	एताण, एताणं एतेसिं, सिं **एदाण, एदाणं, एदेसिं** (इनके लिए) (इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	एताओ, एताउ, एताहि एताहिन्तो, एता एत्तो, एत्ताहे **एदादो, एदादु** (इस से)	एत्ततो, एताओ, एताउ, एताहि एताहिन्तो, एतासुन्तो एतेहि, एतेहिन्तो, एतेसुन्तो **एदादो, एदादु** (इन से)
सप्तमी	एतस्सिं, एतम्मि अयम्मि, ईयम्मि एत्थ **एतम्हि** ***एतंमि, एतंसि*** (इसमें, इस पर)	एतेसु, एतेसुं **एदेसु, एदेसुं** (इनमें, इन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग – एत (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एस, इणं, इणमो एतं (यह, इसने)	एताइं, एताइँ, एताणि **एदाइं, एदाइँ, एदाणि** (ये, इन्होंने)
द्वितीया	एतं **एदं** (इसे, इसको)	एताइं, एताइँ, एताणि **एदाइं, एदाइँ, एदाणि** (इन्हें, इनको)
तृतीया	एतेण, एतेणं, एतिणा **एदेण, एदेणं, एदिणा** (इससे, इसके द्वारा)	एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ **एदेहि, एदेहिं, एदेहिँ** (इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	एतस्स से **एदस्स** (इसके लिए) (इसका, इसकी, इसके)	एताण, एताणं एतेसिं, सिं **एदाण, एदाणं, एदेसिं** (इनके लिए) (इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	एताओ, एताउ, एताहि एताहिन्तो, एता एत्तो, एत्ताहे **एदादो, एदादु** (इस से)	एत्ततो, एताओ, एताउ, एताहि एताहिन्तो, एतासुन्तो एतेहि, एतेहिन्तो, एतेसुन्तो **एदादो, एदादु** (इन से)
सप्तमी	एतस्सिं, एतम्मि अयम्मि, ईयम्मि एत्थ **एतम्हि** ***एतंमि, एतंसि*** (इसमें, इस पर)	एतेसु, एतेसुं **एदेसु, एदेसुं** (इनमें, इन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग – एता (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एसा (यह, इसने)	एताउ, एताओ, एता (ये, इन्होंने)
द्वितीया	एतं (इसे, इसको)	एताउ, एताओ, एता (इन्हें, इनको)
तृतीया	एताअ, एताइ, एताए (इससे, इसके द्वारा)	एताहि, एताहिं, एताहिँ (इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	एताअ, एताइ, एताए, से (इसके लिए) (इसका, इसकी, इसके)	एताण, एताणं, सिं (इनके लिए) (इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	एतत्तो, एतत्ताहे एताअ, एताइ, एताए एताओ, एताउ, एताहिन्तो **एतादो, एतादु** (इस से)	एतत्तो, एताओ, एताउ एताहिन्तो, एतासुन्तो **एतादो, एतादु** (इन से)
सप्तमी	एताअ, एताइ, एताए (इसमें, इस पर)	एतासु, एतासुं (इनमें, इन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग – इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमो, अयं, **अअं** ***इमे*** (यह, इसने)	इमे (ये, इन्होंने)
द्वितीया	इमं, इणं, णं (इसे, इसको)	इमे, इमा, णे, णा (इन्हें, इनको)
तृतीया	इमेण, इमेणं, इमिणा णेण, णेणं, णिणा (इससे, इसके द्वारा)	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ णेहि, णेहिं, णेहिँ (इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	इमस्स, अस्स से, इमश्श (इसके लिए) (इसका, इसकी, इसके)	इमाण, इमाणं, ***इमेसिं***, सिं (इनके लिए) (इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	इमत्तो, ***इमाओ,*** इमाउ इमाहि, इमाहिन्तो, इमा **इमादो, इमादु** (इस से)	इमत्तो, इमाओ, इमाउ इमाहि, इमाहिन्तो, इमासुन्तो इमेहि, इमेहिन्तो, इमेसुन्तो **इमादो, इमादु** (इन से)
सप्तमी	इमस्सिं, इमम्मि अस्सिं, इमश्शिं इह **इमम्हि** ***इमंमि, इमंसि*** (इसमें, इस पर)	इमेसु, इमेसुं (इनमें, इन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग – इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदं, इणमो, इणं (यह, इसने)	इमाइं, इमाइँ, इमाणि (ये, इन्होंने)
द्वितीया	इदं, इणमो, इणं णं (इसे, इसको)	इमाइं, इमाइँ, इमाणि (इन्हें, इनको)
तृतीया	इमेण, इमेणं, इमिणा णेण, णेणं, णिणा (इससे, इसके द्वारा)	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ णेहि, णेहिं, णेहिँ (इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	इमस्स, अस्स से, इमश्श (इसके लिए) (इसका, इसकी, इसके)	इमाण, इमाणं, ***इमेसिं***, सिं (इनके लिए) (इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	इमत्तो, ***इमाओ,*** इमाउ इमाहि, इमाहिन्तो, इमा **इमादो, इमादु** (इस से)	इमत्तो, इमाओ, इमाउ इमाहि, इमाहिन्तो, इमासुन्तो इमेहि, इमेहिन्तो, इमेसुन्तो **इमादो, इमादु** (इन से)
सप्तमी	इमस्सिं, इमम्मि अस्सिं, इमश्शि इह **इमम्हि** ***इमंमि, इमंसि*** (इसमें, इस पर)	इमेसु, इमेसुं (इनमें, इन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - इमा (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमा, इमिआ (यह, इसने)	इमाउ, इमाओ, इमा (ये, इन्होंने)
द्वितीया	इमं (इसे, इसको)	इमाउ, इमाओ, इमा (इन्हें, इनको)
तृतीया	इमाअ, इमाइ, इमाए (इससे, इसके द्वारा)	इमाहि, इमाहिं, इमाहिँ (इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	इमाअ, इमाइ, इमाए, से (इसके लिए) (इसका, इसकी, इसके)	इमाण, इमाणं, सिं, ***इमेसिं*** (इनके लिए) (इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	इमाअ, इमाइ, **इमाए** इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिन्तो **इमादो, इमादु** (इस से)	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिन्तो, इमासुन्तो **इमादो, इमादु** (इन से)
सप्तमी	इमाअ, इमाइ, इमाए (इसमें, इस पर)	इमासु, इमासुं (इनमें, इन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग - अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अह, ***असौ*** अमू (वह, उसने)	अमउ, अमओ, अमुणो, अमवो, अमू (वे, उन्होंने)
द्वितीया	अमुं (उसे, उसको)	अमुणो, अमू (उन्हें, उनको)
तृतीया	अमुणा (उससे, उसके द्वारा)	अमूहि, अमूहिं, अमूहिं (उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	अमुस्स, अमुणो (उसके लिए) (उसका, उसकी, उसके)	अमूण, अमूणं (उनके लिए) (उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	अमुणो, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो **अमूदो, अमूदु** (उस से)	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ अमूहिन्तो, अमूसुन्तो **अमूदो, अमूदु** (उन से)
सप्तमी	अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि **अमुम्हि** ***अमुंमि, अमुंसि*** (उसमें, उस पर)	अमूसु, अमूसुं (उनमें, उन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग – अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अह, अमुं (वह, उसने)	अमूइं, अमूईं, अमूणि (वे, उन्होंने)
द्वितीया	अमुं (उसे, उसको)	अमूइं, अमूईं, अमूणि (उन्हें, उनको)
तृतीया	अमुणा (उससे, उसके द्वारा)	अमूहि, अमूहिं, अमूहिं (उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	अमुस्स, अमुणो (उसके लिए) (उसका, उसकी, उसके)	अमूण, अमूणं (उनके लिए) (उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	अमुणो, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो **अमूदो, अमूदु** (उस से)	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ अमूहिन्तो, अमूसुन्तो **अमूदो, अमूदु** (उन से)
सप्तमी	अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि **अमुम्हि** ***अमुंमि, अमुंसि*** (उसमें, उस पर)	अमूसु, अमूसुं (उनमें, उन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अह, अमू (वह, उसने)	अमूउ, अमूओ, अमू (वे, उन्होंने)
द्वितीया	अमुं (उसे, उसको)	अमूउ, अमूओ, अमू (उन्हें, उनको)
तृतीया	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमुए (उससे, उसके द्वारा)	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ (उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमुए (उसके लिए) (उसका, उसकी, उसके)	अमूण, अमूणं (उनके लिए) (उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमुए अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो **अमूदो, अमूदु** (उस से)	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो **अमूदो, अमूदु** (उन से)
सप्तमी	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमुए (उसमें, उस पर)	अमूसु, अमूसुं (उनमें, उन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग – अन्न (अन्य)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अन्नो, **अन्ने** (अन्य ने)	अन्ने (अन्यों ने)
द्वितीया	अन्नं (अन्य को)	अन्ना, अन्ने (अन्यों को)
तृतीया	अन्नेण, अन्नेणं (अन्य से, अन्य के द्वारा)	अन्नेहि, अन्नेहिं, अन्नेहिं (अन्यों से, अन्यों के द्वारा)
चतुर्थी	अन्नाय, अन्नस्स (अन्य के लिए)	अन्नाण, अन्नाणं, अन्नेसिं (अन्यों के लिए)
पंचमी	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ अन्नाहि, अन्नाहिन्तो, अन्ना **अन्नादो, अन्नादु** (अन्य से)	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ, अन्नाहि, अन्नाहिन्तो, अन्नासुन्तो, अन्नेहि, अन्नेहिन्तो, अन्नेसुन्तो **अन्नादो, अन्नादु** (अन्यों से)
षष्ठी	अन्नस्स अन्नश्श, अन्नाह (अन्य का, अन्य की, अन्य के)	अन्नाण, अन्नाणं, अन्नेसिं अन्नाहँ (अन्यों का, अन्यों की, अन्यों के)
सप्तमी	अन्नस्सिं, अन्नम्मि, अन्नत्थ अन्नहिं *अन्नम्हि* *अन्नंमि, अन्नंसि* (अन्य में, अन्य पर)	अन्नेसु, अन्नेसुं (अन्यों में, अन्यों पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग–अन्न (अन्य)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अन्नं (अन्य ने)	अन्नाइं, अन्नाइँ, अन्नाणि (अन्यों ने)
द्वितीया	अन्नं (अन्य को)	अन्नाइं, अन्नाइँ, अन्नाणि (अन्यों को)
तृतीया	अन्नेण, अन्नेणं (अन्य से, अन्य के द्वारा)	अन्नेहि, अन्नेहिं, अन्नेहिँ (अन्यों से, अन्यों के द्वारा)
चतुर्थी	अन्नाय, अन्नस्स (अन्य के लिए)	अन्नाण, अन्नाणं, अन्नेसिं (अन्यों के लिए)
पंचमी	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ अन्नाहि, अन्नाहिन्तो, अन्ना **अन्नादो, अन्नादु** (अन्य से)	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ, अन्नाहि, अन्नाहिन्तो, अन्नासुन्तो, अन्नेहि, अन्नेहिन्तो, अन्नेसुन्तो **अन्नादो, अन्नादु** (अन्यों से)
षष्ठी	अन्नस्स अन्नश्श, अन्नाह (अन्य का, अन्य की, अन्य के)	अन्नाण, अन्नाणं, अन्नेसिं अन्नाहँ (अन्यों का, अन्यों की, अन्यों के)
सप्तमी	अन्नस्सिं, अन्नम्मि, अन्नत्थ अन्नहिं *अन्नम्हि* *अन्नंमि, अन्नंसि* (अन्य में, अन्य पर)	अन्नेसु, अन्नेसुं (अन्यों में, अन्यों पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग - अन्ना (अन्य)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अन्ना (अन्य ने)	अन्ना, अन्नाउ, अन्नाओ (अन्यों ने)
द्वितीया	अन्नं (अन्य को)	अन्ना, अन्नाउ, अन्नाओ (अन्यों को)
तृतीया	अन्नाअ, अन्नाइ, अन्नाए (अन्य से, अन्य के द्वारा)	अन्नाहि, अन्नाहिं, अन्नाहिँ (अन्यों से,अन्यों के द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	अन्नाअ, अन्नाइ, अन्नाए (अन्य के लिए) (अन्यका, अन्यकी, अन्यके)	अन्नाण, अन्नाणं, अन्नेसिं (अन्यों के लिए) (अन्यों का, अन्यों की, अन्यों के)
पंचमी	अन्नाअ, अन्नाइ, अन्नाए अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ, अन्नाहिन्तो **अन्नादो, अन्नादो** (अन्य से)	अन्नत्तो, अन्नाओ, अन्नाउ, अन्नाहिन्तो, अन्नासुन्तो **अन्नादो, अन्नादो** (अन्यों से)
सप्तमी	अन्नाअ, अन्नाइ, अन्नाए (अन्य में, अन्य पर)	अन्नासु, अन्नासुं (अन्यों में, अन्यों पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग-एक्क (एक ही)

	एकवचन
प्रथमा	एक्को
द्वितीया	एक्कं
तृतीया	एक्केण, एक्केणं
चतुर्थी	एक्काय, एक्कस्स
पंचमी	एक्कत्तो, एक्काओ, एक्काउ, एक्काहि, एक्काहिन्तो, एक्का, **एक्कादो, एक्कादु**
षष्ठी	एक्कस्स
सप्तमी	एक्कस्सिं, एक्कम्मि, एक्कत्थ, एक्कहिं, **एक्कम्हि, एक्कंमि, एक्कंसि**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग–एक्क (एक ही)

	एकवचन
प्रथमा	एक्कं
द्वितीया	एक्कं
तृतीया	एक्केण, एक्केणं
चतुर्थी	एक्काय, एक्कस्स
पंचमी	एक्कत्तो, एक्काओ, एक्काउ, एक्काहि, एक्काहिन्तो, एक्का, **एक्कादो, एक्कादु**
षष्ठी	एक्कस्स
सप्तमी	एक्कस्सिं, एक्कम्मि, एक्कत्थ, एक्कहिं, **एक्कम्हि, एक्कंमि, एक्कंसि**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग–एक्का (एक ही)

	एकवचन
प्रथमा	एक्का
द्वितीया	एक्कं
तृतीया	एक्काअ, एक्काइ, एक्काए
चतुर्थी व षष्ठी	एक्काअ, एक्काइ, एक्काए
पंचमी	एक्काअ, एक्काइ, एक्काए एक्कत्तो, एक्काओ, एक्काउ, एक्काहिन्तो, **एक्कादो, एक्कादु**
सप्तमी	एक्काअ, एक्काइ, एक्काए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तीनों लिंगों में-तुम्ह (तुम)

एकवचन

प्रथमा तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह, ***तुमे***
(तू, तूने)

द्वितीया तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह, तुमे, तुए, ***ते***, दे
(तुझे, तुझको)

तृतीया तुमं, तइ, **तए**, तुए तुमइ, तुमाइ, ***तुमे***, तुमए, भे, दि, दे, ते
(तुझसे, तेरे द्वारा)

चतुर्थी तइ, तुव, तुम, तुह, तुहं, तुम्हं, तुमे, तुमो, तुमाइ, तुब्भ, तव

व षष्ठी उब्भ, उय्ह, दि, दे, इ, ए, तु, ते
तुम्ह, तुज्झ, उम्ह, उज्झ
(तेरे लिए, तेरा, तेरी, तेरे)

पंचमी (i) तइत्तो, तईओ, तईउ, तईहिन्तो,
(ii) तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिन्तो, तुवा
(iii) तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुमाहि, तुमाहिन्तो, तुमा
(iv) तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ, तुहाहि, तुहाहिन्तो, तुहा
(v) तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भाहिन्तो, तुब्भा
तुय्ह, तुब्भ, तहिन्तो
(vi) तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहि, **तुम्हाहिन्तो**, तुम्हा
(vii) तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झाहिन्तो, तुज्झा
तईदो, तईदु, तुवादो, तुवादु, तुमादो, तुमादु, तुहादो, तुहादु
तुब्भादो, तुब्भादु, तुम्हादो, तुम्हादु, तुज्झादो, तुज्झादु
(तुझ से)

सप्तमी तइ, तए, तुमाइ, तुमए, तुमे, तुम्मि
तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि, तुवस्सिं, तुमस्सिं, तुहस्सिं, तुब्भस्सिं,
तुवत्थ, तुमत्थ, तुहत्थ, तुब्भत्थ
तुवहिं, तुमहिं, तुहहिं, तुब्भहिं
तुवे, तुमे, तुहे, तुब्भे
तुम्हे, तुज्झे, तुहम्मि, तुज्झम्मि, तुम्हस्सिं, तुज्झस्सिं, तुम्हत्थ, तुज्झत्थ, तुम्हहिं, तुज्झहिं
तुमंसि, **तुइं**, **तुइ** (तुझमें, तुझ पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तीनों लिंगों में–तुम्ह (तुम)

बहुवचन

प्रथमा तुज्झ, तुम्ह, ***तुब्भे,*** तुय्हे, उय्हे, भे, **तुम्हे**, तुज्झे
(तुम, तुमने)

द्वितीया तुज्झ, तुब्भे, तुय्हे, उय्हे, ***भे,*** वो, तुम्हे, तुज्झे
(तुम्हें, तुमको)

तृतीया तुज्झेहिं, उज्झेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं, उम्हेहिं, **तुम्हेहिं, *तुब्भेहिं, भे, तुमेहिं, तुब्भे***
(तुझसे, तुम्हारे द्वारा)

चतुर्थी तुब्भ, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, तु, वो, भे, तुम्हाण,

व षष्ठी तुज्झाण, ***तुब्भं, तुब्भे, भे,*** **तुम्हाणं**
तुब्भाणं, तुवाणं, तुमाणं, तुहाणं, उम्हाणं, तुज्झाणं
(तुम्हारे लिए, तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे)

पंचमी (i) तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भाहिन्तो, तुब्भासुन्तो, तुब्भेहि, तुब्भेहिन्तो, तुब्भेसुन्तो
(ii) तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ, तुय्हाहि, तुय्हाहिन्तो, तुय्हासुन्तो, तुय्हेहि, तुय्हेहिन्तो, तुय्हेसुन्तो
(iii) उय्हत्तो, उय्हाओ, उय्हाउ, उय्हाहि, उय्हाहिन्तो, उय्हासुन्तो, उय्हेहि, उय्हेहिन्तो, उय्हेसुन्तो
(iv) उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाउ, उम्हाहि, उम्हाहिन्तो, उम्हासुन्तो, उम्हेहि, उम्हेहिन्तो, उम्हेसुन्तो
(v) तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहि, तुम्हाहिन्तो, तुम्हासुन्तो, तुम्हेहि, तुम्हेहिन्तो, तुम्हेसुन्तो
(vi) तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झाहिन्तो, तुज्झासुन्तो, तुज्झेहि, तुज्झेहिन्तो, तुज्झेसुन्तो
तुब्भादो, तुब्भादु, तुय्हादो, तुय्हादु, उय्हादो, उय्हादु, उम्हादो, उम्हादु, तुम्हादो, तुम्हादु, तुज्झादो, तुज्झादु
(तुम से)

सप्तमी तुसु
तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु
तुम्हेसु, तुज्झेसु
तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, तुम्हसु, तुज्झसु, तुब्भासु, तुम्हासु, तुज्झासु[1]
तुवसुं, तुमसुं, तुहसुं, तुब्भसुं, तुम्हसुं, तुज्झसुं,
तुवेसुं, तुमेसुं, तुहेसुं, तुब्भेसुं, तुम्हेसुं, तुज्झेसुं
(तुम में, तुम पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तीनों लिंगों में-अम्ह (मैं)

एकवचन

प्रथमा	अहं, हं, अहयं, म्मि, अम्मि, अम्हि हगे, हग्गे, हके, अहके (मैं, मैंने)
द्वितीया	अहं, मं, मि, म्मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, णं, णे *मे, ममं, महं* (मुझे, मुझको)
तृतीया	मइ, मए, ममाइ, मयाइ, मे, ममए, मि, मिमं, णे (मुझसे, मेरे द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	मइ, **मम, मह, मे**, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं, ***ममं*** (मेरे लिए, मेरा, मेरी, मेरे)
पंचमी	(i) मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो (ii) ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममा, ***ममाहिन्तो,*** (iii) महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिन्तो, महा (iv) मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिन्तो, मज्झा (v) **मईदो, मईदु, ममादो, ममादु, महादो, महादु, मज्झादो, मज्झादु** (मुझ से)
सप्तमी	मइ, मए, ममाइ, मि, मे अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि *अम्हे, ममे, महे, मज्झे* अम्हस्सिं, ममस्सिं, महस्सिं, मज्झस्सिं *अम्हत्थ, ममत्थ, महत्थ, मज्झत्थ* *अम्हहिं, ममहिं, महहिं, मज्झहिं* (मुझमें, मुझ पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तीनों लिंगों में-अम्ह (मैं)

बहुवचन

प्रथमा अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे
हगे
वयं, अम्फ, अम्हे
(हम, हमने)

द्वितीया अम्ह, अम्हे, अम्हो, णे, *णो*
(हमें, हमको)

तृतीया अम्ह, अम्हे, अम्हेहि, अम्हाहि, णे
(हमसे, हमारे द्वारा)

चतुर्थी व षष्ठी अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, णे, णो,
मज्झ, मज्झाण, मज्झाणं,
अम्हाण, अम्हाणं, ममाण, ममाणं, महाण, महाणं
(हमारे लिए, हमारा, हमारी, हमारे)

पंचमी ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिन्तो, ममासुन्तो, ममेहि, ममेहिन्तो, ममेसुन्तो
अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ, अम्हाहि, अम्हाहिन्तो, अम्हासुन्तो, अम्हेहि
अम्हेहिन्तो, अम्हेसुन्तो
ममादो, ममादु, अम्हादो, अम्हादु
(हम से)

सप्तमी अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु
अम्हसु, ममसु, महसु, मज्झसु, अम्हासु
अम्हेसुं, ममेसुं, महेसुं, मज्झेसुं, अम्हसुं,
ममसुं, महेसुं, मज्झसुं, अम्हासुं
(हम में, हम पर)

❑❑❑

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-4

हेमचन्द्र-रचित सूत्रों के सन्दर्भ

संज्ञा शब्दों के विभक्ति प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	3/2
2.	3/4, 3/12, 3/14
3.	3/5
4.	3/6, 3/14, 3/12, 1/27
5.	3/7, 3/15
6.	3/8, 3/12, 1/84, 1/177
7.	3/9, 3/12, 3/13, 1/84, 3/15, 1/177
8.	3/10
9.	3/11
10.	3/15, 1/27
11.	3/124, 3/7, 3/9, 3/16, 3/127, 1/27
12.	3/18
13.	3/19
14.	3/20
15.	3/21
16.	3/22
17.	3/23
18.	3/24
19.	3/25
20.	3/26
21.	3/5
22.	3/6, 3/14, 1/27, 3/12
23.	3/7, 3/15
24.	3/8, 3/12, 1/84
25.	3/9, 3/12, 1/84, 3/13, 3/15
26.	3/10
27.	3/11
28.	3/15, 1/27
29.	3/27
30.	3/28
31.	3/29, 3/30
32.	3/124, 3/5, 3/36
33.	3/35
34.	3/37
35.	3/38
36.	3/41
37.	3/42
38.	3/124, 3/4, 3/12, 3/18
39.	3/124, 3/5, 3/36
40.	3/124, 3/8, 3/12, 3/126, 3/127
41.	3/124, 3/10

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

42.	3/124, 3/6, 3/12, 1/27
43.	3/124, 3/11, 3/129
44.	4/448
45.	4/448, 1/27
46.	4/448
47.	3/131, 3/10, 3/6, 3/12, 1/27
48.	3/132

विशिष्टशब्दों के विभक्ति प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	3/48, 3/47, 3/5
2.	3/48, 3/45, 3/5
3.	4/448, 3/124, 3/5, 3/36
4.	3/49
5.	3/56
6.	3/49
7.	3/50, 3/52, 3/55, 4/304
8.	3/51, 3/52, 3/55, 4/304
9.	3/52
10.	3/53
11.	3/54, 3/7, 3/10, 3/53, 3/9, 3/16, 3/127, 3/124, 1/27
12.	3/56, 3/49
13.	3/50, 3/12
14.	3/57
15.	3/56, 3/51

शौरसेनी भाषा के विभक्ति प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	4/276
2.	3/8
3.	3/9
4.	3/9
5.	शौरसेनी साहित्य
6.	शौरसेनी साहित्य
7.	3/9, शौरसेनी साहित्य
8.	4/264

मागधी भाषा के विभक्ति प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	4/287
2.	4/299
3.	4/300
4-5.	प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, पिशल, पृष्ठ-515

पैशाची भाषा के विभक्ति प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	4/321

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्धमागधी भाषा के विभक्ति प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1-4.	प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, पिशल, पृष्ठ-515-516

सर्वनाम शब्दों के विभक्ति प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	3/58
2.	3/59, 3/83, 3/76
3.	3/60
4.	3/61
5.	3/62
6.	3/63
7.	3/65
8.	3/66
9.	3/67
10.	3/68
11.	3/69
12.	3/2, 3/86
13.	3/2, 4/448
14.	3/73
15.	3/74
16.	3/75
17.	3/77, 3/5, 3/14, 3/4, 3/12, 3/6, 3/69
18.	3/78
19.	3/79
20.	3/80
21.	3/81
22.	3/82
23.	3/83
24.	3/84
25.	3/85
26.	3/86
27.	3/87
28.	3/88
29.	3/89
30.	3/90
31.	3/91, 3/104, हेमचन्द्र वृत्ति
32.	3/92
33.	3/93, 3/104, हेमचन्द्र वृत्ति
34.	3/94
35.	3/95, 3/104, हेमचन्द्र वृत्ति
36.	3/96, 3/8, 3/12, 3/104, हेमचन्द्र वृत्ति
37.	3/97, 3/104, हेमचन्द्र वृत्ति
38.	3/98, 3/9, 3/12, 3/13, 3/15, 3/104, हेमचन्द्र वृत्ति
39.	3/99, 3/104, हेमचन्द्र वृत्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

40. 3/100, 1/27, 3/104, 3/6, 3/12 हेमचन्द्र वृत्ति

41. 3/101

42. 3/102, 3/104, 3/59, 3/60, हेमचन्द्र वृत्ति

43. 3/103, 3/104, 3/15, 4/448, 1/27, हेमचन्द्र वृत्ति

44. 3/105

45. 3/106

46. 3/107

47. 3/108

48. 3/109

49. 3/110

50. 3/111, 3/8, 3/12, हेमचन्द्र वृत्ति

51. 3/112, 3/9, 3/12, 3/13, 3/15, हेमचन्द्र वृत्ति

52. 3/113

53. 3/114, 1/27

54. 3/115

55. 3/116, 3/11, 3/59, 3/60

56. 3/117, 3/15, 1/27, 4/448

❑❑❑

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम स्तरीय प्राकृत से विकसित प्राकृत शब्दावली

संपादक की कलम से

यहाँ यह समझा जाना चाहिए कि "*प्रथम स्तर की प्राकृत भाषाएँ स्वर और व्यंजन के उच्चारण में तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थी। इससे ये भाषाएँ विभक्ति बहुल कही जाती है*" वैदिक भाषा पाणिनि के द्वारा नियन्त्रित होकर स्थिर हो गई और संस्कृत कहलाई।

वैदिक युग में जो प्राकृत भाषाएँ बोलचाल में प्रचलित थी, उनमें अनेक परिवर्तन हुए, "*जिनमें ऋ आदि स्वरों का, शब्दों के अन्तिम व्यंजनों का, संयुक्त व्यंजनों का तथा विभक्ति और वचन समूह का लोप या रूपान्तर मुख्य है। इन परिवर्तनों से यह भाषाएँ प्रचुर परिमाण में रूपान्तरित हुई। इस तरह से द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई।*"

भगवान महावीर और भगवान बुद्ध के समय में ये प्राकृत भाषाएँ अपने द्वितीय स्तर के आकार में प्रचलित थी और जनता के प्रयोग में आ रही थी। अतः उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इन्हीं प्राकृत भाषाओं में किया। यहाँ यह जानना उपयोगी है कि द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति प्रथम स्तरीय प्राकृत से हुई। काल दृष्टि से हम जितना पीछे जाते हैं उतना ही वैदिक संस्कृत-प्राकृत का अन्तर कम होता जाता है क्योंकि इनकी उत्पत्ति का स्रोत प्रथम स्तरीय प्राकृत है। इसलिए वैदिक संस्कृत-प्राकृत में समानता दृष्टिगोचर होती है।

इस तरह द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति प्राकृत के द्वितीय आकार की शब्दावली का एक अच्छा संकलन हेमचन्द्र ने प्राकृत व्याकरण के प्रथम व द्वितीय पाद में दिया है। आचार्य हेमचन्द्र ने लौकिक संस्कृत के आधार से इसे समझाने का प्रयास किया है। यह प्राकृत के दृष्टिकोण से हमारे लिये उपयोगी नहीं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

है। हमारा उद्देश्य तो प्राकृत के द्वितीय आकार को समझना है, जिससे महावीर के उपदेशों को समझा जा सके। इसलिए हम हेमचन्द्र के प्राकृत शब्दों का अर्थ प्राकृत की परिवर्तनशील प्रकृति के अनुरूप राष्ट्र भाषा हिन्दी में ढूँढेंगे। अतः हम आचार्य हेमचन्द्र की प्राकृत शब्दावली को हिन्दी के आधार से समझने का प्रयास करेंगे।

विशेष अध्ययन के लिए-

1. भारत की प्राचीन आर्यभाषाएँ - डॉ. राजमल बोरा
   प्रकाशक- हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय,
   दिल्ली विश्वविद्यालय, 1999
2. पाइय-सद्द-महण्णवो - पं. हरगोविन्ददास त्रिविक्रमचन्द्र सेठ
   प्रकाशक-प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट–5

संज्ञा शब्द पुल्लिंग

अगणि = आग
अग्गि = आग
अच्छि = आँख
अप्प, = आत्मा
अप्पाण,
अत्त
अरह, = जिनदेव
अरहन्त,
अरिह,
अरिहन्त
अरि = दुश्मन
अरूह = जिनदेव
अवजस = अपकीर्ति
अवरण्ह = दोपहर
अवसद्द = खराब वचन
असोअ = अशोक वृक्ष
अहरूट्ठ = नीचे का होठ
आइरिअ = आचार्य
आयरिअ
आयास = आकाश (पु., नपुं.)
आस = अश्व, घोड़ा
इंदहणू = इन्द्रधनुष (पु., नपुं.)
इसी = ऋषि, मुनि, साधु
ईसर = ईश्वर
उऊ = ऋतु (तीनों.)
उउम्बर = गूलर का पेड़
उच्छव = उत्सव
उच्छाह = उत्साह
उवज्झाअ, = उपाध्याय
उट्ट = ऊँट
उववास, = उपवास
ओवआस,
ऊआस
उवसग्ग = उपसर्ग
उवहास = उपहास
एरावण = इन्द्र का हाथी, ऐरावत
कइ = कवि
कइलास = कैलास पर्वत
कउरव = कौरव
काल = समय
किलेस = खेद, दुःख
किविण = कंजूस
कुज्जय = कूबड़ा
कुञ्जर = हाथी
कुल = परिवार (पुं., नपुं.)
केलास = मेरूपर्वत
खअ = क्षय, विनाश
खग्ग = तलवार
खण = क्षण
खत्तिय = क्षत्रिय
खम्भ = खम्भा
गअ = गज, हाथी
गउअ = गवय
गद्दह = गधा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गन्ध = गन्ध
गह = ग्रह
गिम्ह = ग्रीष्म-ऋतु
गुड = गुड़
घड = घड़ा
घर = घर
घरसामि = घर का स्वामी
चइत्त = चैत्र-मास
चन्द = चन्द्रमा
चमर, चामर = चँवर
चलण = चरण
चुण्ण = चूर्ण (पुं.,नपुं.)
जइ = यति
जण = मनुष्य
जम = यमराज़
जस = यश
जहिट्ठिल, जहुट्ठिल = युधिष्ठिर
जामाउ = दामाद
झाण = ध्यान (पु. नपुं.)
तक्कर = चोर
तम = अंधकार
तित्तिर = तीतर
तित्थ = तीर्थ
तित्थगर = तीर्थंकर
तित्थयर = तीर्थंकर
थम्भ = खम्भा
दइच्च = दानव
दम्भ = माया
दसमुह = रावण
दसरह = दशरथ
दाणव = दानव
दावग्गी = जंगल की अग्नि
दिअर, देवर = देवर
दिवस, दिवह = दिवस
दूसासण = दुशासन
देव = देव
धणू = धनुष (पु., नपुं.)
नक्ख, नह = नाखून
नमोक्कार = नमोकार
नयण = नेत्र (पु., नपुं.)
नर = मनुष्य
नरिंद = राजा
नाह = नाथ
निव = राजा
नेह = स्नेह
पइ = पति
पउरजण = नगर-निवासी
पच्चअ = प्रत्यय
पच्चूस = प्रातःकाल
पज्जुण्ण = प्रद्युम्न
पंडव = पाण्डव
पण्ह = प्रश्न
पन्थ = पथिक
पयर, पयार = भेद, प्रकार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पयावइ = प्रजापति
परामरिस = विचार
पवहो, = प्रवाह
पवाहो
पासाय = महल
पासाण = पत्थर
पुरिस = पुरुष
पुव्वण्ह, = दिन का पूर्व भाग,पूर्वाह्न
पुव्वाण्ह
पोत्थअ = पुस्तक
बंध = बंधन
बांधव = बांधव
बम्ह = ब्रह्मा
बम्हण, = ब्राह्मण
बाम्हण
बहप्फई, = वृहस्पति
बुहप्पई
बाहु = भुजा
भमर = भौंरा
भद्द = कल्याण
भाउ = भाई
मंसू, = दाढ़ी-मूंछ (पु., नपुं.)
मस्सु
मच्चु, = मृत्यु
मिच्चु
मज्झण्ह = मध्याह्न
मज्झन्न = मध्याह्न
मज्झिम = मध्यम
मणूस = मनुष्य
मयण = कामदेव
मिलिच्छ = म्लेच्छ
मुणिन्द = मुनि
मुहुत्त = मुहुर्त
मेह = मेघ, बादल
रवि = सूर्य
रहुवइ = रघुपति
राम = राम
रिसि = ऋषि, मुनि, साधु
रूक्ख = वृक्ष (पुं., नपुं.)
लोअ = लोक
लोअण = नेत्र
वच्छ = वृक्ष
वणप्फई = वनस्पति
वण्हि = अग्नि
वसह = वृषभ
वास = वर्ष (पुं., नपुं.)
विज्ज = पण्डित
विणअ = नम्रता, विनय
विणोअ = खेल
विप्प = ब्राह्मण
वीसम्भ = विश्वास, श्रद्धा
वीसाम = विश्राम लेना
वीसास = विश्वास
वुत्तंत = समाचार, हकीकत
वेज्ज = वैद्य
संजम = संयम
संजोग = संयोग
संफास = स्पर्श
संवच्छर = वर्ष
सक्कार = सम्मान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सनेह = स्नेह
समुद्द = समुद्र
सव्वज्ज = सर्वज्ञ
सव्वण्ण = सर्वज्ञ
सहाव = स्वभाव
सावग = श्रावक
साहु = साधु
सिआल = सियार
सिंगार = शृंगार
सिमिण, = स्वपन, सपना
सिविण,
सुमिण
सिआल = शृगाल
सिलोअ = श्लोक
सीस = शिष्य
सीह = सिंह
सुपुरिस = सज्जन
सेल = पर्वत
हणुमत = हनुमान
हत्थ = हाथ
हरिस = हर्ष, आनन्द, प्रमोद

संज्ञा शब्द नपुंसकलिंग

अइसरिय = ऐश्वर्य, वैभव
अच्छरिअ,= आश्चर्य
अच्छेर,
अच्छअर,
अत्थ = धन, पदार्थ
अम्ब = आम
अरण्ण, = जंगल
रण्ण
अविणय = अविणय
ओसह = दवा
कज्ज = कार्य
कट्ठ = काठ, लकड़ी
कमल = कमल
कव्व = काव्य
कुऊहल, = कुतूहल
कोउहल्ल,
कोऊहल
खीर = दूध
गउरव = गौरव, अभिमान
गयण = आकाश
गहीरिअ = गंभीर
गेन्दुअ = गेंद
घय = घी
चक्क = गाड़ी का पहिया
चन्दण = चन्दन का पेड़
चिण्ह = चिन्ह
छीअ = छींक (नपुं., स्त्री.)
छेत्त = आकाश

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जल = जल
जाण = ज्ञान
जोव्वण = यौवन
णाण = ज्ञान
तण = तिणका, घास
तम्ब = ताँबा
तम्बोल = पान
तलाय = तालाब, सरोवर
तित्थ =तीर्थ
तेल्ल = तेल
तेलोक्क = तीन लोक
थोत्त = स्तोत्र
दंसण = सम्यक् दर्शन
दाडिम = अनार
दुआर, = दरवाजा
दार, देर, बार
दुद्ध = दूध, खीर
देव्व = भाग्य
धीर = धीरज
नयर = नगर
नह, नभ = आकाश
नीलुप्पल = नीलकमल
नेत्त = नेत्र
पउरिस = पुरुषार्थ
पायाल = पाताल
पाव = पाप
पिउहर = पिता का घर
पुप्फ = फूल
पुव्व = पहले
पोग्गल = पुदगल
फल = फल
बह्मचरिअ= ब्रह्मचारी
बम्हचेर = ब्रह्मचर्य
भोअण-मेत्त= भोजन मात्र
मउड = मुकुट
मउण = मौन
मज्ज = मद्य
मसाण = मरघट
माइहर = माता का घर
मोल्ल = कीमत
रयण = रत्न
रायउल = राजा का वंश
रायहर = राजा का महल
रसायल = पाताल लोक
रिण = ऋण
लंघन = भोजन नहीं करना
लंछण = चिन्ह
लक्खण = लक्षण
लवण, = नमक
लोण
वक्खाण = व्याख्यान
वच्छ = सीना, छाती
वण = जंगल
वायरण = व्याकरण
विण्णाण = विशिष्ट ज्ञान
सच्च = सत्य
सामच्छ = सामर्थ्य
सिंग = सींग

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सिर	= सिर, मस्तक
सिढिल	= शिथिल
सील	= सदाचार
सुन्देर	= सौन्दर्य
सुह	= सुख
सेन्न	= सेना
हियय	= हृदय

संज्ञा शब्द स्त्रीलिंग

अज्जा	= साध्वी
अज्जा	= आज्ञा
अट्ठि	= हड्डी
आणा	= आज्ञा
इड्ढी	= वैभव, ऐश्वर्य
इत्थी, थी	= स्त्री
कच्छा	= कक्षा
करेणू	= हथिनी
कमला	= लक्ष्मी
कित्ती	= कीर्ति
किवा	= दया
खमा	= क्षमा
गइ	= गति
गड्ढा	= गड्ढा
गाई, गावी	= गाय
गरिहा	= निन्दा
गुहा	= गुफा
गोट्ठी	= गोष्ठी
घण्टा	= घण्टा
घिणा	= घृणा
चिन्ता	= विचार, शोक
छाया	= छाया
जिब्भा	= जीभ
जीहा	= जीभ
झुणी	= ध्वनि
णई	= नदी
णारी	= नारी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

थुई = स्तुति
दिट्ठि = दृष्टि
दिसा = दिशा
दुहिआ = पुत्री
देवत्थुई = देव-स्तुति
धत्ती = धाय-माता
धाई = धाय
धारी = धाय
धिई = धैर्य, धीरज
धूआ = पुत्री
नट्टइ = नर्तकी
पडिमा = प्रतिमा
पण्णा = बुद्धि
पसिद्धी = प्रसिद्धि
पडिवआ = प्रतिपदा, एकम
पिउच्छा = पिता की बहिन
पिउसिया = पिता की बहिन
पुहई, = पृथ्वी
बहिणी = बहिन
भइणी = बहिन
भारिआ = स्त्री
मच्छिआ = मक्खी
महिला = स्त्री, नारी
माइ = माता
माउसिया = माता की बहिन
मुच्छा = बेहोशी
रत्ति = रात
राइ = रात
रिद्धि = वैभव
रेहा = रेखा
लच्छी = लक्ष्म
वट्टा,वत्ता = बात
वणिआ = वनिता
वरिसा = वर्षा
वेअणा = पीड़ा
सद्धा = श्रद्धा
समिद्धी = समृद्धि
सहा = सभा
सिट्ठी = सृष्टि
सिरी = शोभा
सिरोविअणा= सिर की पीड़ा
सेज्जा = बिछौना
सेवा = सेवा
हलद्दा, = हल्दी
हलद्धी,
हलिद्दी,
हलिद्धा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विशेषण

अणिट्ठ = अनिष्ट
अथिर = चंचल, अनित्य
अन्नन्न = परस्पर
अप्पज्ज = अपने आपको जानने वाला
अप्पण्णु = आत्म-तत्त्व को जाननेवाला
अरिह = योग्य
आगअ = आया हुआ
आढत्त = शुरु किया हुआ
आगमण्णू = आगम को जाननेवाला
इअर = अन्य
इट्ठ = अभिलषित, प्रिय
ईसालु = ईर्ष्यालु, द्वेषी
उक्किट्ठ = उत्कृष्ट, उत्तम
उक्खित्त = फेंका हुआ
उज्जल = निर्मल, स्वच्छ
उव्विग्ग = घबराया हुआ
एअ = एक (सं.वि.)
एआरिस = ऐसा
एक्क = एक (सं.वि.)
कण्ह = काला रंग
कय = किया हुआ
किलिट्ठ = कठिन
केरिस = कैसा
गमिर = जानेवाला
गहिर = गहरा, गंभीर
चोग्गुण, चउग्गुण = चार गुना
चउत्थ, चउत्थी = चौथा
चउद्दह = चौदह
चउव्वार = चार बार
छुत्त = छुआ हुआ
ठविअ = स्थापित किया हुआ
णिच्चल = स्थिर
णिल्लज्ज = लज्जा रहित
तइअ = तीसरा
तविअ = तपा हुआ
तारिस = वैसा
तिक्ख = तीखा
तिप्प = तृप्त
तेत्तिअ = उतना
थुल्ल = मोटा
थोअ, थोव = थोड़ा
दच्छ = निपुण, चतुर
दट्ठ = दाँत से काँटा हुआ
दड्ढ = जला हुआ
दीह = लम्बा
दुइअ = दूसरा
दुक्कर = जो कठिनाई से किया जाय
दुहिअ = पीड़ित, दुःखयुक्त
धारिअ = धारण किया हुआ
धिट्ठ = धीठ
निच्चल = स्थिर
निट्ठुर = निष्ठुर पुरुष
निद्धन = निर्धन
निल्लज्ज = लज्जा रहित
निहिअ = स्थापित, रखा हुआ
नीसास = निश्वास लेने वाला
पडिकूल = प्रतिकूल

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परम = श्रेष्ठ
पत्त = प्राप्त
परोप्पर = आपस में
पम्मुक्क = प्रमुक्त
फास = स्पर्श, छूना
मणोहर = सुन्दर, रमणीय
मुक्क = छोड़ा हुआ
मुक्ख = मूर्ख
मुत्त = छूटा हुआ
रत्त = लाल वर्ण वाला
लज्जिर = लज्जाशील
लित्त = लीपा हुआ
विम्हअ = आश्चर्य
विहल = व्याकुल
वेविर = काँपनेवाला
संठाविअ = अच्छी तरह से स्थापित
सक्क = समर्थ
सत्त = समर्थ
समत्त = पूर्ण
सयल = समस्त
सिणिद्ध = चिकना
सुअ = सुना हुआ
सुकुमाल = अति कोमल
सुक्क = शुक्ल
सुक्ख = सूखा हुआ
सुण्ह = सूक्ष्म
सुत्त = सोया हुआ
हयास = जिसकी आशा नष्ट हो गई हो

❑❑❑

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्मति

अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण

श्रीमती शकुन्तला जैन ने आपके निर्देशन में अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण की रचना करके हिन्दी भाषियों के लिए अपभ्रंश भाषा सीखने का सुगम मार्ग प्रशस्त किया है। एतदर्थ वे साधुवाद की पात्र हैं। पूर्ववर्ती व्याकरण संस्कृत के माध्यम से सूत्रशैली में होने के कारण सामान्य लोगों के लिए दुरुह रहे हैं। इस कारण अपभ्रंश का पठन-पाठन भी बहुशः बाधित रहा है और उसके अभाव में हिन्दी जगत अपभ्रंश भाषाओं के वाङ्मय में संचित रिक्थ से वंचित ही रहा है। आपने हिन्दी माध्यम से सरल भाषा में अपभ्रंश व्याकरण की रचना प्रस्तुत करके नवीन पद्धति का सूत्रपात किया है।

आचार्य हेमचन्द्र के सूत्रों को ध्यान में रखकर जो यह व्याकरण तैयार किया गया है, उसके द्वारा हिन्दी के विद्यार्थी संस्कृत जाने बिना ही अपभ्रंश सीख सकेंगे, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है। पहले संस्कृत सूत्र और उनमें दिए गए पारिभाषिक शब्द समझने तथा उनकी संगति लगाने का श्रम करना पड़ता था। हिन्दी का विद्यार्थी सीधे-सीधे तृतीया विभक्ति तो समझता है किंतु 'टा-भ्याम्-भ्यस्' की शब्दावली से उद्वेजित होकर पहले संस्कृत विभक्तियों की पारिभाषिकता में उलझता है, फिर उसके समानांतर अपभ्रंश की विभक्तियाँ मस्तिष्क में उतारता है। इसमें उसे व्यर्थ का श्रम करना पड़ता है। इसलिए वह अपभ्रंश को क्लिष्ट मानकर उसके अध्ययन से विरत हो जाता है।

निर्देशन व संपादन- डॉ. कमलचन्द सोगाणी

लेखिका- श्रीमती शकुन्तला जैन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत पुस्तक में अपभ्रंश भाषा की संरचना का एक ढाँचा वर्णित है। संज्ञा, सर्वनाम के रूपों, क्रियारूपों, कृदन्तों आदि की रचना सरल ढंग से समझाई गई है। प्रतीत होता है कि पुस्तक अपभ्रंश के प्रारंभिक छात्रों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है।

हिन्दी जगत को आपने ऐसी कृति से समृद्ध किया है, इसके लिए हिन्दी भाषी जनसमुदाय, हिन्दी-अध्यापक और विद्यार्थी आपके चिरकृतज्ञ रहेंगे।

डॉ. आनन्द मंगल वाजपेयी
वरिष्ट फेलो (इंडोलोजी)
संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत–व्याकरण संबंधी उपयोगी सूचनाएँ

प्राकृत–व्याकरण के अन्य पहलुओं के लिए देखें:

1. प्राकृत-व्याकरण - डॉ. कमलचन्द सोगाणी
   (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, 2005)
2. प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ (भाग-1)
   (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, 1999)

1. प्राकृत-व्याकरण में वर्णित विषय
   1. सन्धि
   2. सन्धि प्रयोग के उदाहरण
   3. समास
   4. समास प्रयोग के उदाहरण
   5. कारक
   6. तद्धित
   7. स्त्री-प्रत्यय
   8. अव्यय एवं वाक्य प्रयोग

2. प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ (भाग-1) में वर्णित विषय
   1. संख्यावाचक शब्द पृष्ठ 145
   2. संख्यावाचक शब्दों के प्रयोग पृष्ठ 160
   3. क्रमवाचक संख्या शब्द पृष्ठ 163

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अपभ्रंश–व्याकरण संबंधी उपयोगी सूचनाएँ

अपभ्रंश–व्याकरण के अन्य पहलुओं के लिए देखें:

1. अपभ्रंश-व्याकरण - डॉ. कमलचन्द सोगाणी
   (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, 2007)
2. प्रौढ अपभ्रंश रचना सौरभ (भाग-1)
   (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, 1997)

1. अपभ्रंश-व्याकरण में वर्णित विषय
   1. सन्धि
   2. सन्धि प्रयोग के उदाहरण
   3. समास
   4. समास प्रयोग के उदाहरण
   5. कारक

2. प्रौढ अपभ्रंश रचना सौरभ (भाग-1) में वर्णित विषय

1. अव्यय	पृष्ठ 1
2. संख्यावाचक शब्द एवं प्रयोग	पृष्ठ 37
3. विशेषण (सार्वनामिक)	पृष्ठ 63
4. विशेषण गुणवाचक	पृष्ठ 82
5. वर्तमान कृदन्त	पृष्ठ 91
6. भूतकालिक कृदन्त	पृष्ठ 96

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ ग्रन्थ

1.	हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण, भाग 1-2	: व्याख्याता श्री प्यारचन्द जी महाराज (श्री जैन दिवाकर-दिव्य ज्योति कार्यालय, मेवाड़ी बाजार, ब्यावर)
2.	प्राकृत भाषाओं का व्याकरण	: लेखक -डॉ. आर. पिशल हिन्दी अनुवादक - डॉ. हेमचन्द्र जोशी (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना)
3.	पाइय-सद्द-महण्णवो	: पं. हरगोविन्ददास त्रिविक्रमचन्द्र सेठ (प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी
4.	प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ, भाग-1	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर)
5.	प्राकृत-व्याकरण संधि-समास-कारक-तद्धित-स्त्री प्रत्यय-अव्यय	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर)
6.	वररुचि-प्राकृतप्रकाश (भाग-1)	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी श्रीमती सीमा ढींगरा (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर)
7.	वररुचि-प्राकृतप्रकाश (भाग-2)	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी श्रीमती सीमा ढींगरा (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org